BSW – 123

सामुदायिक संगठन और संचार

संचार के मूल तत्त्व

3

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

''शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।''

– इन्दिरा गाँधी

''स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण'' की चेयर के अन्तर्गत विकसित कार्यक्रम

"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

- Indira Gandhi

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
समाज कार्य विद्यापीठ

BSW – 123

सामुदायिक संगठन और संचार

खंड

3

संचार के मूल तत्त्व

इकाई 1

संचार–अवधारणा, प्रकार और प्रक्रिया

इकाई 2

संचार के पारंपरिक और आधुनिक मीडिया

इकाई 3

अन्र्तव्यैक्तिक, सामूहिक और जन संचार

इकाई 4

स्वास्थ्य संचारः क्षेत्र तथा चुनौतियाँ

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

विशेषज्ञ समिति (मूल)

पी.के. गांधी
जामिया मिलिया
इस्लामिया,
नई दिल्ली

डॉ. डी.के. दास
आर.ए. कॉलेज ऑफ
सोशल वर्क, हैदराबाद

डॉ. पी.डी. मैथ्यू,
भारतीय सामाजिक
संस्थान,
नई दिल्ली

डॉ. एलेस वड़वुम्मथला,
सी.बी.सी.आई.सेण्टर, नई
दिल्ली

प्रो. ग्रेशियस थॉमस,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. ए.पी.बर्नबास
(सेवानिवृत्त)
आई.आई.पी.ए.
नई दिल्ली

डॉ. रंजना सहगल,
इंदौर स्कूल ऑफ सोशल
वर्क,
इंदौर

डॉ. रमा वी.बारू,
जवाहरलाल नेहरू
विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

डॉ. जेरी थॉमस
डॉन बास्को,
गुवाहटी

प्रो. सुरेन्द्र सिंह,
कुलपति,
महात्मा गांधी काशी
विद्यापीठ, वाराणसी

प्रो. ए.बी. बोस (सेवानिवृत्त)
सतत् शिक्षा विद्यापीठ,
इग्नू नई दिल्ली

प्रो. के.के. मुखोपाध्याय,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

प्रो. ए.आर.खान
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. आर.पी. सिंह
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. ऋचा चौधरी
डॉ. बी.आर.अम्बेडकर
कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

प्रो. प्रभा चावला,
इग्नू, नई दिल्ली

विशेषज्ञ समिति (संशोधन)

प्रो. सुषमा बत्रा
समाज कार्य विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

डॉ. आर.आर. पाटिल
समाज कार्य विभाग
जामिया मिलिया
इस्लामिया, नई दिल्ली

डॉ. बीना एन्थोनी रेजी
अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

डॉ. संगीता शर्मा धोर
डॉ. भीम राव अम्बेडकर
कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

प्रो. ग्रेशियस थॉमस
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. रोज़ नेम्बियाकिम
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. सौम्या
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू, नई
दिल्ली

डॉ. जी. महेश
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू नई
दिल्ली

डॉ. सायन्तनी गुइन
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू, नई
दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण दल (मूल)

इकाई लेखक

प्रो. जॉर्ज प्लाथोत्तम

खंड सम्पादक एवं पाठ्यक्रम संयोजक

प्रो. ग्रेशियस थॉमस,
सतत् शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण दल (संशोधन)

इकाई लेखक

इकाई 1,2,3 प्रो. जॉर्ज प्लाथोत्तम, नेहू, शिलांग

इकाई 4 डॉ. एम. टिनेशेरी देवी, असम विश्वविद्यालय, सिल्चर

विषय संपादक

डॉ. शीबा जोसेफ,
भोपाल स्कूल ऑफ सोशल साइंसेस, भोपाल

कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ. सायन्तनी गुइन,
इग्नू, नई दिल्ली

मुद्रण निर्माण

...................., 2021

© इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय, 2021

ISBN -81-

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ (मुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110068 से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से .... द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

खण्ड परिचय

"सामुदायिक संगठन और संचार" पाठ्यक्रम के खंड 3 "संचार के मूल तत्त्वों" पर आधारित है। इस खंड में चार इकाइयाँ हैं। इकाई 1 **"संचार के अवधारणा"**, प्रकार और प्रक्रियाओं पर प्रकाश डालती है। इस इकाई में संचार में शामिल अवधारणाओं, प्रकार और प्रक्रियाओं के साथ संचार और उसके कार्य निष्पादन को परिभाषित किया गया है। इस इकाई में संचार के स्वरूपों, सार्वभौमिक संचार, संचार में कानूनी निर्माण और संचार के प्रकारों का भी विस्तार से वर्णन किया गया है। इकाई 2 **"संचार के पारंपरिक और आधुनिक माध्यमों"** पर चर्चा करती है। यह संचार के इतिहास तथा लोक माध्यमों का भी विस्तार से वर्णन करती है। इकाई 3 **"अन्र्तव्यैक्तिक, सामूहिक और सार्वजनिक संचार** के विभिन्न संदर्भों का वर्णन करती है। यह इकाई अन्तर्वैयक्तिक, सामूहिक और जन संचार के विभिन्न पहलुओं, उनके महत्व एवं परिभाषाओं को प्रस्तुत करती है। इकाई 4 **"स्वास्थ्य संचारः क्षेत्र और चुनौतियाँ"** स्वास्थ्य संचार के कार्य, प्रतिदर्शों, क्षेत्रों और चुनौतियों के बारे में प्रकाश डालेगी।

यह खंड संचार की सभी महत्त्वपूर्ण संकल्पनाओं एवं प्रक्रिया की चर्चा करता है। जो परामर्शक या संप्रेषक के लिए आवश्यक है चाहे वह समाज कार्यकर्त्ता, मीडिया विशेषज्ञ, समुदाय संयोजक, स्वास्थ्य कार्यकर्ता, समूह कार्यकर्त्ता या फिर सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय व्यक्ति हो।

इकाई 1 संचार : अवधारणा, प्रकार और प्रक्रिया*

*प्रो. जॉर्ज प्लाथोत्तम

रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 शब्दार्थ और परिभाषाएँ

1.3 संचार प्रक्रिया की क्रियाविधि

1.4 संचार प्रक्रिया के मॉडल (प्रतिरूप)

1.5 प्रौद्योगिकी क्रांति और सार्वभौमिक संचार

1.6 संचार में सामाजिक–सांस्कृतिक तत्त्व

1.7. संचार के प्रकार

1.8 सारांश

1.9 शब्दावली

1.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

* प्रो. जॉर्ज प्लाथोत्तम, नेहू, शिलांग

इस इकाई का उद्देश्य संचार के कुछ महत्त्वपूर्ण शब्दों और उनकी परिभाषाओं को समझने में आपकी सहायता करना है। इसमें हम संचार शब्द, संचार प्रक्रिया में भेजने वाला, पाने वाला, चैनल, संदेश और फीडबैक आदि के अध्ययन के साथ ही संचार के मुख्य स्वरूपों का भी अध्ययन करेंगे। संचार प्रणाली को ठीक से जानने के लिए हमें इसके वैश्विक स्वरूप और तकनीकी क्रांति के इस प्रभाव को भी जानना होगा। सामाजिक–सांस्कृतिक तत्त्व जैसे भाषा, चिह्न, संकेत, फीडबैक एवं शोर (प्रदूषण) के बारे में भी इस खंड में जानकारी प्राप्त करेंगे। इस इकाई में संचार प्रणाली के प्रकारों के प्रारंभिक लक्षणों की जानकारी दी गई है, जिनके बारे में अगली इकाई में ज्यादा जानकारी मिलेगी। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- संचार प्रणाली की परिभाषा को समझ सकेंगे;
- संचार प्रणाली की प्रक्रिया और उसके विभिन्न प्रतिरूप (मॉडल) को जान सकेंगे;
- तकनीकी क्रांति और संचार के वैश्विक प्रसार को स्पष्ट कर सकेंगे;
- सामाजिक–सांस्कृतिक अंग जैसे भाषा, चिह्न, फीडबैक और शोर की व्याख्या कर सकेंगें; तथा
- संचार प्रणाली के प्रकारों का विवेचन कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

संचार का मानव जीवन और उसके क्रियाकलापों से गहरा संबंध है। इसकी आंतरिक क्रिया में आधारभूत नियमों और दूसरी बातों की जानकारी आवश्यक है। जैसा कि हम अध्ययन करेंगे कि संचार व्यैक्तिक एवं सामूहिक दोनों रूपों में आवश्यक है। संचार अथवा संवाद के बिना मनुष्य पूर्ण नहीं है। हमें यह मानना चाहिए कि संवाद अथवा संचार मनुष्य के सुचारू कार्यक्रम और अन्य सामाजिक गतिविधियों के लिए, जिनमें वह रहता है, अति आवश्यक है। हम देखेंगे कि संचार का अंतिम लक्ष्य हैं – सांझा विकास और सामुदायिक संबंधों की प्रगति। हमें यह

समझना होगा कि किस प्रकार संचार प्रणाली किसी व्यक्ति एवं समाज को प्रभावित करती है तथा इस कार्य प्रणाली के भिन्न–भिन्न तरीके और उपकरण क्या–क्या हैं?

1.2 शब्दार्थ और परिभाषाएँ

व्युत्पत्ति के आधार पर 'कम्युनिकेशन' शब्द लैटिन शब्द "कम्युनिस" से बना है जिसका अर्थ है सांझा। अर्थात् जब हम संवाद करते हैं, हम किसी के साथ सांझापन स्थापित करते हैं। अर्थात् हम किसी के साथ सूचना या विचार या दृष्टिकोण का आदान–प्रदान करते हैं।

संचार शब्द की सामान्य परिभाषा नित्य प्रयुक्त होने वाले अर्थ में देखी जा सकती है यानि कोई विचार अथवा सूचना देना, प्राप्त करना अथवा सूचनाओं एवं विचारों का आदान–प्रदान करना। न्यू वेबस्टर शब्दकोश में संचार प्रणाली की परिभाषा है, विचार, राय, सूचना, भाषा आदि कोई कार्य लिखित या मौखिक रूप से देना–लेना या भेजना होता है।

आक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार, संचार प्रक्रिया का अर्थ, अपनी बात कहना, विचारों का आदान–प्रदान करना होता है, जो बोलकर या व्यक्त करके किए जा सकते हैं।

किसी परिभाषा का अवलोकन करते समय सांझापन, पारस्परिक विचारों का विनिमय, सामाजिक सहभागिता और सार्वजनिक आवश्यकता और उद्देश्य का होना भी महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।

जहाँ सामान्य अनुभव का क्षेत्र होता है तो हम कह सकते हैं कि संवाद हुआ है निम्न चित्र में इस तथ्य को दर्शाया गया है। चित्र में मिलावट इस तथ्य का

द्योतक है कि अनुभव के सामान्य क्षेत्र वहाँ है जहाँ पर सांझापन के अर्थ की संभावना है।

वैसे तो संचार प्रक्रिया की कई परिभाषाएँ विद्यमान हैं लेकिन उन सभी का सार इस बात में है कि संवाद प्रक्रिया संदेशों के आदान–प्रदान की सामाजिक आवश्यकता है। डेनिस मेकक्वेल के शब्दों में संचार प्रक्रिया एक ऐसी क्रिया है, जो सांझापन बढ़ाती है। वह कहता है कि संचार का अर्थ है एक व्यक्ति से दूसरे को उपयोगी संदेश पहुँचाना।

चार्ल्स मोरिस इसे दो तरह परिभाषित करते हैं। व्यापक अर्थ में संचार प्रक्रिया का अर्थ है सांझापन को विकसित करना और सीमित अर्थ में संकेतों का अर्थपूर्ण आदान–प्रदान। जॉर्ज लुंडबर्ग के अनुसार संचार प्रक्रिया का अर्थ है विचारों को संकेतों और चिहनों की सहायता से उपयोगी रूप प्रदान करना।

बेकर ब्राऊनेल संचार प्रक्रिया को दो तरह की मानते हैं प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष। प्रत्यक्ष का मतलब है ऐसी प्रक्रिया जिसमें संदेशों व संकेतों को बदलकर एक व्यक्ति से दूसरों तक ले जाया जाता है।

थिओडोर न्यूकॉम का कहना है कि संचार वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति एक दूसरे को प्रभावित करते हैं अथवा दूसरों पर अपनी छाप छोड़ते हैं।

शैनन की परिभाषा अन्य परिभाषाओं की तुलना में कुछ ज्यादा सटीक लगती है। उसके संचार के गणितीय सिद्धांत के अनुसार ''संचार प्रक्रिया में वे सब तरीके शामिल हैं, जिनके द्वारा एक दिमाग दूसरे दिमाग को प्रभावित करता है या एक तंत्र दूसरे तंत्र को प्रभावित करता है।''

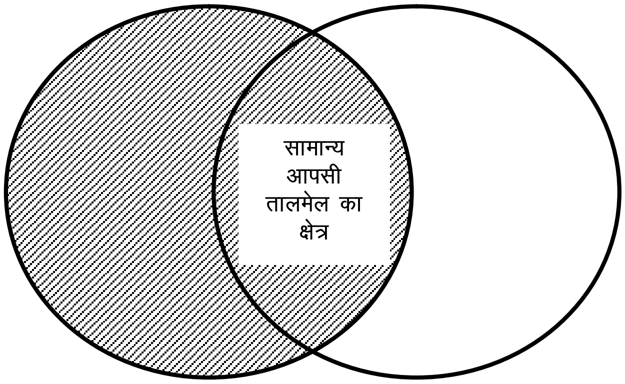

चित्र 1

उपर्युक्त परिभाषाओं में से हमें कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य मिलते हैं। प्रथम, परिभाषाएँ संचार प्रक्रिया के अर्थ को विस्तार देती हैं और इस विस्तारित अर्थ में तो कई तरह की पशुओं की प्रतिक्रिया और यांत्रिक क्रियाकलाप भी संचार प्रक्रिया के अंग समझे जा सकते हैं। दूसरे, परिभाषाएँ सूचना पाने वाले की स्थिति के अनुसार महत्ता और मूल्य को इंगित करती हैं। इस प्रक्रिया का अनुसंधान और प्रतिदिन के अनुभव बताते हैं कि अधिक महत्त्वपूर्ण बिंदु प्रथम ही है। ये सब तथ्य मिलकर संचार प्रक्रिया की परिभाषा को स्पष्ट करते हैं।

परंतु संचार प्रक्रिया, जैसा कि ऐशले मोन्टेग और फ्लायड मैटसन निर्धारित करते हैं, संकेतों का मायाजाल, प्रचार माध्यमों, संदेशों, सूचनाओं और प्रेरणाओं से अधिक व्यापक अर्थ रखती है। यह केवल संदेशों को ही इधर–उधर पहुँचाने का कार्य नहीं है बल्कि मानवीय तत्त्व भी इसका एक आवश्यक पहलू है। चाहे साफ हो या धुंधली, खामोश हो या शोर युक्त चाहे जानबूझ कर हो या अकस्मात्, संचार प्रक्रिया आपसी मेल–मिलाप की नींव है। इसमें वे सभी तरीके शामिल हैं, जो मानव समुदाय द्वारा अपने विभिन्न क्रियाकलापों के लिए व्यवहार में लाए जाते हैं। अपने विचार, कल्पना, नियम और विश्वास आदि व्यक्त करने के लिए महत्त्वपूर्ण साधन हैं।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) संचार प्रक्रिया क्या है? संचार प्रक्रिया का उद्देश्य क्या है?

....

....

....

....

....

....

2) संचार प्रक्रिया की दो परिभाषाएँ दीजिए।

क) ....

....

....

ख) ....

....

....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

1.3 संचार प्रक्रिया की क्रियाविधि

अरस्तु, ऐसे विद्वान थे, जिन्होंने सबसे पहले संचार प्रक्रिया के बारे में बतलाया, उन्होंने तीन तत्त्वों को चिन्हित किया, जिनके नाम– क) वक्ता, ख) भाषण, ग) श्रोता रखे गए। उपर्युक्त से ज्यादा स्वीकार्य है– हैरोल्ड लासवेल और डेविड बेरलों द्वारा बताया गया संचार प्रक्रिया का स्वरूप। इनके अनुसार संचार प्रक्रिया के चार आवश्यक तत्त्व हैं – भेजने वाला (स्रोत), संदेश, चैनल एवं प्राप्तकर्त्ता (Source, Message, Channel, Receiver & SMCR)।

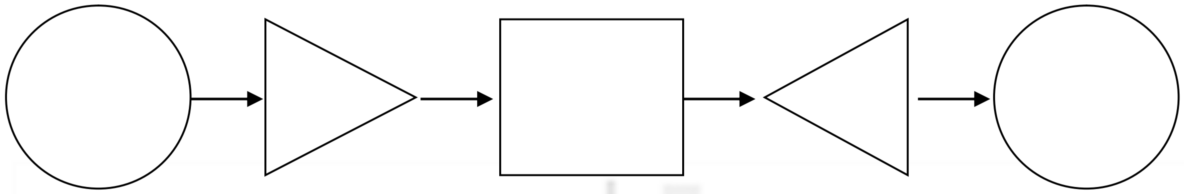

1.3.1 भेजने वाला (स्रोत)

भेजने वाला (स्रोत) व्यक्ति (लिखित, मौखिक चित्र, संकेत) या संस्थान (अखबार, प्रकाशन गृह, टी.वी. स्टेशन, या गतिमान चलचित्र वाला छविगृह) कोई भी हो सकता है। भेजने वाले संदेश देने के लिए मौखिक, लिखित, चित्रित या चिह्न अथवा संकेत जैसा कोई भी तरीका इस्तेमाल कर सकता है। भेजने वाले की चतुराई, उसका दृष्टिकोण, उसका विवेक, उसकी जानकारी, उद्देश्य, सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश आदि का प्रभाव संचार प्रक्रिया की क्षमता पर अवश्य पड़ता है।

1.3.2 संदेश

संदेशों को चिह्नों या संकेतों की सहायता से कूट शब्दों में परिवर्तित किया जाता है, जो अर्थपूर्ण होते हैं। संदेश कागज पर स्याही द्वारा लिखे, हवा में ध्वनि तरंग के रूप में, विद्युत धारा में स्पंदन के रूप में, हवा में हाथ लहराने के रूप में, या हवा में किसी झण्डे के रूप में लहराते हुए अथवा किसी अन्य रूप में हो सकते हैं ताकि उनसे उपयोगी समाचार प्रकट हो सके। उन कूट शब्दों को प्राप्त करने वाला पुनः डीकोड करके उन संदेशों का अर्थ निकाल लेता है।

संदेश संचार प्रक्रिया का मूल तत्त्व है। इसको इस प्रकार तैयार करना चाहिए कि पाने वाले की जरूरत के अनुरूप हो और इतना स्पष्ट हो कि उससे सही निष्कर्ष निकल सके। यही इसका उद्देश्य होता है। विल्बर श्राम के अनुसार, संदेश की निर्धारित शर्ते अवश्य पूरी होनी चाहिए यदि इस संदेश के द्वारा पाने वाले को प्रत्युत्तर के लिए तैयार करना हो।

i) संदेश इस तरह डिजाइन करके भेजना चाहिए कि वह संभावित श्रोता का ध्यान आकर्षित कर सकें।

ii) संदेश में वे ही चिह्न प्रयोग करने चाहिए, जो सामान्य अर्थ वाले हों और प्राप्तकर्त्ता उसको पूरी तरह समझ सकें।

iii) संदेश ऐसा हो कि प्राप्तकर्त्ता उसको पाने के लिए उत्सुक हो और संदेश उसको कोई रास्ता सुझा सके।

iv) संदेश के द्वारा प्राप्तकर्त्ता को कोई समाधान मिल सके, जो संदेश मिलने के समय उसकी परिस्थिति के लिए उपयुक्त हो।

1.3.3 चैनल

चैनल का अर्थ है माध्यम जिसके जरिए संदेश भेजे या प्राप्त किए जाते हैं। इसका संबंध पाँच इंद्रियों से है:

दृष्टि, स्पर्श, सुनना, सूंघना एवं स्वाद चखना। एक संदेश उपर्युक्त पाँच में से किसी एक इन्द्रिय के आधार पर प्राप्त होता है। जैसे किः

- संदेश मुद्रित या लिखाई के माध्यम से भेजा जा सकता है।
- यह ध्वनि माध्यम से या ऑडियो टेप, भाषण या वाद्य यंत्रों के माध्यम से सुना जा सकता है।
- किसी चित्र, टेलीविजन और दृश्य/श्रव्य माध्यम से यह देखा जा सकता है।
- यह छू कर, सूंघ कर या चख कर जाना जा सकता है जैसे : कोई मॉडल, प्रदर्शन योग्य वस्तु, नमूना अथवा प्रयोग।

प्रायः संचार प्रक्रिया में एक से ज्यादा विधायाँ प्रयोग में लाई जाती हैं। यदि कई विधाएँ एक साथ प्रयोग में लाई जाती है तो संदेश ज्यादा उपयोगी, स्पष्ट और देर तक कायम रहने वाला प्रभाव देता है।

चैनल में यांत्रिक साधनों का उपयोग भी होता है। जब तक उसको कूट शब्द में न बदल दिया जाए कोई संदेश नहीं भेजा जा सकता। जब हम भाषा या भाषण के द्वारा संवाद स्थापित करते हैं तो हम संदेश को लिखित या मौखिक शब्दों में उसके टुकड़े करते हैं। संचार के लिए हम चिह्नों और प्रतीकों का प्रयोग करते हैं। बहरों और गूगों को अपनी बात बताने के लिए उन्हें भाषा के चिह्नों और संकेतों को सिखाया जाता है। संदेश को दूर भेजने के लिए ध्वनि तरंगों का इस्तेमाल किया जाता है। संचार प्रक्रिया को पूर्ण करने वाले संदेश को डीकोड अवश्य किया जाता है।

1.3.4 प्राप्तकर्त्ता

प्राप्तकर्त्ता अथवा गतंव्य व्यक्ति, समूह, भीड़ जो देख सके, सुन सके अथवा पढ़ सके कोई भी हो सकता है। संचार प्रक्रिया में प्राप्तकर्त्ता ही गंतव्य है। संदेश

भेजने वाले को वांछित उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्राप्तकर्त्ता की जरूरतों, अपेक्षाओं, ज्ञान, सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि आदि की जानकारी रखनी चाहिए।

निम्न चित्र संचार प्रक्रिया की विधि दर्शाता है।

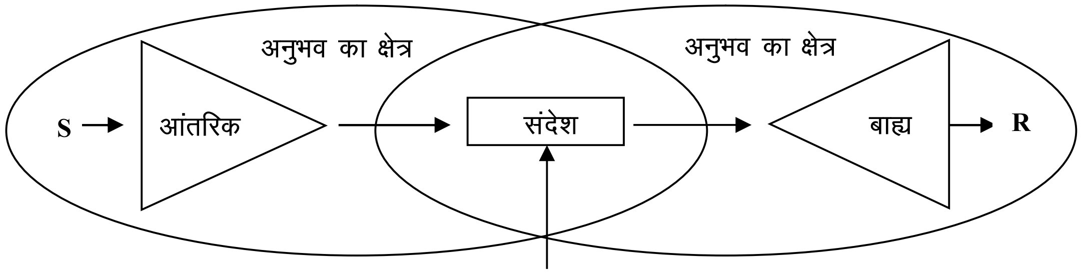

S: Source

1.3.5 स्रोत

विल्बर स्कैम के अनुसार प्रभावशाली संचार प्रक्रिया के लिए अनुभव का क्षेत्र आवश्यक तत्त्व है। स्रोत द्वारा संदेश को एनकोड करना और गंतव्य द्वारा डीकोड करना प्रत्येक के अनुभव पर निर्भर है। यदि इसमें अनुभव का सांझा क्षेत्र नहीं है, संचार प्रक्रिया संभव है। स्कैम ने इसे एक उदाहरण द्वारा बताया है कि कैसे एक अफ्रीकन आदिवासी ने पहले हवाई जहाज देखा। उसकी नजर में हवाई जहाज एक पक्षी था और चालक उसने पंख वाला कोई देवता समझा। फिल्म 'गाड्स मस्ट वी क्रेजी' इसी विचार को रेखांकित करती है। यहाँ पर स्रोत का अनुभव और गंतव्य का अनुभव दोनों एकदम हैं तो कठिनाई होती है, जैसे जब हम अपने से भिन्न संस्कृति के साथ संवाद स्थापित करते हैं।

'भेजने वाला → संदेश → चैनल → प्राप्तकर्त्ता' की इस मॉडल की इस बात के लिए आलोचना हुई है कि यह एक सीमित और रेखीय स्वरूप दर्शाता है जबकि

संचार प्रक्रिया एक अनन्त संचार है और इस प्रक्रिया का एक स्थान से शुरू होकर दूसरे स्थान पर खत्म होने का विचार भ्रम पैदा करता है।

साइबरनेट विज्ञान की संचार प्रक्रिया पर सूक्ष्म दृष्टिपात करते हुए इसमें चिह्न, संकेतों फीडबैक, अतिरेक एवं शोर का भी समावेश किया है। फीडबैक का समावेश साइबरनेट विज्ञान की संचार प्रक्रिया के लिए एक बहुत बड़ी देन है। फीडबैक संचार प्रक्रिया को न केवल वृत्ताकार बनाता है, बल्कि यह विभिन्न अवस्थाओं में हो सकने वाले सुधार की भी गुंजाइश रखता है।

एक अन्य आवश्यक घटक है संकेतों का महत्त्व। संकेत भी संचार प्रक्रिया की आधारभूत इकाई है। वे मौखिक (जबान से बोले गए), ग्राफिक (लिखित रूप में) या प्रतीकात्मक रूप में जैसा कि झण्डा, बैनर आदि हो सकते हैं। भाषा भी संकेतों का व्यवस्था है, जिसे पृथ्वी पर सामान्य रूप से संचार प्रक्रिया की धुरी के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) संचार प्रक्रिया के चार तत्त्वों के नाम बताएँ।

....

....

....

....

....

....

2) संचार प्रक्रिया में संदेश को उपयोगी बनाने की दो शर्ते कौन–सी हैं?

....

....

....

....

....

....

3) भेजने वाला, संदेश, चैनल और प्राप्तकर्त्ता (SMCR) के स्वरूप (मॉडल) की आलोचना क्यों की जाती है?

....

....

....

....

....

....

1.4 संचार प्रक्रिया के मॉडल (प्रतिरूप)

संचार प्रक्रिया के अध्ययन के विस्तृत क्षेत्र में कई प्रमुख मॉडल हैं। लेकिन कोई भी एक मॉडल सभी उद्देश्यों और स्तरों को पूरा नहीं कर सकता है। हम तीन मॉडलों का अध्ययन करेंगे, जो हैरोल्ड लासवेल, जार्ज गर्बनर और डेविड बेरलो द्वारा प्रतिपादित किए गए हैं। बहुत से सिद्धांतों और मॉडलों में से ये इसलिए चुने गए हैं क्योंकि ये सर्वाधिक बोधगम्य और प्रतिनिधिकारी हैं तथा अधिकतर लोगों को स्वीकार्य है। तीनों ही मॉडल संचार प्रक्रिया के पीछे बताए गए चार घटकों स्रोत, संदेश, चैनल और श्रोता (प्राप्तकर्त्ता) को महत्त्व देते हैं। केवल डेविड बेरलों ही परिणाम या निष्कर्ष तत्त्व को छोड़ते हैं।

लासवेल मॉडल, जिसका अत्यधिक प्रचलन है के अनुसार ''कौन क्या कहता है, किससे, किस चैनल के माध्यम से, कितने प्रभावी तरीके से'' इन्हीं में संचार प्रक्रिया का सार मौजूद है। यह संवादकर्त्ता पर आधारित रेखीय मॉडल है, लासवेल के अनुसार, एक तरफा या दो तरफा कोई भी हो सकता है। उनका जोर संदेश के अर्थ की बजाय उसके प्रभावशाली होने पर है।

गर्बनर मॉडल पिछले रेखीय सिद्धांतों का ही सुधार रूप है। यह संदेश को वास्तविकता से जोड़ता है। संदेश के मुख्य बिंदु ज्ञान और उपयोग पर जोर देता है। संचार प्रक्रिया को दो वैकल्पिक आयामों — विचारात्मक या तथ्यात्मक — से निर्मित मानता है। गर्बनर मॉडल की विशेषता यह है कि संस्कृति में ही संदेश का समावेश मानना है।

मनुष्य का व्यवहार संस्कृति द्वारा निर्धारित होता है। परिणामस्वरूप यह एक ही संदेश का विभिन्न श्रोताओं पर विभिन्न प्रभाव पड़ने के तथ्य को दोहराता है।

बेरलो का स्रोत, संदेश, चैनल और श्रोता (प्राप्तकर्त्ता) मॉडल काफी प्रसिद्ध रहा है। संचार प्रक्रिया के बारे में उसका सिद्धांत 'प्रोसेस ऑफ कम्युनिकेशन' लाभदायक उदाहरण के रूप में जाना जाता है। उसके अनुसार संचारण के छह घटक हैं, जिनके नाम हैं– स्रोत, चैनल आंतरिक (एनकोडर), संदेश, चैनल, चैनल बाह्य

(डीकोडर) और प्राप्तकर्त्ता। उसके अनुसार ये घटक अलग–अलग नहीं देखे जाने चाहिए। ये संचार प्रक्रिया के कार्यान्वयन के समय होने वाले व्यवहार के आधार पर रखे गए नाम हैं।

हमने ऊपर संचार के तीन मॉडलों (प्रतिरूपों) का अवलोकन किया है, जिनका सारांश निम्न चार्ट में दिया गया हैः

लासवेल (1948)	गर्बनर (1956)	बेरलो (1960)
कौन संगठन क्या संदेश दे रहा है, प्रकृति और कार्य कहता है	**कोई भी एक** (स्रोत, संवादकर्त्ता) उनकी घटना का आकलन और उसी स्थिति में प्रतिक्रिया या प्रति उत्तर उपलब्ध करना	**स्रोत** प्रेस, प्रकाशन, अनुसंधान संगठन सरकार, चर्च तथा अन्य सामाजिक संगठन टेलीविजन, रेडियो तथा प्रकाशन
कार्य	**सामग्री**	**संदेश**
विषय की क्या प्रकृति हैः सूचनात्मक, मनोरंजनात्मक, शैक्षिक। किस चैनल या माध्यम से मुद्रित मीडिया, श्रव्य–दृश्य मीडिया स्वचालित विधि से आँकड़े संसाधित करना।	संदेश को भेजने का स्वरूप या प्रकार और संदर्भ जिसके द्वारा भेजा जाना है	शब्द, गणितीय प्रतीक चित्रात्मक छवियाँ
किसको	**साधन**	**चैनल**

श्रोताओं की प्रकृति तथा स्वीकार्यता व किसके साथ क्या संदेश है।	चैनल, संदेश को वितरित और नियंत्रित करने के लिए व्यवहारिक इंजीनियरिंग, प्रशासनिक तथा संस्थागत सुविधाएँ	मुद्रण, इलेक्ट्रानिक मीडिया
प्रभाव	**कोई भी एक**	**प्राप्तकर्त्ता**
प्रभावित करने की प्रकृति या श्रोताओं की प्रतिक्रिया संवादकर्त्ता ने किस प्रकार से प्रभावित किया।	(स्थान, श्रोता) कुछ परिणामस्वरूप की स्थिति में घटना या उद्देश्य के बारे में जानना या प्राप्त करना और उसका प्रति उत्तर देना।	सामान्य श्रोता विशिष्ट श्रोता

हमने देखा कि संचार प्रक्रिया की परिभाषा प्रारंभिक सिद्धांतों और मॉडलों से किस प्रकार ज्यादा व्यवहारिक और बोधगम्य होती आ रही है। हमने यह भी देखा है कि इनकी संचार प्रक्रिया पर संभावित प्रभाव क्या होता है। परिभाषाएँ, सिद्धांत और मॉडल हमारे अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष प्रदान करते हैं।

मॉडल यह समझने में हमारी सहायता करते हैं कि संचार प्रक्रिया हमारे समाज में जिसमें हम रहते हैं वह स्रोत केंद्रित है, प्राप्तकर्त्ता केंद्रित है या संदेश केंद्रित है अथवा चैनल केंद्रित है, या उद्देश्य केंद्रित है। इन्हीं मॉडलों से हमें यह भी पता लगता है कि यदि संचार प्रक्रिया का उद्देश्य सांझापन बढ़ाने हेतु संदेश भेजना है तो प्रक्रिया अवश्य ही एकतरफा होने की बजाय दो तरफा होगी, रेखीय की बजाय वृत्ताकार होगी। संचार प्रक्रिया को निम्न तथ्यों को भी ध्यान में रखना होगा जैसे संदर्भ, संस्कृति, लाक्षणिक व्यवस्था और अनुभव का क्षेत्र।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) संचार प्रक्रिया के रेखीय मॉडल से आप क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

....

2) एक सही संचार प्रणाली की क्या विशेषताएँ हैं?

....

....

....

....

....

....

1.5 प्रौद्योगिकी क्रांति और सार्वभौमिक संचार

संचार की शुरुआत सामान्यतः छपाई के आरंभ के साथ मानी जाती है। इसके बाद कागज की खोज ने इसे बढ़ाया। एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव, संचार के विकास में बिजली के उत्पादन और उसके प्रयोग के कारण आया, जिसके द्वारा दूरभाष, दूरध्वनि, रेडियो और सिनेमा का विकास हुआ। इन नई तकनीकों से सामूहिक संचारण का सीधे औद्योगिक युग में प्रवेश हुआ। पिछली शताब्दी के दूसरे अर्धकाल के बाद से नए श्रोतों, तकनीकों एवं तकनीकी खोजों, का त्वरित विकास हुआ खासकर संचार के क्षेत्र में संदेश भेजने और प्राप्त करने में एक क्रांति का आरंभ हुआ है।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ही प्रौद्योगिकी क्रांति ने अपनी गति को तीव्र कर दिया है। आज की प्रौद्योगिकी ने संचार को अत्यंत तेज, सार्वभौमिक और सस्ता बना दिया है। आज हमारे पास अनेक संचार के नवीनतम साधन उपलब्ध हैं, इसके लिए सारा श्रेय संचार प्रौद्योगिकी के विकास को ही जाता है। दूरभाष को ही लीजिए यह व्यक्ति से व्यक्ति के लिए संचार का महत्त्वपूर्ण साधन है, इसी की नई भूमिका अपूर्व रही है। मोबाइल टेलीफोन ने तो लोगों के संचार के तरीकों में ही परिवर्तन कर दिया है। दूरदर्शन श्रव्य–दृश्य माध्यम है, जो लगातार लोगों में प्रचलित हो रहा है। हमारे पास इन साधनों की एक लम्बी सूची है, जो हमें तुरंत और भूमंडलीय संचार में सहयोग और सहायता प्रदान करती है जैसे कि उपग्रह या सैटेलाइट, मैग्नेटोस्कोपस, वीडियो डिस्कस, टेलटेक्स, होम कम्प्यूटर, इंटरनेट, टेलेमैटिक और इसी प्रकार के अन्य साधन उपलब्ध हैं। डिजिटल क्रांति ने संख्यात्मक प्रकारों में संचार के प्रयोग को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इन संचार के साधनों ने स्वतः ही समय और स्थान की सीमाओं को तोड़ दिया है। अब दूरियाँ नजदीकियों में बदल गई हैं, दूरी किसी तरह की बाधा नहीं है। आज सूचनाओं और आकड़ों को कुछ ही क्षणों में विश्व के किसी भी कोने में ले जा सकते हैं उनका प्रयोग कर सकते हैं। आप आँकड़ों को एकत्रित या भण्डारित कर

सकते हैं और बहुत ही सरलता या आसान तरीके से उनका प्रयोग व उपयोग कर सकते हैं। यह सब प्रौद्योगिकी क्रान्ति के कारण संभव हुआ है।

संचार के क्षेत्र में हुई प्रौद्योगिकी क्रांति के महत्त्वपूर्ण परिणाम सामने आए हैं। इस क्षेत्र में पहले हुई प्रगति के कारण एक बहुत बड़ा परिवर्तन सामाजिक ढाँचे में आया है, जो परिवर्तन का कारण बना है। इस प्रकार छपाई की कला ने सामंती प्रथा को शीघ्र दफनाने में मदद की है। समाचार–पत्र, तार और टेलीफोन ने समाज को लोकतंत्र की ओर बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। नए मीडिया के जरिये, जो पिछली शताब्दी की समाप्ति पर शुरू हुआ जैसे फिल्म (1895), रेडियो (1897/1921) और टेलीविजन (1935), लोगों और संस्कृतियों के बीच की सीमाएँ स्थायी तौर पर लांघी जा चुकी हैं। इन माध्यमों के द्वारा तैयार की गई सूचनाएँ ज्यादा से ज्यादा अंतर–सांस्कृतिक और अंतर्राष्ट्रीय होती चली गई हैं। हम पहले से ही साक्षी हैं यानि कि ट्राजिस्टर्स और कम्प्यूटर में सिलिकॉन चिप का प्रयोग करके नए इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रभावों को देख चुके हैं और अब तो उपग्रह के माध्यम से दूरी की रुकावट ही समाप्त हो गई है।

कभी भी संचार क्रांति की तुलना प्रौद्योगिकी क्रांति से नहीं की जा सकती क्योंकि ये तकनीकी क्रांति का केवल एक पक्ष बताती है। लोग, सामाजिक संस्थाओं और राष्ट्रों ने इस बात का आलोचनात्मक अध्ययन शुरू कर दिया है कि किस तरीके से संचार और मीडिया जगत आज के युग में कार्य कर रहा है। फ्रांस सरकार द्वारा नियुक्त नोरमा–मिक कमीशन रिपोर्ट (1978) इस बात पर बल देती है कि संचार क्रांति के प्रयोग में लम्बी गुणात्मक छलांग आगे लगने वाली है। रिपोर्ट से संकेत मिलता है कि पिछले समय की सारी प्रौद्योगिकी क्रांति अर्थव्यवस्था और समाज के मजबूत गठबंधन का कारण बनी है। इकट्ठी होकर ये कभी–कभी भयंकर पीड़ा पहुँचाने का कार्य भी करती हैं। ऐसा ही एक मामला भाप इंजन,

रेलवे और बिजली के आविष्कार का है। सूचना क्रांति तो इनसे भी ज्यादा प्रभाव डालने की क्षमता रखती है।

1960 के दशक के मध्य से, एक व्यापक आंदोलन स्थानीय और विकेंद्रीकृत मीडिया के लिए चल रहा है। इसने विकासशील देशों के लिए 'नई विश्व सूचना और संचार व्यवस्था' (New World Information and Communication Order-NWICO) के लिए रास्ता साफ कर दिया है, पहले निर्गुट देशों के आंदोलन में और बाद में संयुक्त राष्ट्र की सामान्य सभा में। नई विश्व सूचना और संचार व्यवस्था में एक स्वतंत्र एवं संतुलित सूचना तंत्र की माँग की गई है और किसी भी सांस्कृतिक प्रदूषण के प्रयास को नकारा गया है अर्थात् किसी की भी संस्कृति से छेड़छाड़ करने की मनाही की गई।

अनेक संचारण एवं मीडिया क्षेत्र के विद्वानों ने संचार की नई प्रौद्योगिकियों के प्रभाव का अध्ययन किया है और उसके निष्कर्षों में से एक यह है कि प्रौद्योगिकी क्रांति की पीठ पर सवार संचार क्रांति ने जन समूह के संवाद के आधार पर अतिक्रमण किया है। इस शताब्दी के प्रथम दशकों में (लगभग 1920 तक) 80 प्रतिशत मनुष्यों का संवाद का जरिया आपसी बातचीत होता था और केवल 20 प्रतिशत लोगों का अन्य साधन जैसे प्रेस, टेलीफोन या रेडियो प्रसारण आदि होता था। लेकिन शताब्दी के समाप्त होते–होते टेलीमेटिक्स क्रांति के कारण ये अनुपात उलट हो गया है। महज 10 से 15 प्रतिशत मानव संवाद का जरिया मौखिक रह गया है शेष का मशीने ही रह गई हैं। यह विकास के गंभीर परिणामों में से एक है, जो पर्याप्त तकनीकी नियंत्रण के न होने के कारण है। लिखित संवाद तो वर्षों पहले ही छोड़ दिए गए है और धीरे–धीरे मौखिक संवाद का स्थान ले लेगा। इसके कारण प्राधिकारवाद लोकतंत्र पर भारी पड़ सकता है, तथा उसमें हस्तक्षेप करेगा। ये तकनीकी प्रक्रिया बढ़ते–बढ़ते राष्ट्रों के सशक्त ढाँचे में परिवर्तन का

पर्याय बनती है जैसे आर्थिक महाशक्ति, तकनीकी महाशक्ति, वैचारिक महाशक्ति एवं राजनैतिक महाशक्ति।

प्रौद्योगिकी अपने आपमें अच्छी या बुरी नहीं होती। यह उदासीन है। यह क्यों और क्या का जवाब भी नहीं देती है। यह केवल इस बात का जवाब देती है कि कैसे या जैसा कि इसके विद्वानों की भाषा हमें बताती है कि प्रौद्योगिकी केवल 'नो हाऊ' (प्रौद्योगिकी जानकारी) ही देती है। यद्यपि विशाल संचार का भविष्य उज्जवल संभावनाओं से भरा हुआ है, यह कहना उचित होगा कि संचार के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी विकास, चाहे वह अप्रिय हो, न ही पूर्ण रूप से लाभदायक और न ही पूर्ण रूप से हानिकारक होगा। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हम नई तकनीक में से क्या चुनते हैं और किस प्रकार चुनते हैं।

संचार की इतनी वृद्धि में ज्यादा हिस्सा प्रौद्योगिकी और सूचनाओं की मात्रा का है। गुटेनबर्ग युग से इलेक्ट्रानिक युग तक संचारण का दायरा विस्तृत हुआ है और पृथ्वी पर सबकी पहुँच में आ गया है। लेकिन प्रसारण ने अपने आपको उत्तम गुणवत्ता वाले रूप में नहीं तैयार किया है।

1.6 संचार में सामाजिक–सांस्कृतिक तत्त्व

संचार में सामाजिक–सांस्कृतिक तत्त्व की अहम भूमिका है, चाहे वह व्यक्ति हो या सामूहिक कोई संस्थान अथवा समूह। भेजने वाला और पाने वाला दोनों की संचार प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका रखते हैं। लॉसवैल के शब्दों में ड्रामे में जो भूमिका कौन और किसकी होती है वही संचार प्रक्रिया में भेजने वाला और पाने वाले की है। परंपरागत रूप से इनको नियंत्रण विश्लेषण और श्रोता विश्लेषण कहा जाता है। इनके कुछ अन्य नाम भी हैं जैसे – प्रेरक – उत्तरदाता, भेजने वाला — पाने वाला, एनकोडर — डीकोडर, स्रोत — गंतव्य, कलाकार – श्रोता, संचार — संचारित आदि।

1.6.1 भाषा

सफल संचार की कुछ पूर्व आवश्यकताएँ भी होती हैं। वह हैं भाषा संकेतों की प्रणाली। संकेत मन मुताबिक होते हैं और व्यक्ति और संस्कृति का प्रभाव उनमें झलकता है। भाषा संचार के विकास और प्रेषण में, समाज के आपसी लगाव और सामाजिक मूल्यों को स्थापित करने में अहम भूमिका अदा करती है। यह संदेश को एनकोड और डीकोड करने का माध्यम है। मौखिक संवाद यद्यपि संचार का एक छोटा सा ही अंश है तो भी यह मानव व्यवहार की एक आवश्यकता है। मौखिक संवाद आदान–प्रदान विश्वव्यापी व्यैक्तिक एवं सामाजिक क्रियाकलापों के अध्ययन की कुंजी है।

भाषा संकेतों की, चाहे मौखिक हो या लिखित, वह प्रणाली है, जो समाज के सदस्यों द्वारा अथवा आशय स्पष्ट करने के लिए निश्चित मानदंडों के जरिए प्रयोग में लाई जाती है। भाषा ही मनुष्यों की एक खास विशेषता है। भाषा के तीन महत्त्वपूर्ण कार्य हैं:

i) भाषा संचार के लिए प्रथम वाहन है।

ii) भाषा से व्यक्ति अथवा समाज के विशेषता की पहचान है। यह व्यक्तित्व और संस्कृति को आकार देने में सहायता करती है।

iii) भाषा ही संस्कृति के विकास और इसके प्रेषण को संभव बनाती है साथ ही सामाजिक वर्गों के लगाव और प्रभावशाली कार्यकलापों को भी संभव करती है।

1.6.2 चिह्न / संकेत

संदेश चिह्नों से बनते हैं। एक चिहन एक संकेत होता है, जिसका एक मान्य अर्थ होता है। एक चिह्न और एक वस्तु में महत्त्वपूर्ण अंतर होता है। चिह्न किसी वस्तु को छोटा करके दिखाता है।

हम चिह्नों का प्रयोग करके लगातार संवाद स्थापित करते आ रहे हैं। चिहनों को हर अपने आसपास से लेकर एनकोड करते हैं और उनको पुनः डीकोड करके अर्थ निकालते हैं।

मौखिक समेत सभी संचार में संकेतों का प्रयोग होता है। संकेतों का प्रयोग किसी अन्य वस्तु क बदले आसानी के लिए किया जाता है। इनको संचार के माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाता है। शब्द जो हम इस्तेमाल करते हैं वे हमारे संदेश के महत्त्व को रखाकित करते हैं। संचार तभी संभव है जब भेजने वाला और पाने वाला इस्तेमाल किए गए संकेतों का एक जैसा अर्थ ही निकालते हैं। मनुष्य में यह योग्यता है कि वह संकेतों का एक जैसा अर्थ ही निकालते हैं। मनुष्य संकेतों का आपस में आदान–प्रदान करने में सक्षम है साथ ही संकेतों को उत्पन्न करने में भी सक्षम है। इस प्रकार संकेत संचार की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है।

संकेत मौखिक हो सकते हैं, बोले गए शब्दों के रूप में चित्रित हो सकते हैं, लिखित शब्दों के रूप में या प्रदर्शित रूप में हो सकते हैं जैसे झण्डा आदि।

संकेत का अर्थ सामाजिक समूहों द्वारा तय किया जाता है। यह सामाजिक सहमति प्रदान करता है कि कौन–सा संकेत किस वस्तु का प्रतीक है। उदाहरण के तौर पर, शब्द 'बिल्ली' यदि कोई इसके लिए कोई दूसरा शब्द इस्तेमाल करता है निःसंदेह यह कोशिश संचार को जाम कर देगी।

संचार विज्ञान के विशेषज्ञ माध्यम (चैनल) को स्रोत एवं भेजने वाले के बीच एक प्रभावशाली कड़ी मानते हैं। जरूरत इस बात की है कि चैनल की विश्वसनीयता की जाँच संचार को प्रभावी ढंग से काम करने के मूल्यांकन से की जाए। संचार

के व्यवहार में चैनल फीडबैक से संदेश प्राप्तकर्त्ता शीघ्र एवं यथोचित प्रत्युतर दे सकता है। चैनल का समय पर मिलना और इसका स्थायी होना अच्छी संचार प्रक्रिया के लिए आवश्यक है।

1.6.3 फीडबैक

फीडबैक का मतलब है प्राप्तकर्त्ता की संदेश के प्रति प्रतिक्रिया। यह उसके पक्ष या विपक्ष में हो सकता है। लेकिन संचार प्रभावी है या नहीं इसको जानने के लिए फीडबैक का होना जरूरी है। इसके अंतर्गत् प्रश्नावली, सम्पादक के नाम पत्र, विचार, गोष्ठियाँ, अभिमत और विरोध या आलोचना भी आते हैं। कारगिल युद्ध में शहीद हुए जवानों के परिवारों के प्रति मीडिया की अपील के प्रत्युतर में प्राप्त विशाल समर्थन या उड़ीसा के तूफान पीड़ितों के प्रति मिला सहयोग, इस बात के प्रमाण हैं कि फीडबैक संचार प्रक्रिया को कितना प्रभावित करते है। किसी संगीतमय कार्यक्रम को देखकर दर्शकों द्वारा तालियाँ बजाकर प्रशंसा करना अथवा किसी मैच के दौरान दर्शकों का हिसंक हो जाना. विशेष घटना के प्रति प्रत्युत्तर की श्रेणी में आते हैं अतः ये भी फीडबैक हैं।

शोर

सफल संचार के लिए जरूरी है कि उसमें शोर शराबा न हो। संचार सिद्धांत में संदेश के वहन के दौरान शोर का उद्धरण मिलता है। यह दो तरह का होता है। चैनल शोर एवं अर्थ संबंधी शोर।

चैनल शोर में किसी भी तरह के रुकावट जो संदेश के भेजने में बाधा डालती है, शोर की गिनती में आता है। विशाल संचारण में चैनल शोर का रूप है जैसे रेडियो पर स्थिर प्रकार की ध्वनि, कागज पर फैली हुई स्याही या टेलीविजन पर घूमता रहा स्क्रीन या छपाई में अति छोटा टाइप आ जाना। अर्थात् स्रोत एवं श्रोता

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

के बीच किसी भी रुकावट का आना चैनल शोर की निशानी है। टेलीफोन पर हो रही बातचीत में आर–पार अन्य आवाजें आना भी चैनल शोर का उदाहरण है।

अर्थ संबंधी शोरः ये दोष तब आता है जब संदेश का गलत अर्थ निकाल लिया जाता है चाहे यह वैसा ही प्राप्त हुआ हो जैसा भेजा गया था। यह तब होता है जब भेजने वाला और पाने वाले का दायरा अलग–अलग होता है अर्थात् उनमें सामंजस्य नहीं होता। विद्वान लोग निम्न प्रकार का दोष प्रायः बताते हैं, शब्द, जिनको समझना कठिन होता है, शब्दों के अर्थ भेजने वाले के लिए कुछ और हों और पाने वाले के लिए कुछ और हों, भेजने और पाने वाले के मध्य सांस्कृतिक अंतर भी इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। श्रोता अनुसंधान, शब्द भंडार एवं फीडबैक आदि कुछ उपायों से अर्थसंबंधी दोष कम किया जा सकता है। विशाल प्रसार माध्यम की तुलना में आपसी संवाद में फीडबैक ज्यादा प्रभावी हैं।

मानव व प्राणी जिन समाज या संस्कृतियों में रहते हैं वे एक जैसी नहीं होतीं। सार्वभौमिक संचार तंत्र जो तकनीकी प्रगति के कारण काफी विशाल हो चुका है, उसी तरह विभिन्न संस्कृतियों के बीच भी संचार विशालकाय हो गया है। इस तरह का आदान–प्रदान अंतर–सांस्कृतिक संचार कहलाता है।

अंतर–सांस्कृतिक संचार का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन यद्यपि नया–नया प्रयास है तो भी यह जिज्ञासा का विषय रहा है कि कौन–सी संस्कृति कितनी पुरानी है तथा आपस में किस तरह व्यवहार करती थीं। इसको अलग–अलग संस्कृति वाले सदस्यों के बीच आर–पार संवाद भी कहा जा सकता था। यह उस समय उजागर होता है जब एक संस्कृति का संदेशकर्त्ता दूसरी संस्कृति के व्यक्ति को संदेश भेजता है।

इस बात का सामना बार–बार होता है कि इस तरह के दोषों को कैसे कम किया जाए। व्यापक संचार सांस्कृतिक अंतर की अनदेखी का प्रयास रहता है। लाभ की इच्छा से बहुराष्ट्रीय कम्पनी द्वारा कब्जाए गए संचार तंत्र और व्यवसायीकरण तथा

तानाशाही प्रवृत्ति वाली सरकारें प्रायः सांस्कृतिक अंतर की अनदेखी करती हैं। बल्कि कभी–कभी स्वार्थपूर्ति हेतु भी ये सांस्कृतिक अनुकूलन का आवरण भी ओढ़ते हैं। ज्यादा स्पष्ट उदाहरण व्यवसायिक विज्ञापनों का है, जो नई एवं कभी–कभी बनावटी सांस्कृतिक संकेत और आवश्यकताएँ गढ़ लेते हैं। इनसे संदेश प्राप्तकर्त्ता की संदेश के प्रति अभिरुचि धीरे–धीरे समाप्त होती जाती है। संचार स्रोत केंद्रित और एकतरफा होने लगता है और पूँजी प्रक्रिया केवल एक थियेटर शो बनकर रह जाती है। प्रचुर प्रचार तंत्र किसी संस्कृति को अपने प्रभाव तंत्र में लाने और अपने राजनीतिक, आर्थिक अथवा सांस्कृतिक विचार लादने में काफी सिद्धहस्त हो गया है। यही कारण है कि मिस्टर मैकलुहैन को कहना पड़ा कि मीडिया ही संदेश है।

भागीदारी और स्वतंत्रता बिना किसी दबाव और बलप्रयोग के पाया जाना अच्छे संचार की उपलब्धि होती है। संचार प्रक्रिया की शुरुआत लोगों को उनके जीवन और उनके अपने निर्णयों के प्रति जागरूक करने के साथ–साथ होनी चाहिए। सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्य, पहचान और अवधारणाएँ ही संचार की विषयवस्तु हैं जिन्हें मीडिया अगर निरंकुश हो जाए तो नष्ट कर सकता है। फिर भी यह कहना सही होगा कि फिलहाल सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों और लक्षणों तथा संचार तकनीक की प्रगति के बीच कोई संघर्ष नहीं है।

1.7 संचार के प्रकार

संचार विभिन्न स्तरों पर कार्य करता है अतः इसके कई प्रकार हैः

1.7.1 आत्मकेंद्रित संचार

यह तब होता है जब कोई व्यक्ति स्वयं से बात करता है, ध्यान लगाता है अथवा उच्चारण करता है, उसे आंतरिक संचार कहते हैं। प्रभु से प्रार्थना भी इसी श्रेणी में आती है। लेखकों ने इसे दैवी परा संचार के रूप में प्रस्तुत किया है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

1.7.2 युग्म संचार

यह दो व्यक्तियों के बीच होता है। इसमें आपसी बातचीत, संवाद, विचार–विमर्श आदि आते हैं, जो बिना किसी तकनीकी उपकरण के स्थापित होता है। यह प्रत्यक्ष, लगाव यक्त एवं संकेतों द्वारा हाव–भाव युक्त होता है। इसकी क्षमता दोनों सदस्यों के आपसी संबंध, व्यवहार, निपुणता, स्तर आदि पर निर्भर रहती है।

1.7.3 समूह संचार

समूह संचार ऐसा संचार है, जो व्यक्तियों के समूह में होता है। इसमें संचार के प्रायः सभी तत्त्व रहते हैं। अंतर केवल इतना है कि जहाँ सदस्यों की संख्या बढ़ती है, वहाँ भागीदारी एवं जुड़ाव का अंश कम रहता है।

1.7.4 जन संचार

जब श्रोता ज्यादा हों, भिन्न–भिन्न प्रवृत्ति तथा फैले हुए हों उनके बीच विस्तृत संचार कार्य करता है। वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति ने दूरस्थ स्थानों का संचार भी शीघ्रता से हो जाने को संभव बनाया है। इसे जन संचार कहते हैं।

बोध प्रश्न IV

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) समाज पर संचार प्रौद्योगिकी के विकास के होने वाले दो प्रभाव बताइए।

....

....

....

....

....

....

2) 'नई विश्व सूचना और संचार व्यवस्था' (NWICO) क्या है? इसकी माँगें क्या हैं?

....

....

....

....

....

....

3) भाषा के तीन कार्य बताइए।

....

....

....

....

....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

....

4) अर्थ संबंधी शोर क्या है?

....

....

....

....

....

....

5) संचार के कोई तीन प्रकार बताइए।

....

....

....

....

....

....

1.8 सारांश

इस इकाई में संचार की बुनियादी अवधारणाओं, शब्द, परिभाषा, मॉडल और संचार के प्रकार आदि के बारे में बताया गया है। वे तत्त्व जो समाज में संचार की प्रक्रिया को आकार प्रदान करते हैं और प्रभाव डालते हैं उनकी भी प्रस्तुति और विवेचन किया गया है। विख्यात विद्वानों द्वारा प्रतिपादित मॉडल और परिभाषाओं का भी अध्ययन किया गया है। साथ ही साथ उनकी आपसी तुलना और उनकी पूरक सामग्री का भी अध्ययन है ताकि हम विषय को ज्यादा से ज्यादा जान सकें। प्रत्येक संदर्भ में कुछ लाभदायक बातें होती हैं, जो हमारी संचार की समझ के प्रयास को सार्थक करती है।

1.9 शब्दावली

संचार : अंग्रेजी शब्द कम्युनिकेशन लैटिन शब्द कम्युनिस का बदला हुआ रूप है, जिसका अर्थ है सांझापन स्थापित करना।

चैनल : इसका अर्थ संदेश के लिए प्रयोग किए जाने वाले माध्यम से है। इसमें पाँचों इन्द्रियात्मक कार्य जैसे देखना, सुनना, छूना, सूंघना और चखना शामिल हैं।

फीडबैक : इसका मतलब है संदेश के प्रति पाने वाले की प्रतिक्रिया यह जानना जरूरी है कि संचार प्रभावशाली है ना नहीं। इसमें प्रश्नावली, सम्पादक के नाम पत्र, विचार फोरम, अभिमत, विरोध आदि शामिल हैं।

भाषा : भाषा संकेतों की लिखित या मौखिक ऐसी प्रणाली है जो समुदाय द्वारा इस्तेमाल की जाती है ताकि

उससे सहज और मान्य अर्थ निकल सकें। भाषा मानव के लिए एक अतिविशिष्ट गुण है।

शोर या प्रदूषण : शोर या प्रदूषण संदेश को भेजने में आने वाली कमियों का नाम है यह दो प्रकार का होता है। एक चैनल दोष, दूसरा अर्थ संबंधी।

चिह्न : चिह्न एक ऐसा संकेत है, जो खास मतलब के लिए प्रयोग होता है। चिह्न से बड़ी वस्तुएँ भी संक्षेप में बताई जा सकती हैं।

संकेत : संकेत मौखिक हो सकते हैं और बोले गए शब्द चित्रित हो सकते हैं जैसे लिखे हुए शब्द, या प्रतीकात्मक हो सकते हैं जैसे ध्वज। संकेत के सही अर्थ का निर्धारण समुदायों द्वारा किया जाता है।

1.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

मेलिवन एल. डिफ्लेटर–एवरेटी इन डेनिस (1991), अंडरस्टैंडिंग मास कम्युनिकेशन, गोयल साब, नई दिल्ली।

सबीर घोष (1996), मास कम्युनिकेशन टुडे इन द इंडियन कांटेक्सट, प्रोफाइल पब्लिशर्स।

केवल जे. कुमार (1981), मास कम्युनिकेशन इन इंडिया, जयको पब्लिशिंग हाऊस, मुंबई।

प्रदीप कुमार, डे (1993), परस्पेक्टिव इन मास कम्युनिकेशन, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

1.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) संचार सांझापन स्थापित करने की प्रक्रिया है अर्थात् सूचना, जानकारी, या विचार आदान–प्रदान करना। न्यू वेबस्टर शब्दकोश के अनुसार सोच, विचार, भावनाएँ या सूचनाओं का आदान–प्रदान, लिखित अथवा मौखिक अथवा चिह्नों के द्वारा दूसरों के साथ बाँटना है। आक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार संचार प्रक्रिया का अर्थ है विचार ज्ञान अथवा सूचनाएँ लेना या देना, मौखिक, लिखित अथवा सांकेतिक रूप में जानकारी प्राप्त करना या सूचना देना हो सकता है।

2) डेनिस मेकक्वेल के अनुसार संचार है — 'एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को अर्थ युक्त संदेश भेजना।' विल्बर स्कैम अपनी परिभाषा को क्लासिकल बताते हुए कहते हैं कि संचार प्रक्रिया इस तरह है जैसे A व्यक्ति B को चैनल C की सहायता से D संदेश भेजता है E प्रभाव युक्त।

बोध प्रश्न II

1) संचार प्रक्रिया के अंतर्गत् आने वाले चार आवश्यक तत्त्व हैं – भेजने वाला (स्रोत), संदेश, चैनल एवं प्राप्तकर्त्ता (Source, Message, Channel, Receiver - SMCR)।

2) संचार प्रक्रिया के अंतर्गत् संदेश को सार युक्त बनाने वाली दो दशाएँ बताइए।

   क) संदेश इस तरह से तैयार करके दिया जाना चाहिए कि संभावित श्रोता का ध्यान आकर्षित कर सके।

ख)	संदेश में प्रयुक्त चिह्न ऐसे होने चाहिए, जो सामान्यतः इस्तेमाल होते हों और इनका अर्थ भी सभी के लिए एक समान हो।

3)	इस मॉडल की आलोचना इसलिए की जाती है क्योंकि यह एक सीमित और रेखीय रूप प्रक्रिया को प्रस्तुत करता है जबकि संचार प्रक्रिया एक अनन्त संचार है

इसीलिए यह मॉडल भ्रामक विचार पेश करता है कि यह एक स्थान से शुरू होकर दूसरे स्थान पर समाप्त हो जाता है।

बोध प्रश्न III

1)	संचार का रेखीय मॉडल (भेजने वाला, संदेश, चैनल और प्राप्तकर्त्ता) का स्वरूप प्रदर्शित करता है। यह मानता है कि संचार एक रेखा में होता है, एक स्थान से शुरू होकर दूसरे स्थान पर समाप्त हो जाता है। यह फीडबैक के योगदान को महत्त्व नहीं देता।

2)	सही संचार प्रक्रिया एकतरफा होने की बजाय दो तरफा होनी चाहिए या रेखीय होने की बजाय वृत्ताकार होनी चाहिए। इसमें संस्कृति, संकेत व्यवस्था तथा सामाजिक वातावरण का भी ध्यान रखना चाहिए।

बोध प्रश्न IV

1)	संचार प्रौद्योगिकी के विकास से सामंतशाही प्रथा का अंत हुआ है और समाज लोकतांत्रिक प्रक्रिया की ओर उन्मुख हुआ है।

2)	नई विश्व सूचना और संचार व्यवस्था उस आंदोलन का प्रतिफल है, जो विश्व के विकासशील राष्ट्रों द्वारा मीडिया को विकेद्रित करने हेतु चलाया गया। यह निर्गुट राष्ट्रों के आंदोलन के साथ शुरू हुआ और बाद में संयुक्त राष्ट्र की सामान्य सभा में पहुँचा। इस व्यवस्था में स्वतंत्र और संतुलित ढंग

से सूचनाओं के प्रवाह की माँग की गई है और सांस्कृतिक एकाधिकार परंपरा को नकारा गया है।

3) भाषा के तीन मुख्य कार्य निम्न प्रकार हैं:

क) भाषा ही संचार के वहन के लिए प्राथमिक साधन है।

ख) भाषा ही किसी व्यक्ति अथवा उसके समाज की सांस्कृतिक पहचान कराती है। बदले में यह व्यक्ति अथवा संस्कृति को एक आकार प्रदान करती है।

ग) भाषा संस्कृति के विकास और उसके फैलने में सहायक होती है साथ ही समुदायों के आपसी मेलजोल और प्रभावशाली ढंग से कार्य करने में भी सहायता करती है।

4) ये शोर या दोष तब होता है जब संदेश का गलत अर्थ निकाल दिया जाता है चाहे वह गंतव्य पर उसी दशा में पहुँचा हो जैसा भेजा गया था। ऐसा तब होता है जब भेजने वाला और पाने वाला दोनों के अनुभव के क्षेत्र भिन्न–भिन्न होते हैं। इसमें ऐसे शब्द शामिल हैं, जिनका अर्थ समझना दुष्कर होता है, शब्दों के प्रस्तुतीकरण और व्यवहार में मतलब अलग–अलग होते हैं, अथवा भेजने वाला और पाने वाले की संस्कृति अलग–अलग होती है।

5) इसके तीन अलग–अलग प्रकार हैं एकल संचार, युग्म संचार और सामूहिक या विस्तृत संचार।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 2 संचार के पारंपरिक और आधुनिक मीडिया

*प्रो. जॉर्ज प्लाथोत्तम

रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना संचार के पारंपरिक साधन

2.2 लोक मीडिया

2.3 संचार का इतिहास

2.4 साधन/माध्यम का चयन

2.5 सारांश

2.6 शब्दावली

2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई में आपका परिचय संसार के पारंपरिक और आधुनिक साधनों की विभिन्न पद्धतियों और प्रक्रियाओं से कराया गया है। पारंपरिक मीडिया तथा लोक मीडिया का अध्ययन भारत की समृद्ध और विभिन्न परंपराओं के संदर्भ में किया

---

* प्रो. जॉर्ज प्लाथोत्तम, नेहू, शिलांग

गया है। इकाई के दूसरे भाग में हम संचार के लेखन से लेकर आधुनिक साधनों के विकास का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन करने के बाद आपः

- संचार के पारंपरिक मीडिया को समझ सकेंगे;
- पारंपरिक मीडिया की रचना को प्रभावित करने वाले घटकों का पता लगा सकेंगे;
- लोक मीडिया तथा जनता पर इसके प्रभाव को जान सकेंगे;
- भारत के कुछ प्रमुख पारंपरिक संचार मीडिया का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे;
- आधुनिक संचार मीडिया तथा उनके विकास का विश्लेषण कर सकेंगें; और
- विभिन्न आधुनिक संचार मीडिया के तुलनात्मक लाभ और हानियों की समीक्षा कर सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम संचार के पारंपरिक और आधुनिक साधनों का अध्ययन करेंगे। संचार एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसने अनेक शताब्दियों से मानव इतिहास की उत्पत्ति एवं विकास को स्वरूप प्रदान किया है। यह वैज्ञानिक एवं तकनीकी परिवर्तनों में होने वाले परिवर्तनों से निरंतर विकसित होती रहती है तथा नया रूप ग्रहण करती जाती है। आधुनिक मीडिया के आ जाने से पारंपरिक मीडिया नया रूप ग्रहण कर लेता है। पिछले कुछ दशकों में संचार इतिहास में अद्‌भुत उन्नति देखने को मिली है। परिणामस्वरूप मीडिया के अनेक नए रूप हैं। पारंपरिक मीडिया भी समाज की बदलती आवश्यकताओं मूल्यों तथा विश्व विचारों को संप्रेषित करने के लिए प्रयुक्त मीडिया विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को अनुकूलित करता रहता है।

2.2 संचार के पारंपरिक साधन

संचार के पारंपरिक साधनों का अर्थ है किसी सभ्यता विशेष में विचारों को संप्रेषित कर एवं सूचनाओं के प्रसार के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले साधन। कभी–कभी पारंपरिक मीडिया को लोक मीडिया, वैकल्पिक मीडिया या लोक साहित्य के साथ घनिष्ठता से जोड़ा जाता है। हम संचार के कुछ पारंपरिक साधनों की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं की जाँच करेंगे। इससे पूर्व हमें संचार और संस्कृति के संबंध को समझाना आवश्यक है।

2.2.1 संचार और संस्कृति

संचार और संस्कृति में गहरा संबंध है। कुछ समाजशास्त्रियों के अनुसार सांस्कृतिक घटकों के वर्गीकरण में बोली, कला, पौराणिक ज्ञान, धार्मिक परंपराएँ, परिवार सामाजिक–व्यवस्था तथा संस्कार शामिल है। हम देख सकते हैं कि इनमें से अधिकांश समूहों के प्रत्यक्ष संचार आयाम है। यह संबंध किसी सभ्यता में संचार के महत्त्व को दर्शाता है। समाजशास्त्री इस बात से सहमत हैं कि संचार के बिना कोई सभ्यता नहीं हो सकती। अनेक व्यक्ति संचार के सामान्य साधन के अभाव में एक. समूह में कार्य नहीं कर सकते। इसलिए सभ्यता के लिए मानव संचार व्यवस्था अनिवार्य है।

2.3 लोक मीडिया

लोक मीडिया का अर्थ है लोगों का मीडिया। लोक साहित्य और लोक मीडिया शब्द जर्मन के मूल शब्द वोल्कस (जिसे फोतक उच्चारित किया जाता है) से आया है, जिसका अर्थ होता है लोग यद्यपि लोक साहित्य लोक मीडिया के काफी नजदीक है तो भी दोनों एक–दूसरे से एकदम भिन्न हैं। लोक साहित्य शब्द का प्रयोग 1845 में विलियम थॉमस द्वारा किया गया था। लोक साहित्य में मिथक, दंत कथाएँ, लोक कथाएँ, चुटकले, कहावतें या लोकोक्तियाँ, राग, वेशभूषा, नृत्य,

नृत्य नाटिकाएँ, गान, पारंपरिक औषधियाँ तथा दीवारों पर लिखी गई सामग्री शामिल होती हैं।

लोक मीडिया का अर्थ है– ग्रामीण तथा कबीले के लोगों को उपलब्ध संचार के विभिन्न साधन। इसे प्रायः 'पारंपरिक मीडिया', 'स्वदेशी संचार प्रणाली', वैकल्पिक मीडिया', 'समूह मीडिया', 'सस्ता मीडिया' आदि भी कहा जाता है।

लोक मीडिया की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हो सकती हैं:

1) एक सांस्कृतिक समूह या क्षेत्र के लोगों की भागीदारी होना।

2) सस्ता होता है, प्रायः स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री ही आवश्यक है।

3) ये समूह की औसत योग्यता पर आधारित होते हैं। यह योग्यता बिना किसी प्रशिक्षण के प्राप्त की जाती है।

4) चूँकि इनमें सबकी भागीदारी होती है अतः गुणवत्ता या संख्या का कोई मानदंड नहीं होता।

5) ये प्रचार के लिए लोगों पर आधारित होते हैं अतः इनका नियंत्रण स्वयं लोगों द्वारा किया जाता है।

6) ये व्यवसायिक नहीं होते। धन शामिल न होने से कोई कापीराइट नियम लागू नहीं होता।

7) इनको सबका समर्थन प्राप्त होता है।

8) इन्हें अवसर या जनता विशेष के अनुकूल अपनाया और पुनः उत्पन्न किया जाता है।

लोक मीडिया का समाज पर चमत्कारी प्रभाव होता है। वे सामाजिक परिवर्तन के शक्तिशाली वाहक हैं। ऐसे स्थानों में भी जहाँ आधुनिक मीडिया की महत्त्वपूर्ण पहुँच हो चुकी है वहाँ भी लोक मीडिया लोगों की धारणाओं को प्रभावित करने में समर्थ तथा किसी कार्य या परिवर्तन के लिए लोगों को सक्रिय करने में निरंतर आधिकारिक रूप से सशक्त साधन बना हुआ है। पारंपरिक मीडिया अंधविश्वासों को समाप्त करने तथा वैज्ञानिक विचारधारा स्थापित करने में अधिक शक्तिशाली हो सकता है। यह जनता में बहुत लोकप्रिय तथा विश्वसनीय है। इसलिए इसमें लोगों को समझने की उल्लेखनीय शक्ति है।

सार्वजनिक मीडिया और लोक मीडिया के बीच संबंध के बारे में सामान्य गलतफहमियाँ हैं। लोक मीडिया एक अंतःव्यैक्तिक संरचना से उत्पन्न होता है, जो सार्वजनिक मीडिया से एकदम भिन्न है। लोक मीडिया का संबंध जनता से होता है जबकि सार्वजनिक मीडिया का संबंध कुछ ही लोगों से होता है, जिनपर उनका नियंत्रण होता है। लोक मीडिया में उसका रूप–स्वरूप और सामग्री और प्रेषणकर्त्ता तथा श्रोता सब एक ही होते हैं।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) संचार और संस्कृति में क्या संबंध है?

....

....

....

....

....

....

2) लोक मीडिया क्या है? उनकी कुछ विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

2.3.1 भारत में लोक मीडिया

विद्वानों के अनुसार भारत में लगभग 6000 प्रकार के लोक मीडिया और पारंपरिक कला के रूप विद्यमान हैं। वे हमारे देश की परंपरा एवं संस्कृति को संरक्षित रखते हैं एवं संप्रेषण में मदद करते हैं। मनोरंजन करने के अतिरिक्त वे नैतिक शिक्षा भी प्रदान करते पारंपरिक मीडिया का जनता के साथ अच्छा तालमेल रहता है। पारंपरिक मीडिया सस्ता होता है तथा लोगों द्वारा अच्छी प्रकार से समझ में आने वाली भाषा या बोली का प्रयोग करता है। इसमें काफी लचीलापन भी होता है। ये अवसरों एवं जरूरतों के अनुसार परिवर्तित हो जाते हैं। ये सभी विशेषताएँ लोक मीडिया को संचार का प्रभावशाली माध्यम बनाते हैं।

शास्त्रीय कलाओं से भिन्न लोक रूप किसी शाही और संरक्षण पर आधारित नहीं होती लोक मीडिया की उत्पत्ति किसी ब्राह्मणवाद या भारतीय संस्कृति की किसी वैदिक धार से नहीं हई। अपितु वे प्राचीन भारतीय संस्कृति से जुड़े हुए है तथा सामान्य जनजीवन की अभिव्यक्ति करने वाले वैकल्पिक मीडिया के रूप में हमेशा बने रहेंगे।

भारत के संपूर्ण उथल–पथल से भरे राजनीतिक इतिहास में लोक कलाओं में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। लेकिन चिर–परीक्षित मूल्यों को संरक्षित करने तथा धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक वातावरण की भावनाओं और मनोभावों को उद्वेलित करने में लोगों का मीडिया होने की उनकी शक्ति निरंतर बनी रही। वास्तव में स्वतंत्रता संग्राम के तिलक और गांधी जैसे नेताओं ने आजादी के लिए व्यापक समर्थन जुटाने के लिए पारंपरिक मीडिया का प्रभावशाली उपयोग किया।

भारत में लोक या पारंपरिक मीडिया अपने स्वरूप एवं सामग्री में विभिन्न स्थानों पर परिवर्तित होता रहा है। फिर भी ऐसे मीडिया के कुछ तथ्य एक समान है। एक मुख्य विशेषता यह है कि ये अत्यंत लचीले होते हैं इनमें गानों और नृत्य, अभिनय, शारीरिक संकेत एवं भाव–भंगिमाएँ, कठपुतली, वेशभूषा आदि का मिश्रण होता है। संप्रेषण का साधन तथा व्यवहारिक स्वरूप विभिन्न संस्कृतियों के अनुरूप बदलता रहता है।

हम संचारण के पारंपरिक साधनों को तीन श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैंः

i) प्रयुक्त साधन

ii) सम्मिलित व्यक्ति

iii) सामाजिक संरचनाएँ

प्रयुक्त साधनों में निम्नलिखित प्रणालियाँ गिनी जा सकती हैंः

– कहानी सुनाना

– गाना (गायन)

– भाव–भंगिमाएँ

– नाटक

– स्वांग

– कठपुतली

– संकेत करने, संदेश देने तथा बातें करने के लिए ढोल

– नृत्य

– धार्मिक अनुष्ठान, उपासना, काल्पनिक या पुराण कथा

संचार प्रक्रिया में शामिल व्यक्तियों की विशेष भूमिकाएँ होती हैं। इसमें1 शामिल हैः

– विभिन्न विचारधाराओं के नेताओं के विचार

– वक्ता

– कहानी सुनाने वाला/कहने वाला

– सूत्रधार/उद्घोषक

– मुख्य व्यक्ति/नेता

– कवि

– चारण/भाट

पारंपरिक संचार में शामिल सामाजिक व्यवस्था में स्थान, संदर्भ या परिवेश हैं, जो संचार के लिए समाज या समूह को उपयुक्त माहौल प्रदान करते हैं। इनमें निम्नलिखित हैं:

– बाजार

– गलियाँ या गलियों के नुक्कड़

– कुएँ या स्नानघर के निकट के स्थान

– चौपाल या सभाएँ

– धार्मिक संस्थाएँ

– स्वैच्छिक समूह या सहकारिताएँ

– धार्मिक सभा, विवाह, अंतिम संस्कार, पौधे लगाना, फसल कटाई आदि

– आयोजन, त्यौहार, मेले।

मौखिक संस्कृतियों में संचार के अनेक धार्मिक और सांकेतिक रूप होते हैं। मौखिक संप्रेषण कबीला समुदायों में विचारों और मूल्यों को संप्रेषित करने का बहुत ही सशक्त रूप है। पारंपरिक मीडिया में अफ्रीकी अनुसंधानकर्त्ता ने इन्हें 'ओरा मीडिया' कहा है।

संचार के पारंपरिक मीडिया के अंतर्गत् अनेक लोक मीडिया रखे जा सकते हैं जिनकी प्रायः निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं:

– बिना किसी तकनीकी उपकरण के साधारण स्वरूप,

– मुफ्त या सामग्री के मूल्य के बिना भी उपलब्ध,

– जनता के विषयों से संबंधित,

– पारंपरिक तथा उत्पत्ति का पता नहीं,

– प्रस्तुतकर्त्ता तथा प्रयोगकर्त्ता में कोई अंतर नहीं,

– सीधे एक या अनेक अर्थों का संप्रेषण,

– भागीदारी, संवाद और परस्पर संपर्क एवं

– भागीदार तथा श्रोता एक समूह या इकाई होते हैं।

विभिन्न सभ्यताओं द्वारा उपयोग में लाई गई पारंपरिक मीडिया निम्नलिखित कार्य करता हैः

– सामाजिक और सामुदायिक मूल्यों का संप्रेषण करना,

– उपदेश और दीक्षा प्रदान करना,

– पारंपरिक मूल्य संप्रेषित करना,

– धार्मिक आस्था संरक्षित करना,

– वैधानिक नियम, आचरण के नियम प्रदान करना,

– कहानियाँ दृष्टांत और लोकोक्तियों संप्रेषित करना,

– सुरक्षा, कृषि कार्य जैसे सामान्य कार्यों के लिए लोगों को प्रेरित करना, एवं

– सामाजिक बंधन और संबंधों (घनिष्ठता) को सुरक्षित रखना।

लोक कला की उत्पत्ति मूल (नींव) से होती है। यह लोगों की अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप उनकी भागीदारी के अलावा स्वयं द्वारा रचित स्वतः

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

अभिव्यक्ति है। कछ समाजशास्त्रियों ने साधारण व्यक्तियों की लोक कला का अभिजात वर्ग की उच्च संस्कृति से अंतर स्पष्ट किया है। यह सिलबर्ट सेल्वड ने लोक संस्कृति की विशेषताओं को इस प्रकार बताया है।

– लोक कला और लोकप्रिय कला समझने में आसान होती है,

– वे रोमांचकारी, राष्ट्रभक्ति और पारंपरिक रूप से नैतिक होती हैं,

– ये महान कलाओं पर संदेह करने वाले लोगों के द्वारा बहुत स्नेह से रखी जाती है,

– लोकप्रिय कलाकार गंभीर या सतही, साधारण या निपुण हो सकते हैं,

– वे सार्वभौमिक या सीमित (स्थानीय) हो सकते हैं, एवं

– उनमें प्रत्येक के साथ संप्रेषण की शक्ति होती है।

पारंपरिक लोक मीडिया समुदायों में व्यैक्तिक और साधारण संबंधों के द्वारा संप्रेषण करता है। इस प्रक्रिया में शामिल लोगों की संख्या कम होती है क्योंकि व्यैक्तिक और आमने–सामने का घटक इसके लिए अनिवार्य है। संचार के पारंपरिक मीडिया में हम भाषा, संगीत और कला को शामिल कर सकते हैं।

भारत में पारंपरिक मीडिया या लोक सांस्कृतिक संचार मीडिया के कुछ प्रसिद्ध रूप इस प्रकार हैं – कहानी कहना, तमाशा, कथा, भावई, जात्रा, कीर्तन, पावड़ा, तर्ज, कविगान, नौटंकी, कथाकट, बूराकथा, गजल, कव्वाली, मुशायरा।

कहानी कहनाः यह विभिन्न प्रकार के लोक मीडिया में शायद सर्वाधिक व्यापक है। भारत में अनेक ग्रामीण समाजों में कहानी कहने की गहन परंपरा है। कहानी कहने वाला कहानी कहने में ऐतिहासिक भंगिमाएँ और तर्क वाली भाषा का प्रयोग करता है। दर्शक हँसने और शारीरिक संकेतों से प्रतिक्रिया करते हैं। कई बार

कहानी का वर्णन देर रात तक चलता रहता है। कहानी कहने वाले वेशभूषाओं और साजो–सामान का प्रयोग करते हैं। वे प्रायः वर्णन करने वाले चरित्र का उपहास करते हैं। कहानियाँ धार्मिक परंपराओं या स्थानीय पौराणिक कहानियों से मिलती–जुलती बनाई जाती है। प्रायः लोग गाँव के चौक या मैदानों में एकत्रित होते हैं।

तमाशाः तमाशा महाराष्ट्र में लोक नाट्य कला का सजीव रूप है। यह करीब चार सौ वर्ष पुराना है और पेशवाओं के समय से पूर्व से प्रचलित है। सौगंडया नामक विदूषक प्रमुख नायक है। वह मनोरंजक बाते करता है। तमाशा पुरुष और महिला दोनों कलाकारों द्वारा किया जाता है। तमाशा का पारंपरिक प्रयोग मनोरंजन और धार्मिक कथाओं के संप्रेषण के लिए किया जाता रहा है। लोगों के विचारों में परिवर्तन करने के द्वारा समकालीन, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन लाने के लिए भी इसका माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाता है। आजकल सरकार परिवार नियोजन जैसे विषयों को लोकप्रिय बनाने के लिए इसका प्रयोग करती है।

नौटंकीः उत्तरी भारत का लोक नाटक है, जो खुले मैदान में किया जाता है। इस लोक रूप का नाम रानी नौटंकी के नाम पर पड़ा है, जिसका प्रेमी उसके कक्ष में प्रवेश पाने के लिए छिप गया था। इसमें भी एक वर्णनकर्त्ता होता है, जिसे 'सूत्रधार' कहा जाता है। कुछ संगीत साज जैसे कैटलड्रम (मटका) और ढोलक का प्रयोग किया जाता है। संवादों को लोक धुनों में गाया जाता है।

जात्राः जात्रा जिसका शाब्दिक अर्थ है 'यात्रा' जो बंगाल और उड़ीसा में प्रसिद्ध लोक नाटक हैं। इसका नाम संभवतः अभिनय करने वालों के नाम पर पड़ा है, जो अभिनय के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं। अधिकांश कहानियाँ भगवान कृष्ण और राधा की होती हैं। जात्रा लोगों में भक्ति उपासना को लोकप्रिय बनाने में सहायता करती है। बाद में इसका प्रयोग शक्ति उपासना के लिए किया जाने लगा। स्वतंत्रता संग्राम में इसका प्रयोग आंदोलन को लोकप्रिय

बनाने के लिए किया गया। इसमें सामूहिक गान (जूरी), अभिनय और आलंकारिक प्रदर्शन शामिल होता है।

भवई: गुजरात का प्रमुख लोक नाटक है। एक विदूषक या मसखरा रांगलो नायक या सूत्रधार के साथ संवाद करता है। उनका परिहास, हरकतें तथा रांगलों की भाव–भंगिमाएँ दर्शकों को हँसाती हैं। वह भूतकाल को वर्तमान से जोड़ कर आधुनिक राजनीतिक और सामाजिक बुराइयों को इसमें शामिल कर लेता है। भावई में संवाद, स्वांग, कल्पना, कलाबाजी, जादू, नृत्य और गान का प्रयोग किया जाता है। विभिन्न शास्त्रीय और लोकप्रिय संगीत रूपों ने इस कला को सजीव माध्यम बनाए रखा है।

कीर्तन: इस लोक कला को भी हरि कथा या हरि कीर्तन कहा जाता है। यह एक प्रकार केंद्रीकृत, एकल नाटक है, जिसमें कोई योग्य कलाकार चरित्रों और क्रियाओं की श्रृंखला का अभिन्न करता है। विश्वास किया जाता है कि कोई 150 वर्ष पूर्व यह महाराष्ट्र से कर्नाटक और तमिलनाडु में फैला। भक्ति आंदोलन से जुड़े होने के कारण कबीर और तुकाराम ने धार्मिक विश्वास का उपदेश देने तथा सामाजिक और राजनीतिक सुधार लाने के लिए इसका प्रयोग किया। गुजरात में विभिन्न प्रकार के कीर्तनों का प्रयोग किया जाता है।

गाथा गीत: भारत में कहानियाँ सुनाने के अनेक विशिष्ट गाथा गीतों का प्रचलन है। कुछ नाम इस प्रकार हैं:

आल्हा (उत्तर प्रदेश), बूरा कथा (आंध्र प्रदेश), जुगनी और वाड (पंजाब), पोवडा या पवाड़ा (महाराष्ट्र) विलूपटु (तमिलनाडू), विल्लाडिक पट्टु (केरल)।

लोक संगीत: लोगों का एक और सशक्त मीडिया है। विद्वानों के अनुसार भारत में करीब 300 प्रकार की लोक संगीत शैली है। कुछ प्रसिद्ध हैं: बौल और भतियाली (पश्चिम बंगाल), दोहा और गर्बा (गुजरात), चैती और कजरी (उत्तर प्रदेश),

कोलकली पटू (केरल), बीटू (असम), भांड और पनिहारी (राजस्थान), रौक और चकरी (कश्मीर), सुआ और ददरिया (मध्य प्रदेश), मांडो और ढालो (गोवा), बोली (पूर्वी पंजाब) और लावनी (महाराष्ट्र)।

लोक कथाएँ और दंत कथाएँ: भारत की ग्रामीण जनता इन संचार रूपों की उनकी आर्थिक या शैक्षिक स्थिति के बिना भी बहुत प्रशंसा करती है। ये रूप इनका प्रयोग करने वाले समाज की संस्कृति और परंपरा के मूल में होते हैं। ये मीडिया मनोरंजन के साथ–साथ शिक्षा, तो प्रदान करते हैं साथ ही सामाजिक संबद्धता तथा सौहार्द्र को भी बनाए रखते हैं। ये धार्मिक और सामाजिक मूल्यों को संप्रेषित करते हैं और सामुदायिक सदस्यों में संबंधों को मजबूत बनाते हैं।

कठपुतली: कठपुतली एक मुख्य लोक कला है, जिसका प्रयोग पौराणिक और तेल कथाओं को जोड़ने के लिए किया जाता है। इसमें काफी परिवर्तन हुए हैं और आज की अनेक परिस्थितियों में शिक्षा, मनोरंजन तथा उपचार के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। कठपुतली अनुप्राणित आकृतियों की कला है, जो मनुष्य या पशु के क्रियाओं को प्रदर्शित करती है। कठपुतली की उत्पत्ति मनोरंजन के लिए न होकर उपासना प्रथा के रूप में हुई थी। इसकी बनावट एवं प्रस्तुतीकरण में व्यापक परिवर्तन के बावजूद यह कला निरंतर बनी हुई है। भारत में निम्नलिखित चार प्रकार की कठपुतलियाँ हैं: –

i) **सूत्रधारिका:** कठपुतलियाँ काले धागों से संचारित होती है। वेशभूषा स्थानीय संस्कृति के अनुरूप होती है। इस प्रकार की कठपुतलियाँ राजस्थान, उड़ीसा, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु में प्रचलित है।

ii) **छड़ी वाली कठपुतलियाँ:** इनकी वेशभूषा जात्रा की वेशभूषा की तरह होती हैं। ये आकार में बड़ी होती है तथा बांस पर बंधी होती है, जिसे कठपुतली वाले की कलाई से बांधा जाता है। यह रूप पश्चिम बंगाल में काफी प्रचलित है।

iii) **छाया कठपुतलियाँ:** ये चमड़े से बनी हुई समतल आकृतियाँ होती हैं, जिन्हें वनस्पति के रंगों से रंगा जाता है। इन पर पीछे से रोशनी डाली जाती है, जिससे छाया पारदर्शी कपड़े के पर्दे पर प्रकट होती हैं। यह रूप आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और उड़ीसा में बहुत प्रचलित है।

iv) **हस्त कठपुतलियाँ:** इन्हें दस्ती कठपुतलियाँ भी कहा जाता है। कठपुतली वाला इन्हें इनका संचालन तथा क्रियाशीलता हाथ से करता है। इस प्रकार की कठपुतलियाँ उड़ीसा, केरल और तमिलनाडु में प्रचलित है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) लोक मीडिया के कुछ कार्यों का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) भारत में पाँच प्रकार के प्रसिद्ध पारंपरिक मीडिया के नाम बताइए।

....

....

....

....

....

....

3) कठपुतली कला क्या है? भारत में विभिन्न प्रकार की प्रचलित कठपुतलियाँ कौन–कौन सी हैं?

....

....

....

....

....

....

2.4 संचार का इतिहास

संचार कलाओं का अस्तित्व संभवतः मानव जाति के उदय काल से ही है क्योंकि विचारों, और अनुभवों के आदान–प्रदान के अभाव में जीवन का अस्तित्व नहीं हो सकता। हो सकता है संचार का आरंभिक रूप आवाज हो। एक दूरी तक अपने

अनुभव और सूचना संप्रेषण के लिए चिल्लाने का प्रयोग किया जाता था। उस समय अधिकांश सूचनाएँ मौखिक रूप से संप्रेषित की जाती थीं। आने वाली पीढ़ी को कहानियाँ और गाने मौखिक रूप से ही सिखाए जाते थे। जब अत्यधिक व्यापक क्षेत्र में फैले लोगों पर शासन करने तथा राजनीतिक रूप से नियंत्रण करने में मौखिक संप्रेषण अपर्याप्त रहने पर ही लिखित रूप का विकास' हुआ होगा।

2.4.1 आरंभिक विकास

लिखित संप्रेषण के प्राचीनतम रिकार्ड का समय देखने पर हमें दक्षिण यूरोप में लास्कोक्स और आल्टीमीरा की गुफाओं में चित्रकारियाँ मिलती हैं। विश्वास किया जाता है कि करीब 35,000 वर्ष पूर्व अज्ञात कलाकारों ने गवल, लगाम वाले हिरण, जंगली अश्व यहाँ तक कि अज्ञात पशुओं और शिकारी व्यक्तियों के अद्भुत भित्ति चित्र बनाए हुए हैं।

ये चित्रकारियाँ शिकार से संबंधित हैं। संभवतः ये प्रतीकात्मक चित्रकारियाँ उन घटनाओं को अच्छी तरह याद रखने तथा आने वाली पीढ़ी की जानकारी के लिए सहायता प्रदान करती थी। इनसे याद्दाश्त में वृद्धि होती थी। समय के अंतराल में इन प्रतीकात्मक प्रदर्शनों में मानक रूपों का प्रवेश होने लगा।

पृथ्वी पर ऐसे अनेक चित्र बर्तनों, टोकरियों, छड़ियों, वस्त्रों, दीवारों, पशुओं की खचाओं (खालों), छाल, पत्थरों और यहाँ तक की पत्तियों पर भी देखने को मिलते हैं। इनमें संकेतों और चिह्नों के साथ चित्रकला और कलात्मक भाव भी होता है। प्राचीन लोग अनेक प्रकार के साधन, जैसे : गोदना, दागना, आभूषण, मुकुट, वस्त्रों आदि का प्रयोग अपने स्तर, हैसियत, शक्ति, संपन्नता, उपलब्धि, व्यवसाय और पारिवारिक सदस्यता दर्शाने के लिए करते थे।

2.4.2 लिखित रूप

साहित्य का मौखिक रूप से लिखित रूप अपनाने में अत्यधिक समय लगा होगा। कुछ मानव वैज्ञानिकों के अनुसार हमारे पूर्वजों ने संप्रेषण के लिए भाषा का आरंभिक ज्ञान कोई – 3,00,000 वर्ष पूर्व आरंभ किया होगा। लेकिन मात्र करीब 4000 वर्ष ई. पू. ही विचारों के संप्रेषण में कोई एकरूपता प्रचलित हुई। विचारों को कुछ लेखा चित्र प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाने लगा। चूँकि विचारों की अभिव्यक्ति के लिए लेखाचित्रों का प्रयोग होने लगा था। इसलिए इन्हें चित्रलेखीय लिखाई कहा जाने लगा क्योंकि वस्तु चित्र विचारों का प्रदर्शन करते थे इसलिए ऐसे चरित्रों को ऑडियोग्राम (भाव चित्र) तथा लिखावट को ऑडियोग्राफिक (भाव लिपि) कहा जाने लगा। ज्ञात प्राचीन भावलिपि पद्धति मिस्रवासियों, चीनियों (मायस) लोगों से संबंधित है। भाव लिपियों के साथ एक कठिनाई यह थी कि विभिन्न शब्दों का प्रतिनिधित्व करने के लिए सैकड़ों या हजारो भाव चित्रों को जानने की आवश्यकता पड़ती थी। इसलिए एक सरल पद्धति का विकास हुआ, जिसका सबंध विचारों के भाव प्रतीकों से न होकर ध्वनि के साथ था। इस प्रकार फोनोग्राम (ध्वनि चित्र) का प्रचलन हुआ। फोनोग्राम रेखा प्रतीक या चिह्न है, जो किसी भाषा विशेष के बोलने वालों के बीच परंपरा या किसी नियम के द्वारा विशिष्ट ध्वनियों से जुड़े होते हैं। अक्षर फोनोग्राम के उदाहरण हैं।

विश्वास किया जाता है कि लेखन की हमारी ध्वनि प्रणाली प्राचीन सुमेरियाई कला लेखन से उत्पन्न हुई। सुमेरियाई लोग किसी ध्वनि के लिए निर्धारित किसी विशेष स्वरूप को विचार पर आरोपित करते थे। समय के साथ विचारों में सुधार हुआ था तथा वे सरल बनाए गए। इसके बाद लेखन विकास की गतिविधियाँ मिस्र और यूनानी सभ्यताओं में देखी जा सकती हैं। लेखन के लिए प्रयुक्त सामान्य साधन थे पत्थर, पटेरा, तथा नील नदी के किनारे उगने वाले वृक्षों की छाल। पटेरा लेखन के लिए बहुत विकसित साधन थे क्योंकि इसे समतल किया जा सकता था, एक साथ सिलाई की जा सकती थी तथा गोलाई में मोड़ा जा सकता था। लेखन के

दूसरी प्रसिद्ध सामग्री चर्म पत्र (तैयार की गई भेड़ की खाल) स्थायी, जो बछड़े की खाल से तैयार की जाती थी। इस पर लिखित अक्षर पटेरा से अधिक समय तक सुरक्षित रहते थे।

रोमनवासियों ने अक्षरों में सुधार कर लेखन कला का शोधन किया तथा लेखन के लिए अधिक स्थाई सामग्री प्रदान की। रोमन स्मारकों में व्यापक रूप से प्रयुक्त बड़े अक्षर अंग्रेजी भाषा के बड़े अक्षर हैं उनके छोटे आकार के छोटे अक्षर रूप हैं, जिनका आठवीं शताब्दी में काले मेंगने के प्रभाव में केरोलिंगमन लिपि में सुधार किया गया, जो आज के अंग्रेजी भाषा के छोटे अक्षर हैं। अंग्रेजी में प्रयोग किए जाने वाले अक्षर इन्हीं में से लिए गए हैं, इसलिए इनको रोमन लिपि के नाम से जाना जाता है।

जब रोम पर निरंतर आक्रमण हुए तो मठों में साधुओं ने भाषा और लिखित सामग्री को हाथ से ढक कर कठोर बनाया तथा संरक्षित किया। इस प्रकार शब्द मैनु स्क्रिप्ट (पांडुलिपि) प्रयोग में आई। मठ विशेष स्थान बन गए जहाँ पुस्तकालयों का विकास हुआ और पुस्तकों को सुरक्षित रखा गया।

2.4.3 मुद्रण / छपाई

मुद्रण का आविष्कार कागज निर्माण के बाद आरंभ हुआ। विश्वास किया जाता है कि 105 ई.पू. तक चीनी मंत्री तसई लूम ने पहली बार कागज का आविष्कार किया। अरबवासियों के पास 751 में कागज था लेकिन यह यूरोप में लगभग 1100 ई. में मूर्स के माध्यम से स्पेन होकर पहुँचा। कागज का इतना व्यापक प्रयोग हुआ कि 100 वर्षों में ही यूरोप के अनेक भागों में कागज का निर्माण होने लगा।

चीन में पहली बार 846 ई.पू. मुद्रण का आविष्कार हुआ। चीनवासियों ने मुद्रण के लिए लकड़ी की प्लेटों का इस्तेमाल किया। सजावट एवं आभूषणों में मुद्रण प्रणाली का प्रयोग पहले से ही 200 ई. पू. विद्यमान था। लेकिन एक जर्मन

स्वर्णकार गुटनबर्ग ने मैंज में पहली बार लगभग 1450 में सचल टाइपों (अक्षरों) का प्रयोग कर आधुनिक मुद्रण का आविष्कार किया। उसके द्वारा मुद्रित पहली पुस्तक बाईबल का एक भाग था। इस पुस्तक को गुटनबर्ग की बाईबल कहा जाता है।

14वीं शताब्दी की समाप्ति तक मुद्रण विश्व के विभिन्न भागों में फैल चुका था। विलियम कैक्सटोन ने जर्मनी में मुद्रण कला लिखी और उसने 1476 में इंग्लैंड में अपना मुद्रणालय (प्रिटिंग प्रेस) स्थापित किया। अमेरिका में पहली प्रिटिंग प्रेस जॉन पाबलों द्वारा 1539 में मैक्सिको शहर में लगाई गई। भारत में पहली प्रिटिंग प्रेस 1556 में पुर्तगाली जेसुट्स द्वारा गोवा में स्थापित की गई। सबसे पहली प्रिटिंग प्रेस ईसाई पादरियों द्वारा लगाई गई। गोवा में पहली प्रिटिंग प्रेस की स्थापना के बाद 250 वर्षों में संपूर्ण भारत में मुद्रण का प्रसार हो गया। इसके अतिरिक्त पुर्तगाल, ब्रिटेन, स्पेन तथा दानिस वासियों ने मुद्रण तकनीक के प्रसार में योगदान दिया।

भारत में मुद्रण के आगमन से अनेक भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति में सहायता मिली। भाषाएँ अपनी लिपि में लिखी जाने लगी तथा शब्दावली और व्याकरण का विकास हुआ। पहले से मुद्रित अनेक पुस्तकों के अनुवाद किए गए।

गुटनबर्ग के आविष्कार से विश्व में वास्तविक रूप से परिवर्तन हुआ। पूरे विश्व में मुद्रण के विस्तार से भाषाओं की उत्पत्ति हुई और विकास हुआ तथा स्कूलों और शैक्षिक कार्यों की आवश्यकता बढ़ गई। विज्ञान, मनोविज्ञान तथा धर्म में हुए विकास जनता तक पहुंचने लगे। संक्षेप में कहा जाए तो मुद्रण ने ज्ञान को संरक्षित रखने तथा विस्तार में बहुत सहायता प्रदान की। मुद्रण तकनीकों में विकास तथा वृद्धि, कागज की उपलब्धता तथा पढ़ने की चाह ने प्रेसों को बहुत बढ़ावा दिया।

2.4.4 पुस्तकें और समाचार पत्र

आज बिना पुस्तकों के जीवन के बारे में सोचना असंभव है। पुस्तकों के मुद्रण और उनके फैलाव से ज्ञान की वृद्धि और संरक्षण में प्रोत्साहन मिलता है। पुस्तकों के छपने से विचारों का विस्तार सरल हो गया तथा सामाजिक बाधाओं को तोड़ने में सहायता मिली। इसने नए सामाजिक संबंधों की स्थापना का मार्ग खोल दिया, क्रांतियों के होने में सहायता प्रदान की तथा वैज्ञानिक विकास ने खोजों को बढ़ावा दिया। यद्यपि पुस्तकों के अनेक कार्य अन्य माध्यमों से भी किए जाते हैं तो भी पुस्तक निर्माण निरंतर एक समृद्ध उद्योग बना हुआ है। जब तक मानव सभ्यता का अस्तित्व रहेगा, पुस्तकें कभी समाप्त नहीं होंगी।

समाचार पत्र जनता का सबसे पुराना माध्यम था। यह अधिकांश जनता तक पहले तथा सबसे शीघ्र पहुँचने वाला संचार का एक प्रकार था। पहला समाचार पत्र 1609 में जर्मनी में प्रकाशित हुआ। एक दशक के अंदर ही बेल्जियम, नीदरलैंड तथा ब्रिटेन से भी समाचार पत्र छपने लगे। रेडियो और टेलीविजन के आने तक समाचार पत्र शीघ्रतम सार्वजनिक माध्यम बना रहा। गति के संदर्भ में रेडियो और टेलीविजन ने समाचार पत्र को पीछे छोड़ दिया लेकिन समाचारों और घटनाओं के गहन विश्लेषण में समाचार पत्र ही पाठकों का उद्देश्य पूरा करता है।

भारत में प्रथम समाचार पत्र 1780 में जेम्स ओगस्तस हीके द्वारा आरंभ किया गया। इसे बंगाल गजट कहा गया। हीके को गिरफ्तार कर जेल में डाला गया तथा प्रेस की आजादी का निडर अगुवा होने और अंग्रेजी शासकों की भ्रष्ट परंपराओं का खुलासा करने के कारण उसे वापस ब्रिटेन भेज दिया गया। हीके का समाचार पत्र बंद होने के छह साल के अंदर मद्रास (मद्रास कूरियर) और बंबई (द बाम्बे हेराल्ड) नामक कई समाचार पत्र आरंभ हुए। भारतीय भाषा पत्रकारिता के संस्थापक शेरामपोर के पादरी थे। समाचार दर्पण प्रथम भारतीय भाषा की पत्रिका थी। तब से अंग्रेजी भाषा और स्वदेशी भाषा प्रेस धीरे–धीरे बढ़ती गई। भारत में प्रेस ने आजादी के संघर्ष में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता

आंदोलन के कुछ नेता तिलक, गांधी आदि संपादक और लेखक भी थे। भारत में प्रेस को काफी आजादी है। आंतरिक आपात काल के दौरान कुछ अवधि को छोड़ कर यह भारत में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को शक्तिशाली बनाने का साधन भी प्रेस है।

2.4.5 सिनेमा

सिनेमा या चलचित्रों का इतिहास जैसा कि हम जानते हैं करीब एक शताब्दी पुराना है। चलचित्र स्थिर चित्रों की एक श्रृंखला होती है, जिसे पर्दे पर इतनी तेजी से प्रदर्शित किया जाता है कि देखने वालों को गति का अनुभव होता है। वास्तव में सिनेमा शब्द यूनानी शब्द 'किनेमा' से आया है, जिसका अर्थ, गति होता है। सिनेमा के विकास के तीन चरण हैं:

1) चित्रों को रिकार्ड करना

2) आवाज आना

3) रंगीन होना

जैसा कि हम जानते हैं कि सिनेमा के आविष्कार के पहले कई विकास हो चुके थे। पहला प्रयास था फोटोग्राफी का आविष्कार जो उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में हुआ। जॉर्ज ईस्टमैन, 1884 तथा एडिसन और डिक्सन ऐसे पथप्रदर्शक थे, जिनके कार्यों ने फ्रांस के लियोन शहर में लूमियर भाइयों द्वारा किए गए सिनेमा के आविष्कार में बहुत मदद की। लूमियर भाइयों ने 1895 में पहली फिल्म का निर्माण किया। इन्होंने 35 मिनी फिल्म सामग्री का प्रयोग किया। यह मूक फिल्म थी, जिसमें संगीत उपकरणों या व्यक्तियों द्वारा मौखिक संवाद संप्रेषित किया गया। चित्र के साथ आवाज वाली फिल्मों के आविष्कार से बोलने वाली फिल्में बन गई। 1920 के दशक तक फिल्मों में साउंड ट्रैक बन गए थे।

अनेक आरंभिक फिल्मों की अवधि केवल एक या दो मिनट की होती थी। बाद में विचारों और कहानियों के साथ लम्बी अवधि की फिल्में बनी, जिन्होंने लोगों में रुचि पैदा की। ये फिल्में काफी हाऊस और सैलूनों से निकल कर सुसज्जित सिनेमाघरों में पहुंच गई। फिल्मोद्योग संपन्न और बड़ा व्यवसाय बन गया।

भारत में सिनेमा 1896 में बंबई में लूमियर भाइयों की एक प्रदर्शनी से आरंभ हुआ एच.एस. भटवाडेकर जिन्होंने प्रदर्शनी देखी थी प्रथम भारतीय न्यूजरील रिटर्न ऑफ रैंग्लर पराजेपे बनाई। बंबई के एक मुद्रक दादा साहब फाल्के ने अपनी प्रथम फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' 1913 में बनाई। फाल्के ने सौ अन्य फिल्में भी बनाई।

सिनेमा जन संचार का एक माध्यम है, जिसका भारत में काफी प्रभाव है। भारत बड़े फिल्म निर्माताओं में से एक है। फिल्में मुख्य रूप से भारत में मनोरंजन का साधन रही हैं लेकिन इन्होंने जन समूह को शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के संदेश प्रदान करने की भी भूमिका निभाई है। डाक्यूमेंट्री फिल्में भी विभिन्न राष्ट्रीय विषयों के बारे में सूचनाएं प्रदान करती थी। फिल्में अपने गुणों के कारण विभिन्न तत्त्वों जैसे चित्र, आवाज, गति और नाटक का संयोजन करके प्रभाव उत्पन्न करती है और परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम बन गई है। भारत में फिल्मी माध्यम ने सांस्कृतिक बाधाओं को तोड़ दिया है क्योंकि दृश्य का सार्वभौमिक प्रभाव पड़ता है।

2.4.6 प्रसारण और रेडियो

प्रसारण अत्यधिक दूरी तक आवाज और तस्वीर के संप्रेषण को संभव बनाता है। टेलीग्राफ और टेलीफोन महत्त्वपूर्ण आविष्कार थे, जिनसे संचार तकनीक में बाद के विकासों को और सरल बना दिया। सैमुअल मॉर्स ने 1835 में विद्युत के प्रयोग से कूट संदेश संप्रेषित करने के लिए टेलीग्राफ का आविष्कार किया। एक जर्मन वैज्ञानिक हेनरिच हर्टज ने रेडियो तंरगों की उपस्थिति का प्रदर्शन किया। 1897 में गुग्लील्मो मारकोनी ने 22 वर्ष की आयु में अत्यधिक दूरी तक प्रथम बेतार संदेश

प्रेषित किया। इस प्रकार रेडियो का जन्म हुआ। यह अत्यधिक दूरी तक संदेश प्रेषण का सशक्त माध्यम बन गया।

दो दशकों के अंदर रेडियो ने प्रायोगिक अवस्था पार कर ली और जन संचार का महत्त्वपूर्ण साधन बन गया। रेडियो मनोरंजन और सूचना का सशक्त माध्यम बन गया। इससे विचारों के प्रसारण में सहायता मिली। युद्ध के दौरान महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा औपनिवेशिक शक्तियों को समुद्र में जहाज के सार्थक संपर्क बनाने में समर्थ बना दिया। राजनैतिक नेताओं ने राष्ट्रों को संदेश देने के लिए रेडियो का प्रयोग किया।

2.4.7 टेलीविजन

दूसरे विश्व युद्ध के तुरंत बाद रेडियो का शक्तिशाली माध्यम — टेलीविजन द्वारा पीछे छोड़ दिया गया। टेलीविजन प्रसारण के प्रयोग 1920 के दशक के आरंभ में शुरू हो गए थे। पिक्चर ट्यूब, विद्युत कैमरा तथा टी वी पर ग्रहणकर्त्ता सहित अनुसंधानों की श्रृंखला अगले दशक में जाती थी। एन बी सी तथा बी बी सी ने क्रमशः न्यूयार्क तथा लंदन में अपने टेलीविजन केंद्र स्थापित कर लिए थे। दूसरे विश्वयुद्ध ने टेलीविजन की उत्पत्ति को बाधित कर दिया था। 1960 के दशक तक रंगीन टेलीविजन का प्रचलन हो गया था।

1962 में प्रथम संचार उपग्रह अर्ली बोर्ड के छोड़े जाने से उपग्रह संचार क्षेत्र आरंभ हो गया। उपग्रह ने भूमि स्थित केंद्र से अंतरिक्ष में स्थित उपग्रह से तथा पुनः पृथ्वी पर संपर्क करने के लिए सिगनलों को ऊपर भेजना तथा फिर नीचे प्राप्त करना संभव बना दिया। अप लिंक करना एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा भूमि स्थित केंद्र से सिगनल भौगोलिक स्थिर संचार उपग्रहों को भेजे जाते हैं। इन सिगनलों को डाउन लिंक कर केबलों या डिश एंटीना के माध्यम से घर स्थित टेलीविजन द्वारा ग्रहण किया जा सकता है।

टेलीविजन प्रसारण की सीमाओं ने केबल टेलीविजन के आविष्कार को जन्म दिया। केबल टी वी केंद्र से प्राप्त कार्यक्रमों को वायुमंडल के माध्यम की अपेक्षा तार के द्वारा वितरण करने की प्रक्रिया थी। यह एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें नियंत्रक या डिश एंटीना इलेक्ट्रॉनी सिगनलों को प्राप्त करता है तथा केबल के माध्यम से अनेक घरों को प्रेषित करता है। उपग्रह संचार प्रणाली ने आज विश्व को एक वैश्विक गाँव में परिवर्तित कर दिया है। आज हमारे पास विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों सहित अनेक राष्ट्रीय और क्षेत्रीय चैनल मौजूद हैं। हमारे घरों में सीधे ही (डी.टी.एच.) टेलीविजन, बहुमाध्यम तथा घरेलू सिनेमा, डी वी डी और वी सी डी इत्यादि की पहुँच के कारण तथा मीडिया के इस प्रयोग से लोगों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ, जिसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

भारत में टेलीविजन 1959 में आरंभ में हुआ। फिर भी भारत में टेलीविजन सेटों का उत्पादन 70 के दशक में ही आरंभ हो सका। 1976 में रेडियो और टेलीविजन एक ही इकाई के अंतर्गत् संचालित होते थे, जिनमें विभाजन किया गया और अलग से दूरदर्शन की स्थापना हुई।

1967 में भारत में टेलीविजन को उपग्रह शिक्षा टेलीविजन प्रयोग (एस.आई टी. ई.) कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षा के लिए सार्वजनिक माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाने लगा था।

टेलीविजन, भारत में परिवर्तन के लिए, राष्ट्रीय निष्ठा संवर्धन के लिए, लोगों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति बढ़ाने के लिए, परिवार नियोजन एवं जनसंख्या नियंत्रण में प्रगति के लिए, कृषि विकास के लिए, ग्रामीण विकास के लिए, खेलों और क्रीड़ा जगत को बढ़ावा देने के लिए, महिला और बाल कल्याण को बढ़ावा देने के लिए, राष्ट्रीय भावना पैदा करने के लिए तथा देश को कलात्मक और सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा देने के लिए, प्रेरक के रूप में प्रयोग किया जाता है।

टेलीविजन के अनियंत्रित प्रयोग में कुछ जोखिम भी देखे गए हैं। विकासशील देशों में अधिकांश टेलीविजन कार्यक्रम पश्चिम विशष कर अमेरिका से आयात किए जाते हैं।

अनुमान है कि 1970 के दशक में अमेरिका से प्रतिवर्ष 150,000 घंटे के टेलीविजन कार्यक्रमों का निर्यात किया गया। 1983 में 69 देशों में किए गए एक अध्ययन से पता चला कि उन्होंने एक तिहाई या इससे अधिक कार्यक्रमों को अन्य देशों से आयात किया अफ्रीका में 40 से 60 प्रतिशत तक टेलीविजन कार्यक्रम आयात किए जाते हैं। संस्कार विश्व दृष्टि और सामाजिक मूल्यों के साथ जुड़े हुए गंभीर परिणामों के कारण यह पता अनुचित है। टेलीविजन स्वदेशी संस्कृतियों की वृद्धि को क्षति पहुँचा कर सार्वभौमिक संस्कृति का मुख्य एजेंट बन गया है।

टेलीविजन एक व्यसनकारी माध्यम भी है, जो लोगों को स्वापक भी बना सकता है। शिक्षकों ने बताया कि टेलीविजन देखने से शिक्षा प्रक्रिया में बाधा आती है। टेलीविजन अन्य सामाजिक गतिविधियों को भी प्रभावित करता है जैसे अवकाश और मनोरंजन, खेल संगीत, मनोरंजन, धर्म आदि। टेलीविजन कार्यक्रमों से चित्रित हिंसा और समाज में वास्तविक हिंसा का परस्पर संबंध होने का अनेक सामाजिक वैज्ञानिकों और संचार विशेषज्ञों द्वारा अध्ययन किया गया है।

2.4.8 इंटरनेट

टेलीफोन की सहायता से दूर स्थित रखे दो कम्प्यूटरों को जोड़ा जा सकता है तथा डाटा शीघ्रता से स्थानांतरित किया जा सकता है। इस प्रकार डाटा स्थानांतरण प्रक्रिया को इलेक्ट्रॉनिक मेल (ई–मेल) कहा जाता है। यह इंटरनेट का आधार है। इंटरनेट एक सार्वभौमिक प्रणाली है, जिसके द्वारा डाटा स्थानांतरण के लिए, एक कम्प्यूटर को दूसरे कम्प्यूटर से जोड़ा जा सकता हैं। इस प्रणाली को मोडमो के माध्यमों से कम्प्यूटरों को जोड कर विश्व संबद्धता को प्राप्त करने के लिए संपूर्ण बनाया गया है। इस प्रणाली में एक कम्प्यूटर से दूर स्थित कम्प्यूटर

से शीघ्र सूचना स्थानांतरण को सरल बना दिया है। इस क्षेत्र में और अधिक विकासों ने वेब साइटों की उत्पत्ति को जन्म दिया। वेब साइट के माध्यम से डाटा प्राप्त किया जा सकता है। आज विभिन्न वेबसाइटों पर पर्याप्त मात्रा में सूचना और डाटा उपलब्ध हैं और कम्प्यूटर के की–बोर्ड पर कुछ स्ट्रोक लगाकर कोई भी उन्हें आसानी से प्राप्त कर सकता है। भारत में इंटरनेट की उपलब्धि पहली बार 1995 में विदेश संचार निगम लिमिटेड (वी.एस.एन.एल.) द्वारा प्रदान की गई। ब्राड बैंड कन्केटिविटी के कारण साइबर कैफ कुकरमुत्ते की तरह उग गए हैं तथा संचार के इन प्रचलित माध्यमों से प्रत्येक व्यक्ति सम्पर्क साधने में सफल हो गया है।

2.4.9 संचार के क्षेत्र में आगामी विकास

संचार के अनेक मीडिया में आज संचार क्रांति पर सबसे अधिक प्रभाव डालने वाला माध्यम है टेलीफोन, जो केवल उस पार आवाज संप्रेषण का माध्यम रहा है। अब संचार का मुख्य उपकरण बन गया है, जिसने कम्प्यूटर और फैक्स मशीनों को भी जोड़ दिया है। संचार क्षेत्र में होने वाली एक बड़ी क्रांति है सैल्यूलर फोन। सैल्यूलर फोन की उत्पत्ति के बाद वर्तमान में अनेक विकसित अनुसंधान और प्रयोग किए जा रहे हैं ताकि संचार प्रक्रिया में सुधार के लिए एक श्रेष्ठ सैल्यूलर फोन का इस्तेमाल किया जा सके।

दृश्य तकनीक के आगमन से चित्रों को स्कैनिंग और दृश्य संप्रेषण ने मुद्रण उद्योग के संचालन में भी बहुत सहायता प्रदान की है।

अब ऑडियो और वीडियो कैसेट का स्थान कम्पैक्ट डिस्क (सी डी) ने ले लिया है, जिसमें आवाज लिखित सामग्री और चित्र भी होते हैं। इसी प्रकार वीडियो कम्पैक्ट डिस्क (वी सी डी) और वीडियो कम्पैक्ट डिस्क प्लेयर, वीडियो कैसेट रिकार्डर तथा वीडियो कैसेट प्लेयर का स्थान ले रहे हैं।

संचार प्रक्रिया को गति प्रदान करने के लिए सूचना तकनीक में नए मार्ग आ रहे हैं, हम मीडिया के विभिन्न रूपों के परस्पर संबंधों के बारे में अधिक सचेत भी हो रहे हैं। उदाहरण के लिए, ऑफ प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बीच किसी भेद के बारे में कहना कठिन है। ये दोनों अलग–अलग तत्त्व नहीं है क्योंकि प्रिंटिंग स्वयं अनेक इलेक्ट्रॉनिक आविष्कारों से बहुत अधिक प्रभावित हैं। टेलीफोन, टेलीविजन, संचार उपग्रह, कम्प्यूटर और अन्य तकनीकी विकासों को नए संदर्भो में संपूर्ण बनाया गया है ताकि वे क्रांतिकारी संचार में सूचना का श्रेष्ठतम मार्ग प्रदान कर सके।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) आधुनिक प्रिंटिंग का आविष्कार किसने किया? वर्णन करें कि प्रिंटिंग ने संचार विकास में कैसे सहायता की।

....

....

....

....

....

....

2) भारतीय संदर्भ में टेलीविजन के कुछ लाभ बताइए। टेलीविजन से जुड़े कोई दो जोखिमों का वर्णन कीजिए। .

....

....

....

....

....

....

3) इंटरनेट क्या है? यह संचार प्रक्रिया में कैसे सहायता करता है?

....

....

....

....

....

....

2.5 साधन / माध्यम का चयन

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

संचार के विभिन्न मीडिया चाहे पारंपरिक हों या आधुनिक, उनकी अपनी विशेषताएँ, लाभ और हानियाँ हैं। उनकी प्रभावशीलता अनेक तथ्यों पर निर्भर करती हैं। उनके तुलनात्मक लाम और हानियाँ हमें उनकी स्थिति के बारे में बताते हैं।

किसी संदेश विशेष को संप्रेषित करने के लिए विशेष तौर पर जनता के लिए संचार माध्यम का चयन बड़ी सावधानी से करना चाहिए। इसमें संदेश, माध्यम की उपलब्धता तथा जनता या ग्रहण करने वालों की विशेषताओं जैसे तथ्यों पर विचार करना चाहिए। संचार को प्रभावशाली बनाने के लिए भागीदारी तथा फीडबैक अनिवार्य है।

कुछ संदेशों, विचारों, सामाजिक विचारधाराओं को संप्रेषित करने के लिए किसी भी व्यक्ति को मनमाने ढंग से किसी भी माध्यम का चयन नहीं करना चाहिए। माध्यम का चयन सावधानीपूर्वक तथा उद्देश्य, लक्ष्य और सार्थकता, जनता की विशेषताएँ, उनकी पृष्ठभूमि. शिक्षा का स्तर, आर्थिक और सामाजिक स्थिति, आयु, शिक्षा, माध्यम के बारे में जानकारी आदि के साथ ताल–मेल का ध्यान करके किया जाना चाहिए।

निम्नलिखित सूची विभिन्न प्रकार के मीडिया के संभावित लाभ और हानियाँ प्रस्तुत करती हैं। चूँकि हमने पारंपरिक मीडिया के बारे में विस्तृत चर्चा की है इसलिए इस भाग में उन्हें शामिल नहीं किया गया है।

माध्यम	लाभ
प्रिंट मीडिया	किफायती सामान, कागज, स्याही, शीघ्र एवं सरल उत्पादन प्रक्रिया, एक व्यक्ति संपूर्ण कार्य कर सकता है। विषय तक पहुँचने के कई तरीके, संदर्भ संभावनाएँ व्यापक, सीमित वितरण, दीर्घकाल रहने वाला – संदर्भ के लिए हमेशा उपलब्ध रहने वाला।

पत्रिका	नैसर्गिक, उद्देश्य प्रधान, प्रायः जनता को प्रभावित करने वाली आकर्षक रंग एवं तस्वीरों का प्रयोग, शानदार, चिकनी, रखी जाने की संभावना, एक दूसरे को दी जाने वाली जिससे अधिक व्यक्ति पढ़ते हैं।
समाचार पत्र	क्षेत्रीय रूप से केंद्रीयकृत, अपेक्षाकृत सस्ते जो सभी वर्गों के लिए उपयुक्त, अल्पकालीन अवधि वाले, अधिक नवीनतम (दैनिक, साप्ताहिक) सामग्री पर चर्चा और भागीदारी, विश्वसनीय एवं प्रभावी माने जाते हैं।
पर्चे एवं विवरणिकाएँ	विशिष्ट जनता को भेजे जा सकते हैं। संदेश विस्तृत रूप से किया जा सकता है। भावी संदर्भों के लिए उपलब्ध रहते हैं। अनेक आकार/स्वरूप और रंगों में उपलब्ध होने की संभावनाएँ, आकर्षक प्रस्तुतीकरण और विवेकपूर्ण वितरण।
प्रत्यक्ष पत्र	कुछ खास लोगों के लिए उपयुक्त, संदेश व्यक्तिगत हो सकता है। पाठक द्वारा कार्रवाई करने के लिए उपाय बताना आसान, अन्य विज्ञापनकर्त्ताओं से कोई प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा नहीं।
माध्यम	**हानियाँ**
प्रिंट मीडिया	स्थिर, एक जैसा, नकारात्मक संबंधों के लिए जाना जा सकता है, अव्यैक्तिक स्वरूप, धारदार बनाना मुश्किल, खर्चीला और कठिन वितरण, प्रयोग के बाद रद्दी हो सकता है।
पत्रिका	अंतिम तिथि काफी आगे हो सकती है इस प्रकार समय उपयुक्त नहीं होता। हो सकता है, बाजार स्थानीय न हो, वितरण मंहगा तथा कठिन।
समाचार पत्र	संदेश का जीवन अल्प, सामग्री को सही समय पर हासिल करना अत्यंत महंगा, प्रायः संदेश संवेदनशील होते हैं।

पर्चे एवं विवरणिकाएँ	उत्पादन तिथि से काफी विलम्ब से मुद्रण तथा उत्पादन महंगा, प्रभावशीलता को मापना कठिन।
प्रत्यक्ष पत्र	अधिकांश पत्र रद्दी होने के रूप में अप्रचलित, पत्रों की सूची को अद्यतन करना और संभालना बहुत कठिन कार्य, खर्चीला तथा समय की अधिक खपत, डाक द्वारा भेजना खर्चीला परिणाम जानना कठिन।
माध्यम	**लाभ**
टेलीविजन प्रसारणः	उच्च गुणवत्ता वाला साधन हमेशा अत्यधिक दर्शक, विश्वसनीय और प्रभावी, अत्यधिक संपन्न दृश्य संभावना, लोगों और उनके घरों तक आंतरिक पहुँच, सृजनात्मक, कलात्मक और संप्रेषण संभावनाएँ हैं।
दृश्य टेपः	प्रयोग करना और जानना आसान, नवीन उत्साही माध्यम, प्रसारण की तुलना में किफायती, उत्पादन के लिए समूह या दलों की भागीदारी, सुवाह्य उपकरण, बार–बार प्रयोग करने वाला टेप, सस्ती, पीछे भी तुरंत देखा जा सकता है।
रेडियोः	सस्ता संगीत और अन्य कार्यों का सृजनात्मक उपयोग संभव, कम मूल्य सुगम, सुवाह्य, ग्रामीण क्षेत्र में टेलीविजन की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय साधन, एक व्यक्ति या समूह द्वारा प्रयोग किया जा सकता है। श्रोताओं का चयन करना संभव, अनुकूलन, संपादन, संशोधन तथा अद्यतन करने में आसान। कल्पना का महत्त्वपूर्ण रूप से सृजनात्मक प्रभावोत्पादकता।
फिल्म की उपलब्धताः	अत्यधिक दर्शकों की संभावना,

	शक्तिशाली सृजनकला का रूप, पृष्ठभूमि के उपकरण अपेक्षाकृत सस्ते और उपलब्ध हैं। निर्माण प्रक्रिया में काफी लोगों की भागीदारी। श्रव्य और दृश्य दोनों लाभ।
सचल श्रव्य टेप	निर्माण में सस्ती। छोटे एवं बड़े समूह में प्रयोग की जा सकती है। सरलता से संशोधित, संपादित और अनुकूलित की जा सकती है। उपकरण आसानी से उपलब्ध हैं। परिचित माध्यम हैः कोई कहीं भी प्रयोग कर सकता है, अनेक लोगों की भागीदारी। विशेष लोगों तक संप्रेषण करना संभव। मनोरंजन, विचार और संदेश संप्रेषित करने में प्रभावशाली। व्याख्या तथा विवरण और अनुकूलन के लिए प्रयोग किया जा सकता है। कक्षा, भाषणों और ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावी उपयोग किया जा सकता है।
माध्यम	**हानियाँ**
टेलीविजन प्रसारण	जनता में भेद नहीं कर सकता। अत्यधिक समय की खपत तथा खर्चीला प्रसारण समय खरीदना महंगा तथा प्राप्त करना कठिन। जन सेवाएँ कम और व्यवसायिकता अधिक संदेश का भावी संदर्भ कठिन। लघु खंडों के कारण संदेश में सीमित संदर्भ के तारतम्य में व्यवसायिक बाधा।
दृश्य टेप	अभी भी काफी महंगी।

	पृष्ठभूमि छोटे समूहों तक सीमित प्रसारण क्वालिटी में और सुधार की आवश्यकता समानुरूप, हार्डवेयर, प्रारूप और उपकरण का अभाव। अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में इलेक्ट्रॉनिक तकनीक उपलब्ध नहीं।
रेडियो	खामोश परिवेश की आवश्यकता। दृश्य संदेश का अभाव। अनियमित श्रवण आदतों के कारण सब तक पहुँचाना कठिन। रेडियो भूमिका के रूप में सुना जाता है इसलिए समुचित ध्यान से न सुन कर टुकड़ों में सुनने की संभावना रहती है।
	लघु खंडों में होने के कारण समाचार सीमा संदेश का वापिस संदर्भ देना कठिन, श्रोता अत्यधिक अस्पष्ट, व्यापक और कोई विशिष्टता नहीं।
फिल्म की उपलब्धताः	निर्माण तथा पुनः प्रति बनाना महंगा। निर्माण प्रक्रिया में अत्यधिक समय की आवश्यकता वास्तविक तथा अंतिम रूप से पृष्ठभूमि की भागीदारी कम। संपादन और संशोधन में कठिन अल्प जीवन क्षणभंगूर प्रारूप। अस्पष्ट और व्यापक दर्शक।

बोध प्रश्न IV

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) प्रिंट, फिल्म और प्रत्यक्ष पत्र मीडिया के कम से कम एक–एक लाभ का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) रेडियो, पर्चें, विवरण तथा पत्रिका मीडिया की कम से कम एक–एक हानि का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

2.6 सारांश

इस इकाई में हमने संचार के अनेक पारंपरिक मीडिया का समाज पर विशेषतः भारत के संदर्भ में ग्रामीण समाज पर उनके प्रभावों का अध्ययन किया है। हमने देखा कि देश के विभिन्न राज्यों में संदेश पहुँचाने, कहानी सुनाने, सामाजिक व्यवहार, धार्मिक मूल्य और सांस्कृतिक परंपराओं संबंधी सूचना पहुँचाने के लिए अनगिनत लोक मीडिया हैं। हमने आधुनिक रूप में प्रकट संचार के शताब्दियों में होने वाले विकास प्रक्रिया का भी अध्ययन किया है। कहा जाता है कि हम ऐसे मीडिया विश्व या वैश्विक गाँव में रह रहे हैं जहाँ पर सूचनाएँ हमारी ऊँगलियों पर मौजूद हैं। इसका श्रेय तकनीकी विकास को जाता है।

एक शताब्दी में ही जब हमने संचार क्षेत्र में विज्ञान और तकनीक की जबरदस्त उन्नति देखी है तो भविष्य में और क्या छिपा है, कहा नहीं जा सकता। फिर भी एक चीज में परिवर्तन नहीं हुआ है वह है– इंसान की संप्रेषण सहज आवश्यकता। इसी आवश्यकता ने संचार के नए मीडिया के विकास में सहायता प्रदान की है। यह प्रक्रिया मानव सभ्यता की उन्नति के साथ–साथ उन्नत होती जाएगी।

हमने आधुनिक संचार साधनों के तुलनात्मक लाभ और हानियों की जाँच की है। प्रभावशाली संप्रेषण के लिए संचार के सकारात्मक गुणों को शामिल करने वाला कोई एक संपूर्ण साधन नहीं है। इसलिए हमें विभिन्न संचार पारंपरिक तथा साथ में आधुनिक को एक दूसरे का पूरक होने की बात याद रखनी होगी।

2.7 शब्दावली

लोक साहित्य : विलियम थॉमस द्वारा 1845 में प्रयुक्त किया गया शब्द। इसमें पौराणिक कथाएँ, लोक गाथाएँ, किस्सें, लोकोक्तियाँ, पहेलियाँ, लोकगीत, वेशभूषाएँ और नृत्य, नृत्य नाटिकाएँ, गीत, पारंपरिक औषधियाँ तथा दीवारों पर लिखी गई लिखाइयाँ शामिल हैं।

लोक मीडिया	:	यह जर्मन शब्द वोक्स (valks) से आया है, जिसका अर्थ होता है लोग। यह सामान्य लोगों द्वारा प्रयुक्त किया जाने वाला मीडिया माना जाता है।
वृक्ष छाल	:	नील नदी के तटों पर उगने वाले वृक्ष छाल जो प्राचीन मिश्र में लेखन के लिए तैयार की जाती थी।
पांडुलिपि	:	यह लैटिन शब्द मेनुस (manus) से आया है जिसका अर्थ होता है हस्त और स्क्रिप्ट का अर्थ है– लेख या लिखना। जिसका अर्थ हुआ हाथ से लिखी सामग्री।
अपलिंक	:	भू–केंद्र से अंतरिक्ष में उपग्रह को टीवी सिग्नल भेजना।
डाउन लिंक	:	टेलीविजन के लिए एंटीना के माध्यम से उपग्रह से आने वाले सिग्नल को पकड़ना।
वैश्विक गाँव	:	उस विचार को प्रकट करने वाली अभिव्यक्ति की आधुनिक संचार तकनीक ने पूरे विश्व को एक गाँव की तरह सीमित कर दिया है।
सूचना सुपर राजमार्ग	:	आधुनिक संचार तकनीक की सहायता से सूचना स्थानांतरण की गति का वर्णन करने वाली अभिव्यक्ति।
इंटरनेट	:	डाटा स्थानांतरण करने के लिए कम्प्यूटरों को परस्पर जोड़ने वाली सार्वभौमिक प्रणाली।

2.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

मेलिवन एल. डिफ्लेटर–एवरेटी इन डेनिस (1991), अंडरस्टैंडिंग मास कम्युनिकेशन, गोयल साब, नई दिल्ली।

सबीर घोष (1996), मास कम्युनिकेशन टुडे इन द इंडियन कांटेक्सट, प्रोफाइल पब्लिशर्स।

केवल जे. कुमार (1981), मास कम्युनिकेशन इन इंडिया, जयको पब्लिशिंग हाऊस, मुंबई।

डे प्रदीप कुमार (1993), परस्पेक्टिव इन मास कम्युनिकेशन, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) संस्कृति का अर्थ है जीवनशैली। संस्कृति के तथ्यों में शामिल हैंः भाषा, कला, पौराणिकता, ज्ञान, धार्मिक परंपराएँ, परिवार, सामाजिक परंपराएँ और सरकार। संचार संस्कृति के तत्त्वों को संप्रेषण का माध्यम है। इस प्रकार इसका प्रत्यक्ष संप्रेषण आयाम है। संस्कृति के संरक्षण, रख–रखाव और विकास के लिए संचारण का होना आवश्यक है।

2) लोक मीडिया का अर्थ है ग्रामीण तथा कबीले के लोगों को उपलब्ध संचार के विभिन्न साधन। इसे दूसरे रूपों में पारंपरिक मीडिया', 'स्वदेशी संचार प्रणाली, वैकल्पिक मीडिया', 'समूह मीडिया', 'सस्ता मीडिया' आदि भी कहा जाता है।

   लोक मीडिया की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हो सकती हैंः

1) किसी सांस्कृतिक समूह या क्षेत्र के सभी लोगों की भागीदारी।

2) सस्ता तथा केवल स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री की आवश्यकता।

3) ये समूह की औसत योग्यता पर आधारित होते हैं। यह योग्यता बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के होती है।

4) चूँकि इनमें सबकी भागीदारी होती है, अतः गुणवत्ता या संख्या का कोई मानदंड नहीं होता।

5) ये प्रचार के लिए लोगों पर आधारित होते हैं, अतः इनका नियंत्रण स्वयं लोगों द्वारा किया जाता है।

6) ये व्यवसायिक नहीं होते। धन शामिल न होने से कोई कापी राइट नियम लागू नहीं होता।

7) इन्हें प्रायः सबका समर्थन प्राप्त होता है।

8) इन्हें अवसर या जनता विशेष के अनुसार अनुकूलित तथा पुनः तैयार कर लिया जाता है।

बोध प्रश्न II

1) पारंपरिक मीडिया का विभिन्न सभ्यताओं के द्वारा अनेक कार्यों के लिए प्रयोग किया जाता थाः

– सामाजिक और सामुदायिक मूल्यों का संप्रेषण करना

– उपदेश और दीक्षा प्रदान करना

– पारंपरिक मूल्य संप्रेषित करना

– धार्मिक संबंधों को संरक्षित करना

– वैधानिक नियमों, आचरण नियम प्रदान करना

– कहानियाँ, नीतिकथाएँ, लोकोक्तियाँ संप्रेषित करना

– सुरक्षा, कृषि गतिविधियों जैसे सार्वजनिक कार्यों के लिए लोगों को सक्रिय करना

– सामाजिक प्रतिबद्धताओं और संयोजन को सुरक्षित रखना

2) तमाशा, कथा, जात्रा, नौटंकी, कव्वाली।

3) पौराणिक और दंत कथाओं को जोड़ने के लिए लोक कला के रूप में कठपुतली का प्रयोग किया जाता है। उपासना के रूप में इसका उदय हुआ। भारत में आम तौर पर विभिन्न चार प्रकार की कठपुतली आम है। ये हैं: सूत्रधारिका, छह कठपुतली, छाया कठपुतली, हस्त कठपुतली।

बोध प्रश्न III

1) गतिशील टाइपों का प्रयोग कर प्रिंटिंग की खोज करने वाला पहला व्यक्ति था जोंस गुटनबर्ग। उसकी खोज ने विश्व की काया पलट दी। प्रिंटिंग के परिणामस्वरूप भाषाएँ उत्पन्न हुई और विकास हुआ। स्कूलों और शैक्षिक संस्थानों की माँग बढ़ने लगी। विज्ञान, दर्शन और धर्म में होने वाले विकास जनता को उपलब्ध होने लगे। संक्षेप में, प्रिंटिंग ने ज्ञान के प्रसार और विकास में काफी योगदान दिया।

2) भारत में टेलीविजन ने राष्ट्रीय निष्ठा, लोगों में वैज्ञानिक प्रकृति को प्रेरित करना, जन्म नियंत्रण और परिवार कल्याण को बढ़ावा, कृषि और ग्रामीण विकास को प्रेरणा, पर्यावरण व खेलों को बढ़ावा, महिला और बाल कल्याण

कार्यक्रमों को बढ़ावा, राष्ट्रीय भावना जागृत करना और देश की कलात्मक और सांस्कृतिक विरासत की वृद्धि में योगदान दिया।

टेलीविजन एक व्यसन बन सकता है जिससे शिक्षा तथा दूसरी गतिविधियों प्रभावित हो सकती है। यह संस्कृति, सार्वभौमिक विचार तथा लोगों के पारंपरिक मूल्यों पर विपरीत प्रभाव डाल सकता है।

3) इंटरनेट एक सार्वभौमिक प्रणाली है, जिसमें टेलीफोन और मोडेम का प्रयोग कर डाटा स्थानांतरण के लिए, एक कम्प्यूटर को दूसरे कम्प्यूटर से जोड़ा जा सकता है। इंटरनेट से किसी भी दूरी पर एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर में सूचना शीघ्र संप्रेषण कार्य को सरल बना दिया है।

बोध प्रश्न IV

1) प्रिंट मीडियाः मुद्रित सामग्री की जीवन अवधि अधिक होती है।

फिल्मः सशक्त सृजनात्मक कला रूप

प्रत्यक्ष पत्रः संदेश व्यैक्तिक हो सकता है।

2) रेडियोः दृश्य संदेश का अभाव

पर्चे/विवरण : प्रभाव मापना कठिन

मैगजीन (पत्रिका)ः अंतिम तिथि से काफी पहले हो सकती है इसलिए यह सही समय – वाली नहीं मानी जा सकती।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 अन्र्तव्यैक्तिक, सामूहिक और जन संचार*

*प्रो. जॉर्ज प्लाथोत्तम

रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 अन्र्तव्यैक्तिक संचार

3.3 समूह संचार

3.4 जन संचार

3.5 सारांश

3.6 शब्दावली

3.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

* प्रो. जॉर्ज प्लाथोत्तम, नेहू, शिलाँग

इस इकाई में हम अन्तर्वैयक्तिक (interpersonal), सामूहिक (group) और जन संचार (mass communication) के दृष्टिकोण से संचारण की चर्चा करेंगे।

इकाई में अन्तर्वैयक्तिक संचार के लिए आवश्यक विभिन्न कौशलों (निपुणताओं) जैसे भाषण, श्रवण तथा भाषा के प्रयोग आदि का वर्णन किया गया है। सामूहिक संचार में हमारा उद्देश्य छात्रों को सामूहिक प्रक्रिया, सामूहिक बैठकों का आयोजन तथा प्रभावशाली संचारण के लिए नेतृत्व के गुणों से अवगत कराना है। व्यापक जन संचार के आखिरी भाग में हमने व्यापक जन संचार के घटक, संरचनात्मक तत्त्वः भेजने वाला (स्रोत), संदेश, चैनल एवं प्राप्तकर्त्ता (Source, Message, Channel, Receiver - SMCR) तथा व्यक्तियों एवं समाज में इसके कार्यों पर चर्चा की है। समग्र इकाई का उद्देश्य सामूहिक मीडिया का प्रभावशाली उपयोग करने तथा समाज को प्रभावित करने के तरीकों का मूल्यांकन करने में छात्रों की व्यवहारिक निपुणता का विकास करना है।

3.1 प्रस्तावना

संचार को मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में बाँटा गया हैः अन्तर्वैयक्तिक, सामूहिक तथा जन संचार। इस भाग में हम इनमें से प्रत्येक को समझने तथा इनके प्रभावशाली उपयोग की संक्षिप्त चर्चा करेंगे।

3.2 अन्तर्वैयक्तिक संचार

3.2.1 अन्तर्वैयक्तिक संचार क्या है?

अन्तर्वैयक्तिक संचार वह है, जिसमें दो व्यक्तियों के बीच या एक व्यक्ति तथा समूह के बीच संचारण होता है। जब संचार दो व्यक्तियों के बीच होता है

तो उसे द्विकीय (Dyadic) संचार कहा जाता है। अन्तर्व्यैक्तिक संचार प्रत्यक्ष होता है तथा इसके बीच में किसी संचार तकनीकी की आवश्यकता नहीं होती। यह व्यैक्तिक संबंधों एवं सामाजिक व्यवस्थाओं को बनाए रखने एवं विकसित करने के लिए आवश्यक माना जाता है। बिना अन्तर्व्यैक्तिक संचार के सामाजिक समूह की इकाइयों के समूह के रूप में कार्य करने के बारे में सोचना कठिन है। कोई समुदाय या समूह केवल व्यक्तियों का समूह ही नहीं होता अपितु सुसम्बद्ध इकाई होती है। संचार के द्वारा इसमें एकता और पहचान की अभिव्यक्ति होता है। अन्तर्व्यैक्तिक संचार द्वारा संबंध बनाए जाते हैं और पोषित किए जाते हैं।

3.2.2 अन्तर्व्यैक्तिक संचार के मूल तत्त्व

अन्तर्व्यैक्तिक संचार मौखिक या अमौखिक हो सकता है। इस प्रक्रिया में मात्र प्रेषक तथा ग्रहणकर्त्ता दोनों को परस्पर संदेश की संचार प्रक्रिया का पता होता है। अन्तर्व्यैक्तिक संचार दो प्रकार के हो सकते हैंः परस्पर विनिमय और पारस्परिक क्रिया। परस्पर विनिमय से हमारा अभिप्राय है मित्रों, पारिवारिक सदस्यों तथा प्रेमियों इत्यादि के बीच होने वाली निजी बात। यह संचार अधिक अनौपचारिक होता है तथा इसका सार्वजनिक या सामाजिक नियमों के अनुरूप होना आवश्यक नहीं है।

दूसरी तरफ पारस्परिक क्रिया में लोग व्यवहार के स्थापित कुछ नियमों के अनुरूप एक दूसरे से संबंधित होते हैं। इनमें सामाजिक शिष्टाचार तथा व्यवहार भाषा आदि को नियंत्रित करने वाले धार्मिक या सामाजिक नियम शामिल हैं। अधिकांश पारस्परिक क्रिया से आरंभ हुए संबंध परस्पर विनिमय स्तर तक पहुँच जाते हैं।

अन्र्तव्यैक्तिक संचार में प्रेषण और ग्रहण प्रक्रिया प्रायः एक साथ होती है जिसमें यह कहना कठिन है कि कब एक व्यक्ति संदेश भेज रहा है तथा कब प्राप्त कर रहा है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति या समूह से बात कर रहा है तो वह संदेश देने के अतिरिक्त उनकी जनता की प्रतिक्रिया का भी तलाश करता है। अपने–अपने श्रोताओं से मिलने वाली सूचनाओं के अनुसार अपना संदेश तैयार करता है। यदि वह श्रोताओं को ध्यान रहित रुचि हीन पाता है तो वह अपने कथन के कुछ भागों को छोड़ सकता है उस विषय को परिवर्तित कर सकता है या वार्तालाप बंद कर सकता है।

प्रेषक अपने संदेश को निरंतर श्रोताओं की प्रतिक्रिया जैसे ध्यान, संदेश समझने की योग्यता तथा स्वीकृति आदि के अनुसार परिवर्तित करता रहता है वह निरंतर श्रोताओं के चेहरे के भावों, भंगिमाओं, आवाजों आदि पर सटीक ध्यान रखता/रखती है। अन्र्तव्यैक्तिक संचार में दो पक्षों में निरंतर क्रिया होती है तथा दोनों ही पक्ष बोलते या प्रेषित करते हैं। यह संचार का रूप लचीला होता है।

उदाहरण के लिए, नानी–दादी बच्चे को सुलाने के लिए कहानियाँ कहती हैं या लौरियाँ सनाती है। वे देखती है कि यदि बच्चा सो गया तो वह अपनी कहानी या लौरी को पूरा होने से पहले ही बीच में अधूरा छोड़ देती हैं।

हमें अन्र्तव्यैक्तिक संचार के माध्यम से अपने बारे तथा दूसरे लोगों से अनेक सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। प्राप्त सूचनाओं की संख्या तथा उनका महत्त्व दूसरों के साथ संचार में तथा उनके साथ वार्तालाप में शामिल करने की हमारी इच्छा पर निर्भर करता है। अन्र्तव्यैक्तिक संचार में काफी

विकल्प रहते हैं। इसमें निर्णय करने की आवश्यकता होती है। हम मिलने वाले व्यक्तियों या समूहों से वार्तालाप कर भी सकते हैं या उनकी अनदेखी भी की जा सकती है।

उदाहरण के लिए, जब हम रेल यात्रा कर रहे होते हैं तो हम अपने आप को अनजान लोगों के बीच पाते हैं। हमारी काफी यात्रा बिना ही संचार के हो सकती है या फिर वार्तालाप आरंभ हो सकती है और तब अर्न्तव्यैक्तिक संचार के माध्यम से संबंध बनने लगते हैं। हमारे अनेक परिचित एवं मित्र हमारे अर्न्तव्यैक्तिक संचार के प्रयत्नों के कारण या उनमें शामिल होने की इच्छा के कारण बन जाते हैं।

अर्न्तव्यैक्तिक संचार में दूसरों के साथ परस्पर प्रभावशाली क्रिया के लिए कौशलों (निपुणताओं) की आवश्यकता होती है। सामाजिक नियमों, व्यवहार की जानकारी, शिष्टाचार, सुनने की योग्यता और इच्छा, एक–दूसरे के प्रति रुचि एवं सम्मान तथा अपनी सूचनाओं को बाँटने की इच्छा आदि ऐसे महत्त्वपूर्ण घटक हैं, जिनमें सफल अर्न्तव्यैक्तिक संचार कायम होता है।

3.2.3 अर्न्तव्यैक्तिक संचार में बाधाएँ

अर्न्तव्यैक्तिक संचार में अनेक बाधाएँ हो सकती हैं। इसमें सामाजिक अथवा सांस्कृतिक पूर्वाग्रह, धार्मिक संबद्धताओं के कारण लोगों को प्रभावित करने वाली श्रेष्ठहीन भावनाएँ, अपने बारे में सांस्कृतिक विश्वास, आर्थिक स्तर, जातीय पहचान, आदि शामिल हैं। भारत में जाति प्रथा और जातीय वर्णक्रम विभिन्न जाति क्रम के लोगों के बीच प्रभावशाली अर्न्तव्यैक्तिक संचार में रुकावट डाल सकते हैं। यद्यपि ऐसी बाधाएँ प्रभावशाली संचार में बाधा डालती हैं तो भी अर्न्तव्यैक्तिक संचार का सामाजिक भिन्नताएँ समाप्त करने में प्रभावशाली प्रयोग किया जा सकता है।

सांस्कृतिक पूर्वाग्रह भी अन्र्तव्यैक्तिक संचार में एक और रुकावट बन जाते हैं।

हिटलर के द्वारा जातीय श्रेष्ठता के सिद्धांत को बढ़ावा देने से जर्मनी में लाखों यहूदियों को मार डाला गया था।

सामाजिक बाधाओं में महिलाओं, सामाजिक रूप से तिरस्कृत वर्ग तथा आर्थिक सुविधाओं से वंचित वर्गों के विरुद्ध भेदभाव शामिल हैं।

संचार बाधाओं में आयु, मानसिकता तथा दृष्टिकोण में भिन्नता, विवाहित साथियों एवं पारिवारिक सदस्यों के बीच वार्तालाप का अभाव शामिल हैं। इससे अरुचि, अकेलापन, उदासीनता तथा अन्य व्यक्तित्व संबंधी कुंठाएँ पैदा हो सकती हैं। अंतर्मुखी स्तर पर प्रभावशाली परस्पर कार्यकलाप की असफलता से व्यक्ति अंतर्मुखी, समाज से कटा हुआ अनुभव करने लगता है। ऐसे अनुचित तीव्र व्यवहार से व्यक्ति का व्यवहार हिंसक तथा आत्मघाती तक हो सकता है।

अन्र्तव्यैक्तिक संचार में सफलता का अर्थ है, इन सब बाधाओं तथा अन्य बाधाओं को दूर करना। इस प्रक्रिया में दोनों पक्ष शामिल होते हैं।

अन्र्तव्यैक्तिक स्तर पर प्रभावशाली संचार की असफलता अनेक सामाजिक और पारिवारिक विकृतियों का कारण बन जाती है।

प्रभावशाली अन्र्तव्यैक्तिक संबंध परिवार और समुदाय में सामाजिक संबद्धता स्थापित कर सकते हैं। प्रभावशाली सामाजिक संचार व्यक्ति और समाजों को इस प्रकार बनाता है, जिसे डेविड राइजमैन के अनुसार 'आंतरिक राडार' कहा है, जिससे व्यक्ति स्वयं को समाज में स्थापित करता है तथा अनुकूलित करता है।

3.2.4 अन्तर्व्यैक्तिक संचार के गुण

अन्तर्व्यैक्तिक संचार का एक लाभ यह है कि यह हमारे सामाजिक बंधनों को स्थापित करता है तथा कायम रखता है। जब व्यक्ति परस्पर एक दूसरे के साथ प्रभावी रूप से संचार करते हैं तो उनको पता लगता है कि वे उनके साथ जुड़ सकते हैं। मित्र, प्रेमी, सहकर्मी, अधिकारी, पड़ोसी तथा पारिवारिक सदस्यों के रूप में अपनी पहचान बना सकते हैं।

- अन्तर्व्यैक्तिक संचार समाज के लोगों को सही स्थिति में बनाए रखता है, जिससे सामाजिक स्वीकृति मिलती है। इस प्रकार नीरसता एवं एकाकीपन से छुटकारा मिलता है।

- यह दूसरों के साथ अपने लक्ष्य पूरे करने में सहायता करता है। अन्तर्व्यैक्तिक संचार सहयोग एवं योगदान का आधार तैयार करता है, जिससे हम अपने इच्छित उद्देश्य के पूरे करने में सफल हो सकते हैं।

- इससे लोगों को परस्पर सामाजिक क्रिया के नियम जानने एवं उनका पालन करने में सहायता मिलती है। हमारा समाज नियमों से चलता है। नियमों का उल्लंघन या सामाजिक नियमों को पालन करने की अयोग्यता से व्यक्ति का बहिष्कार तथा अकेलापन हो सकता है।

अन्तर्व्यैक्तिक संचार के लिए निपुणताओं की आवश्यकता होती है। निपुणताएँ प्राप्त की जा सकती हैं या सीखी जा सकती है। निपुणताओं को पाने तथा उनके पालन की दक्षता अनेक कारणों पर निर्भर करती है:

- प्रेरणा और आवश्यकता, पुरस्कार तथा प्रबलीकरण;

- दृष्टिगत एवं बौद्धिक संकायों, अभिरुचि, दृष्टिकोण एवं वातावरण योग्यताएँ;
- व्यक्ति का व्यक्तित्वः मनोवैज्ञानिक, जैविक कारकों;
- सामाजिक पहलुओं; एवं
- व्यक्ति की सीखने की क्षमताएँ, प्रेरणा तथा सीखने की इच्छा।

3.2.5 अर्न्तव्यैक्तिक संचार कौशल

भाषण, भाषा

यद्यपि मानव में आवाज की उत्पत्ति अल्प ही होती है तो भी कुछ औचित्यपूर्ण निश्चितताओं के कारण हम यह मान सकते हैं कि मानव को आवाज नैसर्गिक रूप में प्राप्त है। मानव सभ्यता के इतिहास में वाक् संचार का महत्त्वपूर्ण कदम रहा है। यद्यपि भाषा का विकास आदिम काल में ही हो गया था लेकिन अर्न्तव्यैक्तिक संचार प्रक्रिया को व्यापक बनाने और पर्याप्त योगदान देने में अनेक शताब्दियाँ लग गई।

प्रभावशाली अर्न्तव्यैक्तिक संचार के लिए व्यक्ति के पास वाक् निपुणता होनी चाहिए। वाक् पटुता, भाषा पर नियंत्रण तथा शब्दों का प्रभावशाली प्रयोग जिनका संचार में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। यह शिक्षा द्वारा सीखे जा सकते हैं तथा अभ्यास द्वारा इनकी पूर्णता प्राप्त की जा सकती है।

शरीर की भाषा (Body Language): कुछ सभ्यताओं में लोग अपना संदेश प्रेषित करने के लिए अपने हाथों और चेहरे का प्रयोग करते हैं। शरीर की भाषा और भाव–भंगिमाएँ संदेश ग्रहणकर्त्ताओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। एक जादूगर या कठपुतली दिखाने वाला या

सर्कस का जोकर दर्शाता है कि प्रभावशाली अर्न्तव्यैक्तिक संचार में शरीर की भाषा एक महत्त्वपूर्ण घटक होती है।

लोगों के साथ पहचान (Identification), सहानुभूति (Sympathy) तथा समझ (Understandng): अर्न्तव्यैक्तिक संचार लोगों को आराम पहुँचा कर, उनके दुख और पीड़ाओं को दूर कर तथा उनके एकाकीपन और नीरसता को दूर कर उन तक पहुँचाने का एक रचनात्मक जरिया बन सकता है। परामर्शक, धार्मिक नेता, सहायता पहुँचाने वाले कार्यकर्त्ता तथा कभी–कभी मीडिया के व्यक्ति भी दुर्घटना या प्राकृतिक आपदाओं जैसी विपरीत परिस्थितियों में यही कार्य करते हैं।

3.2.6 श्रवण (Listening)

अर्न्तव्यैक्तिक संचार में दो या इससे अधिक व्यक्ति शामिल होते हैं और संचार के लिए स्वस्थ वातावरण प्रदान करता है। यह दो तरफा पारस्परिक क्रिया वाला होना चाहिए। ऐसे संचार में श्रवण एक महत्त्वपूर्ण घटक होता है। यद्यपि श्रवण संचार में एक महत्त्वपूर्ण घटक है तो भी संचार की निपुणता का प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अनदेखी की जाती है।

श्रवण निपुणताएँ प्रशिक्षण द्वारा सीखी जा सकती हैं। श्रवण में वक्ता के शब्दों को सुनना ही नहीं है, उसके अर्थ को ग्रहण करना भी होता है। अर्थ श्रोता द्वारा निकाला जाता है, जिसमें वक्तव्य के दौरान भंगिमाओं, चेहरे के हाव–भाव, चुप्पी या ठहराव या आवाज में परिवर्तन आदि की तरफ ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

श्रवण से परिवारों, उद्योगों तथा व्यवसाय आदि के कार्य निष्पादन में सुधार लाया जा सकता है। किसी कम्पनी में अकुशल कार्य निरीक्षकों तथा

प्रबंधकों के कारण अनेक समस्याएँ हो सकती है। कुशल श्रवण से तनावों व मतभेदों में कमी आ सकती है तथा कर्मचारियों में नैतिक चरित्र एवं उत्साह का विकास किया जा सकता है।

3.2.7 अर्न्तव्यैक्तिक संचार साझेदारी (Participatory) है

यह पूर्णतः भागीदारी प्रक्रिया है, इसमें संचार के भंग होने के अवसर काफी कम होते हैं क्योंकि संचार में भाग लेने वाले आमने–सामने होते हैं तथा परस्पर एक–दूसरे की उपस्थिति में शब्दों और संकेतों को ग्रहण किया जाता है तथा व्याख्या की जाती है। फीडबैक (सामग्री) तात्कालिक रूप से वर्णित शरीर की भाषा या आवाज के उतार–चढ़ाव से ग्रहण की जाती है।

सुबीर घोष बताते हैं कि माइक्रोफोन के प्रयोग से पहले गांधीजी व्यापक जनसमूह को खुले स्थान में भाषण देते थे और सामने बैठे हुए तथा पीछे खड़े रहने वाले लोग भाषण को अच्छी तरह समझते थे, इस प्रक्रिया में सहायता प्रदान करने के लिए गांधीजी अपने शब्दों और निर्धारित अवधि का चयन करते थे। यह काफी प्रभावशाली था क्योंकि संचार प्रक्रिया में संदेश के ग्रहणकर्त्ता भी शामिल होते थे।

संचार तकनीक में तीव्र प्रगति एवं सूचना क्रांति के बावजूद शक्तिशाली समझ में आने वाला तथा प्रभावशाली संचार माध्यम ऐसा नहीं था कि एक व्यक्ति दूसरे अन्य व्यक्तियों को भाषण देता है। टेली कांफ्रेंसिंग तथा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के द्वारा वार्तालाप में नवीनतम विकास से उत्साही, घनिष्ठ तथा व्यैक्तिक संचार अभिव्यक्ति सीमित नहीं रहती है।

अर्न्तव्यैक्तिक संचार सहयोग स्थापित करने तथा मतभेद दूर करने के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है। आज के सामाजिक मतभेद पूर्वकाल में

लोगों के कम ज्ञान के कारण माने जा सकते हैं चाहे वे परिवार, धार्मिक समूह, राजनीतिक दल या अन्य किसी सामाजिक संगठन के सदस्य ही क्यों न हों। मतभेदों का समाधान तथा शांति को बढावा अन्र्तव्यैक्तिक संचार के माध्यम से संभव हो सकता है। आज भी अंतर्राष्ट्रीय संबंधों तथा सार्वभौमिक मतभदों के समाधान तथा शांति को बढ़ावा अन्र्तव्यैक्तिक संचार तथा सार्वभौमिक मतभदों के समाधान के लिए अन्र्तव्यैक्तिक संचार का प्रभावी ढंग से प्रयोग किया जा रहा है। सरकारों का या देशों का या अन्य संगठनों का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों के पास अच्छी संचार निपुणता का होना आवश्यक है ताकि वांछित परिणाम प्राप्त किए जा सकें।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) अन्र्तव्यैक्तिक संचार क्या है?

....

....

....

....

....

2) अन्र्तव्यैक्तिक संचार के कुछ लाभ बताइए।

………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………………………

3) अर्न्तव्यैक्तिक संचार में कौन–कौन सी बाधाएँ हैं? –

………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………………………

4) अर्न्तव्यैक्तिक संचार में श्रवण कैसे महत्त्वपूर्ण है?

………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………………………

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

3.3 समूह संचार

3.3.1 समूह क्या है?

एक समूह वह सामाजिक संगठन है, जो एक मान्य क्षेत्र में कुछ लोगों की शारीरिक सन्निकटता के द्वारा पहचाना जाता है। एक व्यक्ति एक साथ अनेक समूहों का सदस्य हो सकता है। चूँकि हमारे में से अधिकांश लोग एकाकी नहीं रहना चाहते इसलिए हम समूहों – सभी प्रकार के समूहों में रहते हैं (रोबर्ट बियर्सटेड Robert Bierstedt)। हमारे मित्र व परिचित लोग होते हैं, हम एक स्थान विशेष में रहते हैं तथा हमारा एक स्पष्ट पता है। हमारी जैविक भिन्नताएँ हैं जैसे पुरुष या स्त्री, बच्चा या बूढ़ा। हमारी शिक्षा, पृष्ठभूमि, व्यवसाय, आर्थिक स्तर, संबद्ध धर्म आदि से अंतर आ जाता है। हम इसी कारण एक या अनेक समूहों से संबंधित हो जाते हैं।

बेकर के अनुसार एक समूह ऐसे अनेक लोगों से बनता है जिनका एक ही लक्ष्य होता है तथा लक्ष्य प्राप्ति के लिए वे परस्पर एक–दूसरे के साथ सक्रिय रहते हैं, एक–दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं तथा स्वयं को समूह का एक अंग मानते हैं।

3.3.2 समूहों के प्रकार

समूहों को आरंभिक एवं परवर्ती भागों में विभाजित किया जाता है। चार्ल्स हॉर्टन कूले (Charles Horten Cooley) के अनुसार, आरंभिक समूह वे समूह हैं, जो घनिष्ठ एवं व्यैक्तिक संबंध वाले लोगों से बनते हैं। इसमें व्यक्ति वास्तविक रूप से आमने–सामने होते हैं। यह शारीरिक दूरी की अपेक्षा घनिष्ठता या सामाजिक दूरी की डिग्री से आरंभिक समूह का निर्धारण होता है। परिवार को आरंभिक समूह माना जाता है। आरंभिक

समूह के अन्य उदाहरण हैं– क्रीडा समूह, सगोत्र समूह, श्रमिक समूह, वंश आदि।

परवर्ती समूह वे हैं जिनमें व्यक्तियों में औपचारिक अन्र्तव्यैक्तिक तथा स्तरीय संबंध होते हैं। अन्य सभी समूह जो आरंभिक समूह नहीं हैं, परवर्ती माने जाते हैं। परवर्ती समूहों में भावात्मक लगाव और व्यक्तिगत मेल–जोल कम होता है। उनमें व्यैक्तिक संबंधों की अपेक्षा लक्ष्य प्राप्ति के लिए संबंध होते हैं। राजनीतिक दलों, संघों, श्रमिक यूनियनों, धार्मिक समूहों आदि को परवर्ती समूह माना जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति एक साथ आरंभिक तथा साथ ही परवर्ती समूह का सदस्य होता है।

3.3.3 समूहों के कई रूप हो सकते हैं

सांख्यकीयः जनसांख्यकीय प्रबंधों के अनुसार।

सामाजिकता (Societal): यह समूह ऐसे लोगों से बनता है, जो स्वयं की एक समानता, या विशेषताओं अथवा गुणों की पहचान के बारे में कुछ हद तक जानकारी रखते हैं।

सामाजिक (Social): ऐसे समूह जिनमें व्यक्ति वास्तव में एक–दूसरे से संबंधित होते हैं तथा उनमें परस्पर सामाजिक संबंध होते हैं।

संघो का समूहः विभिन्न संघों के सदस्य एक औपचारिक संरचना वाले समूहों में संगठित हो जाते हैं। जो लोग एक समान हितों को जानते हैं इन हितों की पूर्ति के लिए एक साथ एकत्रित हो जाते हैं।

शैली के संदर्भ में सामूहिक संचार अन्तर्व्यैक्तिक संचार जैसा है परन्तु इसके रूपों में अंतर होता है। **सामूहिक संचार** में भागीदार आमने–सामने होते हैं। समूह में शामिल लोग अपने सामाजिक संदर्भ के अनुसार समान लिंगीय (homogenous) (पुरुष या महिलाएँ) या विपरीत लिंगीय (heterogeneous) (पुरुष और महिलाएँ) हो सकते हैं। सामूहिक संचार औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों स्तरों पर हो सकता है।

3.3.4 व्यक्ति के संबंध में समूह की विशेषताएँ

व्यक्ति के समूह के साथ संबंधों की अनेक विशेषताएँ हैं, जो इस प्रकार हैंः

1) **सदस्यताः** समूह से संबंध इसकी सदस्यता के माध्यम से होता है। सदस्य के अनेक रूप हो सकते हैं जैसे कोई कर्त्तव्य, विशेषाधिकार, लाभ का हकदार आदि।

2) **निर्भरताः** किसी समूह में व्यक्ति की सदस्यता उसकी कई आवश्यकताओं के कारण उसे समूह पर निर्भर कर देती है श्रमिक यूनियन के सदस्य अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए समूह पर निर्भर करते हैं। राजनीतिक दल के सदस्य अधिकार प्राप्त करने के विचार से उसके सदस्य हो सकते हैं।

3) **स्वीकृति, आकर्षणः** व्यक्ति समूह में अपनी स्वीकृति प्राप्त करने के लिए शामिल होते हैं। किसी विशेष समूह की तरफ आकर्षण उस समूह के सदस्यों के व्यवहार का ढंग तथा परस्पर क्रिया, संबद्धता, स्वीकृति, कार्य संतुष्टि तथा संपूर्णता की भावना के कारण होता है।

4) **इच्छाः** कोई सदस्य अपनी इच्छा के आधार पर (जैसा कि क्रीड़ा क्लबों आदि के मामलों में होता है) या जन्म के आधार पर किसी समूह का सदस्य हो सकता है जैसा कि नागरिकता, जाति, धर्म,

आदि के मामले में होता है। यद्यपि यह सदस्यता उन पर थोपी जाती है तभी व्यक्ति अपने समूह से एक सीमा तक अलग होने की स्वतंत्रता रखता है।

5) **व्यक्तियों पर समूह का दबावः** समूह व्यक्तियों पर समूह से संबद्ध रहने तथा समूह के कुछ नियमों का पालन करने के लिए दबाव रखता है। यद्यपि वे व्यक्तियों के व्यवहार के तरीकों पर कुछ प्रतिबंध लगाते हैं तो उसे कुछ लाभ भी मिलते हैं। इस प्रकार समूह और व्यक्ति दोनों का परस्पर ऐसी अनुरूपता से लाभ होता है।

6) **परिवर्तन एवं लचीलापन (Flexibility):** कोई भी समूह सख्त एवं स्थाई नहीं होता। सभी समूहों में परिवर्तन होता रहता है। समूहों की कार्य प्रणाली में लचीलापन होता है। परिवर्तन एवं लचीलापन निरंकुश रूप से नहीं थोपी जा सकती है अपितु संचार के परिणामस्वरूप विकसित होते हैं।

7) **नेतृत्वः** समूह का अस्तित्व और इसकी कार्य प्रणाली अधिकांशतः उसके नेता पर आधारित होती है।

3.3.5 समूह संचार में नेता की भूमिका एवं कार्य

नेता की व्याख्या उस प्रक्रिया के अनुसार की जाती है जिसके द्वारा समूह में समन्वय रखा जाता है, सदस्यों को प्रेरित किया जाता है तथा कुछ कार्य पूरे किए जाते हैं। नेता इन कार्यों को अपने सदस्यों से करवाने के लिए अपने अधिकार या स्थिति का प्रयोग कर सकता है। समूह की कार्य प्रणाली, लक्ष्य निर्धारित करने, उन्हें प्राप्त करने, संचार स्थति में सुधार के लिए तथा सदस्यों के बीच परस्पर क्रिया के लिए और समूह की प्रतिबद्धता बनाए रखने में नेता की भूमिका निर्णायक होती है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

नेता जिन कार्यों के निष्पादन की भूमिकाओं में समूह का नेतृत्व करता है वे इस प्रकार हैंः

– चर्चा आरंभ करना,

– सूचनाओं का आदान–प्रदान,

– स्पष्टीकरण और व्याख्या करना,

– आरंभ करना तथा निश्कर्ष निकालना, एवं

– मतैक्य का परीक्षण।

एक नेता देखभाल संबंधी भूमिकाओं का कार्य भी करता है जैसेः

– सामंजस्य बनाए रखना

– समझौतावादी

– सहारा एवं प्रोत्साहन

– द्वारपाल

– मानक निर्धारण और परीक्षण।

3.3.6 नेता की भूमिका

''नेता वह है, जो मार्ग जानता है, मार्ग दिखाता है तथा उस मार्ग पर चलता है।'' नेता में निम्नलिखित गुण होने चाहिएः

– **समस्याओं को अच्छी तरह समझनाः** समस्या के बारे में पूरी सूचना रखता हो, विषयों का मूल्यांकन करने की योग्यता तथा समाधान करने की क्षमता हो।

– **परिचयः** उसे समूह, उसके सदस्यों, तथा पृष्ठभूमि की जानकारी हो।

– **खुलापनः** नेता सदस्यों को सहारा तथा प्रोत्साहन प्रदान करने वाला हो, पूर्वाग्रहों से मुक्त हो तथा दूसरों के विचारों और दृष्टिकोणों का सम्मान करने वाला हो।

– **संचार कौशल (निपुणता) (Communication skills)**: उसका भाषा पर नियंत्रण हो, विचार लिखने एवं बोलने में स्पष्ट हो, सार्वजनिक रूप से वाक् कला जानता हो तथा श्रवण आदि योग्यता रखने वाला हो।

– **सामूहिक दायित्व की भावना (Team spirit)** : एक प्रभावशाली नेता मूलतः समूह का व्यक्ति होता है, जिसमें संपूर्ण समाज या कम से कम अधिकांश सदस्यों को पूर्व निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए किसी दिशा में ले जा सके।

– **लेखक द्वारा वर्णित अन्य विशेषताएँ** : बुद्धिमता, ऊर्जावान, सहनशीलता समाज में, सम्माननीय, धनी, नवपरिवर्तिता तथा रचनात्मकता हैं।

3.3.7 नेतृत्व की शैलियाँ

जनतांत्रिक (Democratic): जनतांत्रिक नेता सामंजस्य और साझे लक्ष्यों के लिए भागीदारी, पद आधारित मार्गदर्शन, मतैक्य एवं कार्य नियमों का पालन करते हैं। वे शक्ति या अधिकार, विशिष्टता का प्रयोग नहीं करते, सदस्यों के बीच संचार को बढ़ावा देते हैं तथा रचनात्मकता एवं पहल को बढ़ावा देते हैं।

निरंकुश या आधिकारिक (Authoritarian): सत्तावादी या आधिकारिक नेता के लक्ष्य पक्के होते हैं तथा वे समूह के सदस्यों के विचारों की अनेदखी कर लक्ष्य प्राप्ति के लिए उनका मार्गदर्शन करते हैं। हो सकता है

उनमें कुशलता तो हो लेकिन ऐसे नेतृत्व में मतभेद होने की अधिक संभावना रहती है।

निष्क्रिय (Laisser-faire): समूह को प्रभावी ढंग से निर्देश नहीं देता लेकिन निरीक्षक और रख–रखाव करने वाला होता है। ये सलाह और परामर्श अच्छा देते हैं तथा संदर्भ प्रस्तुत करने के रूप में कार्य करते हैं तथा समूह की कार्य प्रणाली में हस्तक्षेप नहीं करते। इस तरह का नेतृत्व समूह के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्य करने वाले प्रतिबद्ध, रचनात्मक तथा परिपक्व सदस्यों के लिए उपयोगी होता है।

3.3.8 संचार एवं समूह

समूह संचार की स्थितियाँ दैनिक जीवन में आम हैं। घर, स्कूल, मंदिर या चर्च, कार्य स्थल, खेल का मैदान तथा सामुदायिक केंद्र एवं गली आदि सभी जगह सामूहिक संचार होता है।

समूह संचार में भागीदारों के कार्यक्षेत्र को नियंत्रित करने वाली औपचारिकता की डिग्री संदर्भ के अनुसार भिन्न होती है, जो संगठन की आवश्यकता के अनुपात में बढ़ जाती है। इस प्रकार परिवार में संचार का संदर्भ वकीलों, चार्टर्ड एकाउंटेंट तथा कम्पनी के अधिकारियों आदि व्यवसायिक समूहों के संदर्भ में भिन्न होगा।

संदर्भ के अतिरिक्त, सामूहिक संचार अनेक संबंधित घटकों जैसे आयु, लिंग, शिक्षा, आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, भाषा, धर्म, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और जातीय भिन्नताओं से भी प्रभावित होता है।

द्विकीय (Dyadic) अंतःक्रियाओं में सावधानी से संतुलन बनाए रखना चाहिए, ये समूह संचार में अधिक समय तक मौजूद नहीं रहते हैं।

इस संचार में दो से अधिक भागीदार होते हैं। समूह में व्यक्तियों को विशेष कार्य तथा भूमिकाएँ दी जा सकती हैं, जो सूचना आदान–प्रदान के लिए असमान संभावनाएँ पैदा करती हैं। समूह में कोई एक व्यक्ति सूचना स्रोत तथा अन्य ग्रहणकर्त्ता या वितरणकर्त्ता हो सकते हैं।

समूह में शामिल होने वाले व्यक्तियों की संख्या बढ़ने से व्यक्तियों की भागीदारी क्रिया में कमी आ जाती है। दूसरे शब्दों में, जितना बड़ा समूह होगा उतना व्यैक्तिक एवं प्रत्यक्ष आदान–प्रदान कम होगा। समूह बड़ा होने से आपसी समझ भी कम हो जाती है।

बेकर के अनुसार, 'संपूर्ण वार्तालाप एवं सर्वोतम क्षमता के संदर्भ में पाँच से सात सदस्यों वाला समूह श्रेष्ठ रहता है'। संचार के अभिप्राय से प्रत्येक व्यक्ति एक–दूसरे को प्रभावित करता है और दूसरों से प्रभावित होता है। छोटे समूह अधिक अनौपचारिक, कम संरचनात्मक और अधिक भागीदारी वाले होते हैं। यदि समूह अत्यधिक बड़ा हो तो उन पर एक या दो व्यक्ति का एकाधिकार हो सकता है। भागीदारी को प्रभुता और नियंत्रण के द्वारा बदला जा सकता है। प्रत्यक्षता, तात्कालिकता और घनिष्ठता की मात्रा कम हो सकती है। इससे विचारों और दृष्टिकोण के मुक्त आदान–प्रदान पर भी प्रभाव पड़ता है।

हमारा कुछ श्रेष्ठ एवं सर्वाधिक प्रसन्नता वाला समय समूहों के साथ संचार में व्यतीत होता है जैसे, परिवार, समाज शैक्षिक समूह और कार्य समूह। किसी समूह से श्रेष्ठतम परिणाम प्राप्त करने के लिए लक्ष्य एकदम स्पष्ट होने चाहिए तथा सभी सदस्यों में उन्हें प्राप्त करने की इच्छा हो। सामाजिक समूहों का उद्देश्य मिल कर अच्छा समय व्यतीत करना हो

सकता है जबकि कार्य समूह का उद्देश्य अच्छे परिणाम प्राप्त करने वाले कार्य करना होता है।

भागीदारी और सूचनाओं का आदान–प्रदान करना किसी समूह की कार्यप्रणाली का आधार होता है। संचार का मूल अर्थ सामान्तया होता है और उसी समूह को सबसे अधिक श्रेष्ठ और सफल माना जाता है, जिसमें सर्वाधिक सामान्यता हो।

3.3.9 अनौपचारिक समूह में संचार

अनौपचारिक समूहों में संचार की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं:

1) यह सदस्यों के बीच संबद्धता बनाए रखने की कोशिश करता है।

2) समूह के नियम बनाए जाते हैं। डेनिस मौक्विल के अनुसार, समूह में जितने अधिक लोगों के बीच परस्पर संचार होगा उतना ही अधिक भागीदारी का नियम विकसित होने की संभावना होती है।

3) समूह द्वारा बनाए गए नियमों और मानकों का पालन करने के लिए समूह का दबाव होता है।

4) संचार की भिन्नता और तीव्रता पर वास्तविक दबाव होता है, जो समूह के आकार के संदर्भ में परिवर्तित होता रहता है (जितना बड़ा समूह होगा उतना ही वास्तविक नाम होगा)

5) स्थिति और परस्पर सम्मान में भिन्नता के अनुसार गुटबाजी, गठबंधन और मौर्चाबंदी को बढ़ावा मिलता है तथा नेतृत्त को भी उखाड़ दिया जाता है।

3.3.10 समूह चर्चा तथा संचार

समूह बैठकें तथा चर्चाएँ, संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों का एक अभिन्न अंग बन गई है। इनका प्रयोग भागीदारी बढ़ाने तथा विचार, विकास प्रक्रिया, योजनाओं, योजना संबंधी गतिविधियों या समस्या समाधान में भी प्रत्येक की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है। जब एक समूह में चर्चा का प्रभावी रूप से संचालन किया जाता है तो अनेक प्रकार के विचारों की उत्पत्ति होती है। साधारणतया लोग निर्णय और नियंत्रण प्रक्रिया में जनतांत्रिक और भागीदारी प्रक्रिया को अच्छा मानते हैं। लोग किसी व्यक्ति की अपेक्षा किसी समिति या समूह के द्वारा लिए गए निर्णयों को अधिक आसानी से स्वीकार करते हैं। व्यक्ति जब किसी चर्चा में भाग लेता है तथा प्रक्रिया के माध्यम से लिए गए निर्णयों को बहुत आसानी से स्वीकार कर लेता है।

प्रक्रिया अधिक समय व्यतीत करने वाली तथा खर्चीली हो सकती है। किसी निर्णय पर पहुँचने वाली प्रक्रिया के अनेक सत्र हो सकते हैं, जिसमें अत्यधिक समय व धन भी खर्च होता है। उद्देश्य एवं भागीदारों के आधार पर समूह में चर्चा अनेक प्रकार से आयोजित की जा सकती है।

3.3.11 समिति (Committee)

समिति एक छोटा समूह हो सकती है, जिसका गठन किसी उद्देश्य के लिए किया जाता है। समिति से किसी समस्या का अध्ययन करने, तथ्यों को एकत्रित करने, निर्णय करने, सामन्य निकाय की रिपोर्ट प्रस्तुत करने, अपनी सिफारिशों के सुझाव देने, परिवर्तनों के प्रभावों को बताने आदि की अपेक्षा की जाती है, जिसका वर्णन इसको आदेश पत्र देते समय किया जा सकता है। समिति का गठन, अल्पावधि के लिए किसी समस्या विशेष की जाँच या अध्ययन के लिए किया जा सकता है। सरकार ने भ्रष्टाचार के

आरोपों तथा दुर्घटनाओं आदि के अध्ययन के लिए समितियाँ गठित की हैं। संस्थाओं की कार्य प्रणाली की नियंत्रित या समीक्षा करने के लिए गठित समिति का समय एक या अधिक से अधिक दो वर्ष निर्धारित किया जा सकता है। (विद्यालय की प्रबंध समिति, वेतन संशोधन के लिए संसदीय समिति, संविधान समीक्षा समिति आदि) समिति का मुखिया कोई अध्यक्ष होता है।

3.3.12 सम्मेलन (Conference)

सम्मेलन समिति की अपेक्षा अधिक बड़ा समूह होता है इसलिए अधिक औपचारिक भी होता है। सम्मेलन अनेक प्रकार के लोगों को प्रभावित कर सकता है तथा इसमें भागीदारों के महत्त्वपूर्ण विषयों को शामिल किया जा सकता है। सम्मेलन की अवधि अधिक हो सकती है तथा इसमें दस्तावेज प्रस्तुत करने, मार्ग दर्शन, चर्चा तथा सुझाव आदि देने के लिए विशेषज्ञ हो सकते हैं। यदि भागीदारों की संख्या अत्यधिक हो तो उचित रूप से परस्पर संपर्क रखने के लिए सत्र या चर्चाएँ छोटे–छोटे समूहों में की जा सकती है।

3.3.13 समूह की बैठकें (Group Meetings)

बैठक आयोजित करने तथा सामूहिक चर्चाओं का संचालन करने के लिए आरंभिक निपुणताओं और तकनीकों को सीखा जा सकता है, जिनको इसका कुछ अनुभव है, उन्हें छोटे समूहों से कार्य आरंभ करना चाहिए।

3.3.14 समूह संरचना (गठन) (The Composition of the Groups)

समूह की संरचना तथा समूह के सदस्यों की योग्यता समूह में संचार की गुणवत्ता निर्धारित करने वाले महत्त्वपूर्ण घटक है। सदस्यों के एक जैसे

उद्देश्य होने चाहिए तथा चर्चा करने वाले विषयों में एकरूपता होनी चाहिए। फिर भी समूह में समाज या जनता के विभिन्न वर्गों का अच्छा प्रतिनिधित्व होना चाहिए, जिनका विषय से संबंध हो, समूह को बैठक की कार्यसूची, उद्देश्य तथा प्राप्य लक्ष्यों के बारे में संक्षिप्त रूप से पहले सूचित किया जाना चाहिए।

3.3.15 बैठक का अध्यक्ष

बैठक के अध्यक्ष (chairperson) या समूह के नेता का समूह के प्रति कुछ दायित्व होता है। बैठक का सही संचालन करने के लिए उसका स्वभाव शांत होना चाहिए तथा उसे निपुण एवं ज्ञानवान होना चाहिए। उसमें निम्नलिखित गुण और कौशल होने चाहिएः

- चर्चा को प्रोत्साहित करे तथा सबको अपने विचार और राय प्रकट करने के लिए सुनिश्चित करे।
- जब कोई सदस्य असहमति प्रकट करता है तो उसे नाराजगी के रूप में न माना जाए।
- ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जहाँ प्रत्येक सदस्य मुक्त भाव से अपनी बात कर सकें तथा उसको ध्यान से सुना जाए।
- अध्यक्ष को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी व्यक्ति ध्यान से श्रवण (सुने) करें तथा किसी सदस्य के भाषण के समय शांति एवं व्यवस्था बनी रहे।
- मूल भावना को सुनिश्चित करें।
- समूह के नेता को समय प्रबंध में निपुण होना चाहिए। सत्रावधि अनावश्यक रूप से अधिक न हो। चर्चाधीन विषय के लिए अधिक

समय आवश्यक हो तो बीच में अंतराल होना चाहिए। यदि आवश्यक हो तो और बैठक आयोजित की जा सकती हैं। ऐसे निर्णयों के लिए समूह के सदस्यों की राय लेना अच्छा रहता है।

- समूह के नेता या अध्यक्ष को अपनी बात भी कहनी चाहिए।
- समूह में अनौपचारिकता को बढ़ावा देना चाहिए। ,
- स्थिति नियंत्रण से बाहर होने पर भी शांति एवं धैर्य बनाए रखना चाहिए।
- दूसरे सदस्यों के विचार सुनने के लिए अन्य सदस्यों को आमंत्रित करना चाहिए।
- मुक्त रूप से प्रकट किए गए किसी भी सदस्य के विचारों पर टीका–टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। किसी भी प्रकार से भेदभाव या पक्षपात करने से बचना चाहिए।
- प्रत्येक को विशेषतः संकोची एवं पीछे रहने वाले व्यक्तियों की प्रशंसा करनी चाहिए।
- नेता का यह कर्त्तव्य है कि वह देखे कि समूह मुख्य विषय से विषयांतर न हो। फिर ही आरंभिक अभ्यास या अनौपचारिक संपर्क की अनुमति दी जा सकती है। विशेषतः अच्छी घनिष्ठता तथा वातावरण से परिचित होने के लिए आरंभ में यह किया जा सकता है।
- नेता को या किसी अन्य को चर्चा के कार्यवृत्त या महत्त्वपूर्ण विचारों को लिखना चाहिए।

- बैठक का समापन होने से पूर्व चर्चा के मुख्य बिन्दुओं का सारांश बनाना चाहिए तथा अध्यक्ष द्वारा समूह को संबोधित किया जाना चाहिए।

यदि बैठकें नियमित रूप से होती रहें तो परंपरा के रूप में पिछली बैठक के कार्यवृत्त की चर्चा तथा उसका अनुमोदन होना चाहिए। यदि इसमें कुछ संप्रेषित किया जाना है तो यह सत्र के आरंभ या अंत में होना चाहिए।

3.3.16 मूर्त / व्यवहारिक व्यवस्था (Physical Arrangements)

प्रभावशाली भागीदारी के लिए बैठक में व्यवहारिक व्यवस्था करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। व्यवस्था भागीदारों की संख्या तथा बैठक की प्रकृति के अनुसार भिन्न–भिन्न हो सकती है। बड़े सम्मेलनों में सदस्य ऑडिटोरियम की तरह बैठ सकते हैं। यद्यपि बोलने के लिए प्रत्येक सदस्य को माइक प्रदान किया जाता है तो भी ऐसी बैठकें औपचारिक बन जाती है तथा प्रत्येक सदस्य का भाषण अलग किया जाता है। यद्यपि व्यवस्था औपचारिक सत्र के लिए उपयोगी हो सकती है तो भी यह अनौपचारिक चर्चा के लिए कम उपयुक्त मानी जाती है। इसमें आमने–सामने का संपर्क कम होता है।

इस प्रकार प्रभावशाली भागीदारी के लिए बैठने की व्यवस्था सीधी पंक्ति की अपेक्षा गोलाकार रूप में होनी चाहिए। जब सदस्य गोलाकार रूप में बैठते हैं तो उनकी दृष्टि का मिलान होता है, वे शरीर की भाषा तथा विचारों को अधिक भली–भांति समझते हैं। गोलमेज, घेरे में लगी घूमने वाली कुर्सियाँ, यदि सचल हो तो अच्छी मानी जाती हैं। कमरे में प्रकाश तथा स्वच्छ वायु की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए।

3.3.17 दृश्य उपकरण (Visual Aids)

समूह बैठक को दृश्य उपकरणों जैसे बोर्ड, ऊँचे स्थान पर प्रदर्शन या स्लाइड प्रोजेक्टरों, चार्टों, नक्शों, चित्रों आदि से और अधिक सजीव बनाया जा सकता है। यह तभी उपयोगी है जब चर्चा में इनका योगदान हो।

3.3.18 बैठक का समापन (Concluding a Meeting)

बैठक के अध्यक्ष को, बैठक के अंत में यदि कोई महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर चर्चा हुई है, तो निष्कर्ष के रूप में उनका सार प्रस्तुत करना चाहिए। उसे बैठक में उपस्थित होने तथा चर्चा में भाग लेने के लिए समूह के सदस्यों का धन्यवाद भी अदा करना चाहिए।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) बेकर के अनुसार समूह क्या है?

....

....

....

....

....

……………………………………………………………………………………………

2) नेतृत्व कितने प्रकार का होता है? आप किसे अच्छा मानते है?

……………………………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………………………

3) समूह बैठक के सफलतापूर्वक संचालन के लिए तीन आवश्यकताएँ बताइए।

……………………………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………………………

3.4 जन संचार

3.4.1 परिभाषा

जन संचार की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है कि इसके द्वारा उपभोक्ताओं को अपेक्षाकृत कम खर्च पर पुर्नप्रसारण एवं वितरण के तीव्र साधनों के माध्यम से जनमानस को संदेश पहुँचाया जाता है।

जन संचार में संदेश मूल स्रोत से समाचार पत्र और पुस्तकों, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, इंटरनेट आदि मध्यवर्ती जैसे माध्यमों के द्वारा विस्तृत एवं जनमानस या ग्रहणकर्त्ताओं तक प्रेषित किया जाता है।

एम्री के अनुसार ''जनसंचार उद्देश्य से विकसित किए गए मीडिया के उपयोग द्वारा अधिकांश और विभिन्न प्रकार के श्रोताओं को सूचना, विचार और दृष्टिकोण का संचार करना है।''

3.4.2 जन संचार के घटक

मीडिया के निम्नलिखित घटक होते हैं:

– अपेक्षाकृत व्यापक जनसमूह होता है।

– मुख्यतः एक जैसी जनसमूह संरचना होती है।

– संदेश पुनः प्रसारण का यही रूप होता है।

– शीघ्र वितरण एवं संचार होता है।

– ग्रहणकर्त्ता/ग्राहक को कम खर्च करना पड़ता है।

– तकनीक उपयोगः मुद्रण, बिजली, इलेक्ट्रॉनिक्स, उपग्रह आदि।

– भौगोलिक सीमाओं के बाहर सुदूर क्षेत्रों और विस्तारित जनसमूह तक संचरित या वितरित किया जाता है।

जन संचार में अर्न्तव्यैक्तिक एवं समूह संचार के अनेक लाभों का अभाव होता है जैसे व्यक्तिगत ध्यान, आमने–सामने संपर्क, दृष्टि मिलान, तत्कालीन फीडबैक, पुनरावृति आदि। प्रकृति के अनुसार जन संचार व्यैक्तिक नहीं होता।

3.4.3 एस. एम. सी. आर. (SMCR)

हमने पिछली इकाइयों में संचार के चार महत्त्वपूर्ण घटकों अर्थातः स्रोत, संदेश, माध्यम और ग्रहणकर्त्ता (एम. एस. सी. आर.) के बारे में चर्चा की है।

जन संचार में इन चारों घटकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका का एक कार्य है।

स्रोत, कोई व्यक्ति जैसे राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्र को संबोधन, या कोई संस्था या मीडिया संगठन जैसे समाचार पत्र संस्था, या दूरदर्शन केंद्र।

संचार और वितरण के लिए प्रयुक्त मीडिया के प्रकार द्वारा संदेश का निर्णय किया जाता है। किसी घटना की समाचार पत्र की रिपोर्ट टेलीविजन या रेडियो पर प्रस्तुत की जाने वाली रिपोर्ट से एकदम भिन्न होती है। यद्यपि संदेश का मूल सार तो वही होता है तो भी जन संचार के प्रत्येक माध्यम की अपनी विशेषताएँ होती हैं।

जन संचार में माध्यम (चैनल) का अत्यधिक महत्त्व होता है। यद्यपि माध्यम (चैनल) जन संचार के उपकरण होते हैं तो भी गलती से उन्हें संचार के रूप में मान लिया जाता है। आधुनिक मीडिया जैसे समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन आदि संदेश को कई गुणा व्यापक बना देते हैं तथा अत्यधिक गति से विशाल जनसमूह तक पहुँचा देते हैं। समय और स्थान की

सीमाओं को दूर करने की योग्यता के कारण मार्शल मैकलन ने आज विश्व को 'वैश्विक गाँव'' (**Global Village**)' कहा है।

माध्यमों (Channel) को मोटे तौर पर, मुद्रित मीडिया तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दो भागों में बाँटा जाता है। फिर भी मुद्रण इलेक्ट्रॉनिक लागू करने और समाचारों के शीघ्र वितरण तथा उपग्रह एवं इंटरनेट का प्रयोग करने से मुद्रित मीडिया तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया के बारीक अंतर को बहुत कम कर दिया है।

ग्रहणकर्त्ता कुछ सामान्य विशेषताओं जैसे सामान्य हितों और आवश्यकताओं वाला ऐसा व्यापक जनसमूह होता है, जो परस्पर संपर्क न होने के कारण अनजान या अव्यैक्तिक होता हैं। जन संचार मीडिया का मुख्य लाभ अल्पावधि में व्यापक जनसमूह तक संदेश पहुंचाने की योग्यता है। इसका मुख्य अवगुण उसी संचार का प्रभाव जानने और प्रतिक्रिया की जाँच करने की तथा फीडबैक एकत्रित करने की असमर्थता है।

3.4.4 जन संचार के कार्य

जन संचार मीडिया हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इस प्रकार गुंथा हुआ है कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसके कार्यों को पहचानना आसान नहीं है। समाज में मीडिया के कार्यों को समझने के लिए हमें सावधानीपूर्वक यह देखना होगा कि लोग क्यों और कैसे. समाचार पत्र पढ़ते हैं, टेलीविजन देखते हैं, रेडियो सुनते हैं या सिनेमा देखते हैं। हम जनसमूह में विभिन्न मुख्य कार्यों का मिलान कर सकते हैं और इस बात का भी पता लगा सकते हैं कि विभिन्न कार्यों के लिए लोग मीडिया को कैसे प्रयोग करते हैं। इसे 'कार्यात्कम दृष्टिकोण' कहा जाता है।

जन संचार के कार्यों की समीक्षा करने के लिए हमारा अध्ययन लोगों द्वारा मीडिया के प्रति व्यवहार तक सीमित नहीं होना चाहिए अपितु यह देखना चाहिए कि मीडिया लोगों के लिए क्या करता है, कैसे वह लोगों के विचारों, दृष्टिकोणों, संस्कृति तथा आदतों आदि को प्रभावित करता है। इसे प्रभावी दृष्टिकोण' कहा जाता है। समाज वैज्ञानिकों को इन दोनों प्रक्रियाओं को देखना होता है।

संचार के सामाजिक कार्यों के प्रति ध्यान आकर्षित करने वाला एक प्रथम विद्वान था हेरोल्ड लासबेल। उन्होंने इन कार्यों को आरंभ में समाज में पाई जाने वाली श्रेणियों के अर्थ में समझा। उन्होंने किसी भी समाज में आमतौर पर पाए जाने वाले तीन प्रकार के कार्यों की पहचान की।

1) वातावरण पर निगरानी रखना (**Surveillance of the Environment**)

मीडिया प्रहरी के रूप में भी कार्य करता है, कुछ लोग 'सूचना देने वाले' शब्द का भी प्रयोग करते हैं। सार्वजनिक मीडिया जनता के कान और आँख और आवाज के रूप में कार्य करता है। हम उनकी रिपोर्टों को स्वीकार करते हैं और अपने विचार, दृष्टिकोण और कार्यवाही निर्धारित करने के लिए आधार बनाते हैं। उदाहरण के लिए, विज्ञापन हमें नए उत्पादों की जानकारी देता है। क्रय संबंधी निर्णय करने में वह ग्राहक की सहायता करते हैं।

व्यैक्तिक स्तर पर वातावरण की निगरानी रखने वाला मीडिया का कार्य आत्म सम्मान में वृद्धि करना है। सामाजिक संपर्क का आधार प्रदान करता है। ज्ञान और सूचनाएँ प्रदान करता है। सामाजिक स्तर और सम्मान प्रदान करता है।

2) परस्पर संबद्ध (**Correlation**)

लासवैल के अनुसार जन संचार का समाज के लिए दूसरा कार्य, संपूर्ण समाज की प्रतिक्रिया का वातावरण के साथ संबंध स्थापित करना है अर्थात् लोक दृष्टिकोण (जनमत) का विकास करना है। संचार मुख्य विषयों पर समाज में सर्वसम्मति बनाने में सहायता करता है। स्वस्थ जनतंत्र के लिए सूचित या प्रबुद्ध विचार आवश्यक हैं।

3) सामाजिक धरोहर का संचार (**Transmission of Social Inheritance**)

आज मीडिया ने सामाजिक धरोहर का कार्य भी संभाल लिया है, जो अभिभावकों, अध्यापकों और बड़ों द्वारा की जाती थी। आज मीडिया समाज को संदर्भ के मुख्य आकार प्रदान करता है। आधुनिकीकरण, अपेक्षाकृत गुमनामी, सामाजिक उजाड़ और संयुक्त परिवार, वंश जैसी पारम्परिक सामाजिक संस्थाओं से विचलन ने ज्ञान और मूल्यों के वाहक (संचारकर्त्ता) के रूप में मीडिया की भूमिका में वृद्धि की है। आज मीडिया के लिए सामाजिकीकरण और सामाजिक धरोहर के संचारण का कार्य करना अनिवार्य हो गया है।

4) जन संचार से संबंधित दुष्क्रिया (**Dysfunctions**)

लासवैल ने माना है कि जन संचार समाज के लिए हानिकारक तथा लाभदायक भी हो सकता है। ऐसे शासक या सरकारें जिन्हें जनमत का भय हो या निरंकुश शासक सूचना को रोक सकते हैं या यहीं तक कि गलत सूचना, झूठे प्रचार के माध्यम से लोगों को बहका भी सकता है। जन संचार मीडिया पर मुकदमा चलाने की अयोग्यता या सूचना की दक्षता

या प्रभावशाली ढंग से संसाधित न करने के कारण भी वह अनुचित कार्य कर सकता है। लोग अनेक उद्देश्यों के लिए मीडिया का प्रयोग करते हैं। जन संचार मीडिया के द्वारा किए जाने वाले कुछ कार्य निम्नलिखित हैं:

– कुछ निश्चित तरीकों से कार्य करने के लिए लोगों को समझाना,

– सूचना की आवश्यकता पूरा करना,

– मनोरंजन करना,

– सच्चाई से बचना (सिनेमा काल्पनिक होता है),

– मानसिक तनाव तथा नीरसता समाप्त होना (अरस्तु का भाव विवेचन),

– सुरक्षा तथा पुनः आश्वासन,

– साहचर्य,

– सामाजिक पारस्परिक क्रिया, स्तर,

– सामाजिक परिवर्तन तथा रूपांतरण,

– राजनीतिक व्यवस्था तथा सरकार के कार्य को समझना,

– स्थिरता बनाए रखना,

– यथावत् स्थिति बनाए रखना,

– सामाजिक नियमों को दृढ़ बनाना

– सामाजिक प्रणाली को दुरुस्त रखना,

– आर्थिक प्रणाली को दुरुस्त रखना,

– सामाजिक संबद्धता को संभव बनाना, एवं

– समाज की स्वयं व्याख्या करना।

जन संचार मीडिया हमारे समाज के लिए अनेक कार्य करता है। एक अर्थ में, यह समाज या कबीले की समकालीन अभिव्यक्ति है। जन संचार मीडिया ने व्यक्तियों और समाज के लिए भी नए संबंधों और नई पहचान स्थापित की है। आज मीडिया अच्छे रूप में निर्णय करता है कि कौन तथा क्यों कोई महत्त्वपूर्ण है? कोई भी सामाजिक व्यवस्था जन संचार की अनदेखी नहीं कर सकती, जो आज समाज पर विशेषतः शहरी समाज पर शक्तिशाली हुकूमत करता है। मीडिया के कार्य समाज के हर क्षेत्र में फैले हुए हैं, जैसे राजनैतिक और सरकार, आर्थिक गतिविधियाँ व्यापार एवं उद्योग आदि। विज्ञापन इच्छाएँ जगाते हैं, नई आवश्यकताएँ पैदा करते हैं तथा उत्पादों एवं सेवाओं में सुधार लाते हैं। मनोरंजन मीडिया समाज के मूल्यों और नियमों की पुनः व्याख्या करता है।

सार्वजनिक मीडिया आज मानव जीवन में इस प्रकार प्रवेश कर चुका है कि उसके बिना जीवन के बारे में सोचना लगभग असंभव है। फिर भी, यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि मीडिया के कार्य मुख्यतः मीडिया क्या है या क्या करता है? के कारण नहीं है अपितु इसलिए है कि हम और हमारा समाज मीडिया का किस प्रकार उपयोग करता है।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) जन संचार मीडिया के तीन घटक बताइए।

....

....

....

....

....

....

2) संचार के जन संचार मीडिया द्वारा किए जाने वाले पाँच कार्य बताइए।

....

....

....

....

....

....

3) मीडिया के कार्य और मीडिया के प्रभावों में क्या अंतर है?

....

....

....

....

....

....

4) ''वैश्विक गाँव' अभियक्ति किसने दी है? और इसका का अर्थ है।

....

....

....

....

....

....

3.5 सारांश

इस इकाई में हमने संचार के तीन विभिन्न प्रकारों अर्थात् अर्न्तव्यैक्तिक, समूह तथा जन संचार के बारे में अध्ययन किया है। यद्यपि हम अति उच्च परिष्कृत मीडिया संसार में रह रहे हैं जहाँ संचार की गति मस्तिष्क को हिलाने वाली गति से आगे बढ़ गई है तो भी पारस्परिक मानव संपर्क के मूल सिद्धांत कमोबेश अपरिवर्तित हैं। यद्यपि सार्वजनिक मीडिया सर्वाधिक प्रभावशाली संचार साधन होने का अहसास कराता है तो भी अनुभव बताते हैं कि हमारा अधिकांश दैनिक संचार तभी होता है जब हम परस्पर

व्यैक्तिक रूप से मिलते हैं। अतः हम सार्वजनिक और समूह संचार की जड़ें अन्तर्वयक्तिक संचार में पाते हैं। चूँकि अब हम सूचना युग की वास्तविकता को नकार नहीं सकते, अतः हमें वर्णित तीनों प्रकार के संचार को एक दूसरे का विरोधी न मानकर पूरक मानते हुए विचार करना होगा। हमें यह सुनिश्चित करने के लिए निरंतर सजग एवं समझदार होने की आवश्यकता है कि हमारे लिए मीडिया द्वारा किए जाने वाले कार्य तथा हमें प्रभावित करने का उनका ढंग हमारे कल्याण के लिए हो। यह निर्णय हमें करना है कि हम जन संचार मीडिया के स्वामी होना चाहते हैं या उसके दास।

4.6 शब्दावली

द्विकीय (Dyadie) : दो व्यक्तियों के बीच होने वाला संचार।

अन्र्तव्यैक्तिक : संचार प्रक्रिया में शामिल दो या अधिक व्यक्ति।

शरीर की भाषा : संचार को प्रभावशाली बनाने के लिए शब्दों के साथ शरीर के हाव–भावों का प्रयोग करना जैसे नृत्य और लोकनृत्य में कुछ शारीरिक क्रियाओं और संकेतों का अर्थ निश्चित है।

आरंभिक समूह : आरंभिक समूह का अर्थ है वह समूह जिसमें सदस्य परस्पर प्रगाढ़ रूप से संबंधित होते हैं जैसे, परिवार।

परवर्ती समूह : इसमें संबंध औपचारिक एवं अव्यैक्तिक होते हैं जैसे राजनीतिक दल व ट्रेड यूनियनें आदि।

स्वेच्छा : व्यक्ति की अपनी इच्छा। कुछ समूहों की सदस्यता जन्म से ही हो जाती है जैसे जाति, देश आदि। लेकिन कुछ अन्य समूह हैं,

जिनका सदस्य होना या न होना इच्छा पर है जैसे राजनैतिक दल या क्लब आदि।

जनसमूह : अत्यधिक संख्या में लोग, जैसे टेलीविजन या रेडियो अथवा समाचार पत्र का प्रयोग करने वाले।

कुलीन मीडिया : इसका अर्थ है सामाजिक या आर्थिक रूप से संपन्न। उच्च वर्ग या समूह द्वारा प्रयोग किया जाने वाला मीडिया। मीडिया तक पहुँचाने वाले तथा जिसकी मीडिया तक पहुँच नहीं है के बीच अंतर स्पष्ट करने के लिए हम 'साधन सम्पन्न सूचना' और 'साधनहीन सूचना' शब्दों का प्रयोग करते हैं।

3.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

मेल्विन एल. डिफ्ल्यूर–एवरेटी इन डेविस (1991), अंडरस्टैंडिंग मास कम्युनिकेशन, गोयल साब, नई दिल्ली।

सबीर घोष (1996), मास कम्युनिकेशन टुडे इन द इंडियन कांटेक्सट, प्रोफाइल पब्लिशर्स।

केवल जे. कुमार (1981), मास कम्युनिकेशन इन इंडिया, जयको पब्लिशिंग हाऊस, मुंबई।

डे प्रदीप कुमार (1993), परस्पेक्टिव इन मास कम्युनिकेशन, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

डेस मॉड, ए. डी. एब्रियो (1994), द मॉस इंडिया एंड यू. बैटर यू आर सेल्फ बुक, मुम्बई।

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) अर्न्तव्यैक्तिक संचार वह है, जिसमें दो व्यक्तियों के बीच या एक व्यक्ति तथा समूह के बीच संचारण होता है। जब संचार दो व्यक्तियों के बीच होता है तो उसे द्विकीय संचार कहा जाता है। अर्न्तव्यैक्तिक संचार प्रत्यक्ष होता है तथा इसके बीच में किसी संचार प्रौद्योगिकी की आवश्यकता नहीं होती।

2) अर्न्तव्यैक्तिक संचार द्वारा मित्र, प्रेमी, सहकर्मी, अधिकारी, पड़ोसी तथा पारिवारिक सदस्यों के रूप में अपनी पहचान बना सकते हैं। अर्न्तव्यैक्तिक संचार समाज के लोगों को सही स्थिति में बनाए रखता है, जिससे सामाजिक स्वीकृति मिलती है। इस प्रकार नीरसता एवं एकाकीपन से छुटकारा मिलता है।

   यह दूसरों के साथ अपने लक्ष्य पूरे करने में सहायता करता है। अर्न्तव्यैक्तिक संचार सहयोग एवं योगदान का आधार तैयार करता है, जिससे हम अपने इच्छित उद्देश्य पूरे कर सकते हैं।

   इससे लोगों को परस्पर सामाजिक क्रिया के नियम जानने एवं उनका पालन करने में सहायता मिलती है।

3) अर्न्तव्यैक्तिक संचार में बाधा डालने वाले तथ्यों में सामाजिक या सांस्कृतिक पूर्वाग्रह धार्मिक संबद्धताओं के कारण लोगों को प्रभावित करने वाली श्रेष्ठ, हीन भावनाएँ अपने बारे में सांस्कृतिक विश्वास, आर्थिक स्तर, जातीय पहचान, आदि शामिल हैं। भारत में जाति प्रथा और जातीय वर्णक्रम विभिन्न जाति क्रम के लोगों के बीच प्रभावशाली अर्न्तव्यैक्तिक संचार में रुकावट डाल सकते हैं।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

4) श्रवण संचार का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। श्रवण निपुणताएँ प्रशिक्षण द्वारा सीखी जा सकती हैं। श्रवण में वक्ता के शब्दों को सुनना ही नहीं है उसके अर्थ को ग्रहण करना भी होता है। अर्थ श्रोता द्वारा निकाला जाता है, जिसमें वक्तव्य के दौरान भंगिमाओं चेहरे के हाव–भाव, चुप्पी या ठहराव या आवाज में परिवर्तन आदि की तरफ ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

कुशल श्रवण से तनावों व मतभेदों में कमी आ सकती है तथा कर्मचारियों में नैतिक चरित्र एवं उत्साह का विकास किया जा सकता है।

बोध प्रश्न II

1) बेकर के अनुसार, एक समूह अनेक ऐसे लोगों से बनता है, जिनका एक ही लक्ष्य होता है तथा लक्ष्य प्राप्ति के लिए वे परस्पर एक–दूसरे से विचार विमर्श करते हैं, एक दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं तथा स्वयं को समूह का एक अंग मानते हैं।

2) नेतृत्व की तीन मुख्य शैलियाँ हैंः जनतांत्रिक, निरंकुश या आधिकारित तथा निष्क्रिय । चूँकि जनतांत्रिक प्रकार का नेतृत्व भागीदारी, मार्ग दर्शन तथा सामंजस्य साझे लक्ष्य के लिए कार्य करता है इसलिए इसको सर्वाधिक पसंद किया जाता है।

3) सफल सामूहिक बैठक के लिए तीन अपेक्षाएँ हैंः

बैठक के लिए सक्षम अध्यक्ष,

बैठने की अच्छी व्यवस्था, वृत्ताकार रूप में बैठने का बेहतर प्रबंध, तथा

श्रव्य एवं दृश्य उपकरणों का प्रयोग।

बोध प्रश्न III

1) जन संचार मीडिया के निम्नलिखित घटक होते हैंः

विशाल जनसमूह (जनता) तकनीक का प्रयोग जैसे मुद्रण, विद्युत, इलेक्ट्रॉनिक्स, उपग्रह, शीघ्र वितरण एवं प्रेषण।

2) लोग अनेक प्रकार के उद्देश्यों के लिए मीडिया का प्रयोग करते हैं। इसके द्वारा किए जाने वाले पाँच कार्य इस प्रकार हैंः

– एक निश्चित तरीकों से कार्य करने के लिए लोगों को राजी करना,

– सूचना की आवश्यकता को संतुष्ट करना,

– मनोरंजन प्राप्त करना,

– परस्पर सामाजिक संपर्क स्तर, तथा

– राजनैतिक व्यवस्था एवं सरकार के कार्यप्रणाली को समझना

3) 'मीडिया के कार्यों' से हमारा अभिप्राय है जनता के संदर्भ में उसके द्वारा किए जाने वाले कुछ कार्य जैसे मनोरंजन की आवश्यकता, बचाव तथा परस्पर सामाजिक संपर्क। मीडिया प्रभाव से हमारा अभिप्राय हमें प्रभावित करने वाली प्रक्रिया से है। यह बताता है कि मीडिया हमारे लिए क्या करता है। समाज पर मीडिया के प्रभाव को उपयुक्त रूप से समझने के लिए हमें मीडिया के कार्य तथा प्रभाव दोनों को समझने की आवश्यकता है।

4) वैश्विक गाँव' की अभिव्यक्ति सामाजिक संचार के एक अग्रणी विद्वान मार्शल लैकलुअन द्वारा दी गई है। इसका अर्थ है कि संचार की आधुनिक तकनीक के साधनों द्वारा विश्व को एक गाँव के रूप में समझना संभव है। हम विश्व के किसी भी भाग में लोगों के साथ

संपर्क कर सकते हैं और वह भी तत्काल। इस प्रकार संसार एक गाँव की तरह बन गया है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 4 स्वास्थ्य संचारः क्षेत्र तथा चुनौतियाँ*

*डॉ. एम. तिनेश्वरी देवी

रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 परिचय

4.2 स्वास्थ्य संचार क्या है?

4.3 स्वास्थ्य संचार के कार्य

4.4 स्वास्थ्य संचार के प्रतिदर्श

4.5 स्वास्थ्य संचार का क्षेत्र

4.6 स्वास्थ्य संचार की चुनौतियाँ

4.7 सारांश

4.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के पूर्ण होने के बाद, आप सक्षम होंगेः

- स्वास्थ्य संचार और इसके कार्य की व्याख्या करने में;

---

* डॉ. एम. तिनेश्वरी देवी, असम यूनीवर्सिटी, सिलचर।

- स्वास्थ्य संचार के विभिन्न प्रतिदर्शों का वर्णन करने में;
- स्वास्थ्य संचार के क्षेत्र को स्पष्ट करने में; तथा
- स्वास्थ्य संचार की चुनौतियों को समझने तथा सरोकारों को स्पष्ट करने में।

4.1 परिचय

अंतर्राष्ट्रीय संचार संगठन ने औपचारिक रूप से 1975 में स्वास्थ्य संचार को औपचारिक रूप से मान्यता प्रदान की, 1997 में, अमेरिकन पब्लिक हैल्थ एसोसिएशन ने स्वास्थ्य संचार को जन स्वास्थ्य शिक्षा तथा स्वास्थ्य संवर्धन को वर्गीकृत किया। सफल जन स्वास्थ्य अभ्यास हेतु संचार प्रत्येक स्तरः ृअंतःव्यैक्तिक, अर्न्तव्यैक्तिक, समूह, संगठन तथा समाज– पर आवश्यक है। लक्ष्य श्रोता तक संदेश की सर्वोत्तम पहुँच बनाने हेतु उपयुक्त माध्यम की सावधानी पूर्वक विवेचना की जानी चाहिए, आमने–सामने की अर्न्तक्रिया से लेकर टेलीविजन, इण्टरनेट तथा मास मीडिया के अन्य रूपों तक। इस प्रकार संचार सूचना के आदान–प्रदान से कहीं अधिक है।

4.2 स्वास्थ्य संचार क्या है?

स्वास्थ्य संचार लोगों को उनके स्वास्थ्य के विषय में चयन के करने के बारे में सूचना देने तथा प्रभावित करने हेतु संचार रणनीतियों का अध्ययन तथा उपयोग है। संदेशों को मास मीडिया, प्रकाशन सामग्रियों, सोशल मीडिया तथा आमने–सामने की बातचीत द्वारा फैलाया जाता है।

हैल्दी पीपल 2010 दिशा–निर्देशों के अनुसार, स्वास्थ्य संचार व्यैक्तिक तथा समुदाय निर्णयों जो स्वास्थ्य का संवर्धन करें, के बारे में सूचना देने तथा प्रभावित करने के लिए संचार रणनीतियों के उपयोग तथा अध्ययन को शामिल करता है। यह संचार तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र को सम्बद्ध करता है। स्वास्थ्य संचार, स्वास्थ्य

तथा स्वास्थ्य देखभाल के सम्बन्ध में व्यैक्तिक तथा समुदाय ज्ञान, मनोवृत्तियों तथा अभ्यासों (KAP) के बारे में सूचना देने तथा प्रभावित करने की संचार रणनीतियों के अध्ययन तथा उपयोग को शामिल करता है।

संचार तथा स्वास्थ्य के मध्य अन्र्तसम्बन्ध होता है, जिसे व्यैक्तिक तथा जन स्वास्थ्य में सुधार करने के लिए एक आवश्यक तत्त्व के रूप में व्यापक मान्यता मिली है। स्वास्थ्य संचार को प्रायः स्वास्थ्य शिक्षा के समानार्थी रूप में उपयोग किया जाता है, जो रोग निवारण तथा स्वास्थ्य संवर्धन के सभी पक्षों में योगदान कर सकता है।

स्वास्थ्य पेशेवरों तथा रोगियों की प्रभावी संप्रेषण दक्षताओं में प्रशिक्षण के माध्यम से अस्पताल तथा अन्य स्वास्थ्य स्थापनों में अन्र्तव्यैक्तिक तथा समूह अन्र्तसम्पर्क में सुधार हुआ है, जैसे प्रदाता तथा रोगी, प्रदाता और प्रदाता और स्वास्थ्य देखभाल टीम के अन्य सदस्यों के बीच इस प्रकार, जन शिक्षा अभियानों के माध्यम से स्वास्थ्य संदेश स्वास्थ्य व्यवहारों को प्रोत्साहित करने, जागरूकता उत्पन्न करने दृष्टिकोण परिवर्तित करने तथा संस्तुत व्यवहारों को अपनाने हेतु लोगों को प्रेरित करने के लिए सामाजिक वातावरण में परिवर्तन करने हेतु सहायता कर सकता है।

जन स्वास्थ्य को संवर्धित करने के लिए स्वास्थ्य संचार एक स्वीकृत उपकरण बन गया है। स्वास्थ्य संचार सिद्धान्त आज प्रायः स्वास्थ्य मुद्दों हेतु पक्षकारिता करने, स्वास्थ्य योजनाओं तथा उत्पादों का विपणन करने, मेडीकल देखभाल अथवा उपचार चयनों के बारे में रोगियों को शिक्षित करने, तथा स्वास्थ्य देखभाल गुणवत्ता मुद्दों के विषय में उपभोक्ताओं को शिक्षित करने सहित विभिन्न रोग निवारण तथा नियंत्रण रणनीतियों के लिए उपयोग किया जाता है (यू.एस.ऑफिस ऑफ डिजीज प्रिवैन्शन एण्ड कंप्यूटर आधारित मीडिया की उपलब्धता से स्वास्थ्य

सूचना तथा इन नये उपकरणों के प्रभावी उपयोग तक पहुँच का विस्तार हो रहा है।

4.3 स्वास्थ्य संचार के कार्य

1. परिचय

स्वास्थ्य संचार का मुख्य कार्य, लोगों को स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान अथवा जानकारी प्रदान करना तथा यह बताना है कि स्वास्थ्य की देखभाल तथा संवर्धन कैसे किया जाए। इस प्रकार जानकारी लोगों तक आसानी से पहुँचनी चाहिए ताकि हम अज्ञानता, पूर्वधारणा तथा दुराग्रहों के उन सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक अवरोधों को हटा सके अथवा उन्मूलन कर सके, जो व्यक्ति स्वास्थ्य मामलों के विषय में रख सकते हैं, इस हद तक लोगों की जागरूकता बढ़ा सके; तथा इस सीमा तक लोगों को प्रभावित कर सके कि अनाभूत आवश्यकताएँ अनुभूत आवश्यकताएँ बन सके तथा अनुभूत आवश्यकताएँ माँग बन सके (पार्क, 2015) इससे मिथकों तथा गलतफहमियों का खंडन करने में सहायता मिलेगी।

2) शिक्षा

शिक्षा स्वास्थ्य तथा रोग समस्याओं के प्रति निवारकोन्मुखी दृष्टिकोण अपनाने में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समस्त प्रकार की शिक्षा का आधार सम्प्रेषण होता है। स्वास्थ्य शिक्षा जीवन शैलियों में तथा व्यक्ति के संकट तत्त्वों में परिवर्तन कर सकती है। यह जानकारी बढ़ाने में तथा वांछित व्यवहार पैटर्न का दृढ़ीकरण करने में सहायता कर सकती है। यह एक स्वास्थ्य मुद्दे, समस्या, अथवा समाधान के बारे में जानकारी तथा जागरूकता भी बढ़ा सकता है, जो अवधारणाओं, विश्वासों, मनोवृत्तियों तथा सामाजिक मानकों को प्रभावित करता है।

अल्मा–एटा घोषणापत्र, 1978 ने स्वास्थ्य शिक्षा की अवधारणा प्रदान की, कि स्वास्थ्य शिक्षा है:

- स्वस्थ जीवन शैली को प्रोत्साहन।
- जिस सामाजिक वातावरण में व्यक्ति रहता है, उसमें परिवर्तन।
- समुदाय वातावरण
- व्यक्तिगत तथा समुदाय आत्म–विश्वसनीयता को प्रोत्साहन।

स्वास्थ्य शिक्षा के मुख्य उद्देश्य तथा लक्ष्य निम्नलिखित है:

अ) स्वास्थ्य संवर्धन जीवन–शैलियों तथा अभ्यासों को अपनाने तथा अभ्यासों को अपनाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करना।

आ) उपलब्ध स्वास्थ्य समस्याओं के उचित उपयोग को प्रोत्साहित करना।

इ) उनकी अपनी समस्याओं का समाधान करने के लिए रूचि उत्पन्न करना, नया ज्ञान प्रदान करना, दक्षताओं में सुधार करना तथा तार्किक निर्णय लेने हेतु दृष्टिकोण में परिवर्तन करना।

ई) समस्याओं की पहचान करने से लेकर समाधान करने तक प्रत्येक कदम पर व्यक्तिगत तथा समुदाय समाधान के माध्यम से स्वास्थ्य वातावरण प्राप्त करने हेतु व्यक्तिगत तथा समुदाय आत्म–विश्वस्तता तथा सहभागिता हेतु प्रेरित करना।

यह स्पष्ट है कि शिक्षा आवश्यक है परन्तु शिक्षा अकेली ही पर्याप्त नहीं है, इस प्रकार स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं को महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने की आवश्यकता होती है, वे निम्नलिखित है:

- स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्याओं की पहचान तथा विश्लेषण कैसे करें तथा उनके अपने लक्ष्य तथा प्राथमिकताओं की पहचान कैसे करें– यह सिखाने के लिए अवसर प्रदान करना।
- स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्य से सम्बन्धित जानकारी को आसानी से समुदाय तक पहुँचाना।
- जिन स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान की गई है, उनका वैकल्पिक समाधान करने के लिए लोगों को निर्देशित करना।
- निवारक उपायों तक लोगों की पहुँच होनी चाहिए। (पार्क, 2015)

3) प्रेरणा

स्वास्थ्य संचार के लक्ष्यों में से एक लक्ष्य, लोगों को प्रेरित करना है ताकि वे स्वास्थ्य जानकारी को व्यक्तिगत व्यवहार तथा जीवन–शैली में अपना सके जो उनके अपने स्वास्थ्य हेतु व्यवहार–परिवर्तन में लाभ पहुँचाएगा। प्रेरणा में रूचि, मूल्यांकन, निर्णय करना इत्यादि चरण सम्मिलित होता है। व्यापक स्तर पर व्यक्तिगत तथा सामाजिक स्तर पर कार्यक्रम क्रियान्वयन की पूर्ण सफलता हेतु, नए विचारों को अपनाने तथा निर्णय लेने के अन्तिम चरण में पहुँचने के लिए रूचि तथा जागरूकता उत्पन्न करने में प्रेरणा सहायता कर सकती है।

4) अनुनय (समझाना)

अनुनय एक व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह में सामान्य विश्वासों, समझ, मूल्यों तथा व्यवहार को किसी वांछित प्रकार से प्रभावित करना है। (पार्क, 2015) यह जीवन–शैली में परिवर्तन कर सकता है, क्योंकि भावनाओं, दृष्टिकोणों तथा विश्वासों में परिवर्तन लाने के लिए यह जानबूझकर किया जाता है। यह एक प्रकार की शक्ति है, जो ज्ञान, दृष्टिकोणों तथा व्यवहार का दृढ़ीकरण करती है।

5) परामर्श

परामर्श काफी हद तक संचार और सम्बन्ध दक्षताओं पर निर्भर करता है। परामर्श वह सेवा है, जो किसी ऐसे व्यक्ति को प्रदान की जाती है, जो किसी समस्या से गुजर रहा है तथा जिसे उससे उबरने के लिए पेशेवर मदद की आवश्यकता है। अतः परामर्श एक प्रक्रिया है, जो अपनी समस्याओं को बेहतर तरीके से समझने तथा सुलझाने के लिए है तथा उनसे बेहतर तरीके से संवाद करने, जिनसे वह भावात्मक रूप से सम्बद्ध है, लोगों की मदद कर सकती है। यह व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु प्रेरणा में सुधार तथा प्रबलीकरण कर सकता है और समस्याओं को कम करने अथवा समाधान करने में सहायता कर सकता है। इस प्रकार, जरूरतमंद व्यक्ति तक सहायता पहुँचाने के लिए परामर्श में एक विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है। इस प्रकार, एक परामर्शदाता को जानकारी को पूरी तरह संप्रेषित करने; लोगों का विश्वास प्राप्त करने; परेशान व्यक्तियों को सहानुभूतिपूर्वक सुनने; अन्य व्यक्तियों की भावनाएँ समझने तथा उनसे इस प्रकार प्रतिक्रिया व्यक्त करने ताकि वे अपनी भावनाएँ खुलकर अभिव्यक्त कर सके तथा अपनी समस्याओं का समाधान करने तथा उन्हें कम करने में लोगों की सहायता करने में सक्षम होना चाहिए।

6) स्वास्थ्य विकास तथा संगठन

व्यक्तियों से जिन भूमिकाओं को निभाने की अपेक्षा की जाती है, उनके लिए उन्हें तैयार करने तथा विकास के लक्ष्यों के संदर्भ में जानकारी को प्राप्त करने में सहायता करने के द्वारा स्वास्थ्य विकास में संचार एक सशक्त भूमिका निभा सकता है। इसके अतिरिक्त, संचार स्वास्थ्य संगठन का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है। यह अन्तः तथा अन्तर्क्षेत्रीय समन्वय का एक साधन है। लम्बवत संचार ऊपर से नीचे की ओर अथवा नीचे से ऊपर की ओर

भी हो सकता है, जो शीर्ष प्रशासन से लेकन लाभार्थी तक सम्मिलित कर सकता है; क्षैतिज अथवा संकर संचार, जो प्रायः किसी स्तर पर समान व्यक्तियों के मध्य हो सकता है।

4.4 स्वास्थ्य संचार के प्रतिदर्श

स्वास्थ्य संचार विभिन्न प्रतिदर्शों के माध्यम से हो सकता है। वे निम्नलिखित हैः

1) **चिकित्सीय प्रतिदर्श**

चिकित्सीय प्रतिदर्श, प्रथमतया, रोग की पहचान तथा उपचार और प्रक्रिया को सुगमतापूर्वक चलाने के तकनीकी आधुनिकीकरण पर निर्भर करता है। वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित स्वास्थ्य जानकारी के प्रसार पर बल दिया जाता है परन्तु चिकित्सीय प्रतिदर्श जानकारी तथा व्यवहार के मध्य सेतु नहीं बनाता क्योंकि सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक तत्त्वों में अत्यन्त कम अथवा शून्य अन्तःक्षेप होता है।

2) **प्रेरणात्मक प्रतिदर्श**

प्रेरणा स्वास्थ्य जानकारी को वांछित स्वास्थ्य क्रिया में रूपांतरित करने हेतु प्रमुख शक्ति के रूप में कार्य करती है। परन्तु एक व्यक्ति समूह तथा व्यापक स्तर पर समाज को समझाने हेतु इसे एक लम्बी प्रक्रिया की आवश्यकता है। यदि प्रत्यर्थी की रूचि है, वह विषय के बारे में अपेक्षाकृत विस्तृत जानकारी खोजेगा। तब वह प्राप्त जानकारी के विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन करेगा तथा बाद में निर्णय लेना इस बात पर निर्भर करेगा कि क्या वह जानकारी को स्वीकार अथवा अस्वीकार करता है। कभी–कभी वर्णित चरण आवश्यक रूप से कठोर नहीं होते; व्यक्तियों समूहों तथा

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

समाज की ग्रहण प्रक्रिया पर निर्भर चरणों में छूट भी मिल सकती है। इस प्रकार, एक चरण से दूसरे चरण में जाने वाले व्यक्तियों की सहायता करने के लिए प्रभावी संचार रणनीति अपनायी जानी चाहिए।

3) सामाजिक अन्तःक्षेप प्रतिदर्श

प्रेरणा प्रतिदर्श इस तथ्य की उपेक्षा करता है कि कई बार ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं जब व्यक्ति को नहीं बल्कि उस सामाजिक वातावरण बदलने की आवश्यकता होती है, जो व्यक्ति अथवा समुदाय के व्यवहार को आकार प्रदान करता है। इस प्रकार, निर्णय पर पहुँचने तथा कार्रवाई करने के लिए समूह अथवा सामाजिक सहयोग की आवश्यकता होती है। अतः एक प्रभावी स्वास्थ्य संचार मानव परिस्थितिकी की सूक्ष्म जानकारी तथा सांस्कृतिक, जैविक, भौतिक तथा सामाजिक पर्यावरण तत्त्वों के बीच अर्न्तक्रिया की समझ पर आधारित होता है।

बोध प्रश्न I

टिप्पणीः अ) उत्तर हेतु नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) स्वास्थ्य संचार से आप क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

....

4.5 स्वास्थ्य संचार का क्षेत्र

1) व्यक्ति

स्वास्थ्य सम्बन्धित परिवर्तन हेतु व्यक्ति आधारभूत लक्ष्य होता है, क्योंकि यह व्यक्तिगत व्यवहार ही है, जो स्वास्थ्य स्थिति को प्रभावित करता है। संचार व्यक्ति की जागरुकता, ज्ञान, दृष्टिकोणों, आत्म–प्रभाविता तथा व्यवहार परिवर्तन हेतु दक्षताओं को प्रभावित कर सकता है।

सभी अन्य स्तरों पर क्रियात्मकता अन्ततः व्यैक्तिक परिवर्तन को प्रभावित तथा सहयोग करने का लक्ष्य रखती है।

2) सामाजिक नेटवर्क

एक व्यक्ति के सम्बन्ध तथा वे समूह जिनसे वह सम्बन्ध रखता है, उसके स्वास्थ्य पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं। स्वास्थ्य संचार कार्यक्रम उस जानकारी को आकार प्रदान कर सकते हैं, जिसे एक समूह प्राप्त करता है तथा संचार पैटर्न अथवा सामग्री को परिवर्तित करने का प्रयास कर सकते हैं। एक नेटवर्क में प्रायः मत नेता स्वास्थ्य कार्यक्रमों हेतु प्रवेश बिन्दु होते हैं।

3) संगठन

संगठनों में प्रायः परिभाषित संरचना वाले औपचारिक समूह सम्मिलित होते हैं, जैसे एसोशियन्स, क्लब तथा नागरिक समूह, वर्कसाइड, विद्यालय, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल स्थापन तथा रिटेलर्स। संगठन अपने सदस्यों

को स्वास्थ्य सन्देश प्रदान कर सकते हैं, व्यक्तिगत प्रयासों को सहयोग प्रदान करते हैं, तथा नीति परिवर्तन करते हैं, जो व्यक्तिगत परिवर्तन को सक्षम बनाते हैं।

4) **समुदाय**

समुदायों का सामूहिक कल्याण उन संरचनाओं तथा नीतियों को उत्पन्न करके बनाया जा सकता है, जो सामाजिक तथा भौतिक पर्यावरण के गतिरोधों को कम अथवा दूर करके स्वस्थ जीवन शैलियों में सहयोग करते हैं। समुदाय–स्तर पहल संगठनों तथा संस्थाओं द्वारा नियोजित तथा परिवर्तित की जाती है, जो स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं, जैसे विद्यालय, वर्कसाइट, स्वास्थ्य देखभाल स्थापन, समुदाय समूह तथा सरकारी एजेंसियाँ।

5) **समाज**

एक सर्वांग के रूप में समाज का मानदंडों तथा मूल्यों, दृष्टिकोणों तथा मतों, कानूनों तथा नीतियों और भौतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा सूचना पर्यावरण पर अनेक प्रभाव होते हैं। स्पष्टतया, एक संचार कार्यक्रम जितने अधिक स्तरों को प्रभावित कर सकता है, वांछित परिवर्तन को उत्पन्न करने तथा बनाए रखने की संभावना उतनी ही बढ़ जाती है।

केवल स्वास्थ्य संचार, यद्यपि स्वास्थ्य से सम्बनित व्यवस्थागत समस्याओं जैसे गरीबी, पर्यावरणीय क्षरण, अथवा स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच की कमी को परिवर्तित नहीं कर सकता परन्तु व्यापक स्वास्थ्य संचार कार्यक्रमों में सभी तत्त्वों का एक व्यवस्थित अन्वेषण सम्मिलित होना चाहिए, जो स्वास्थ्य तथा उन रणनीतियों में योगदान प्रदान कर सके, जो इन तत्त्वों को प्रभावित करने में उपयोग में लायी जा सकती हैं।

4.6 स्वास्थ्य संचार की चुनौतियाँ

स्वास्थ्य संचार अनेक चुनौतियों का सामना करता है। यद्यपि समस्याएँ अनेक कारकों के कारण होती हैं, कतिपय चुनौतिपूर्ण मुद्दों पर निम्नलिखित विचार–विमर्श किया गया हैः

1) सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण चुनौतियाँ, जिनका सामना स्वास्थ्य संचार करता है, में से एक वह सामान्य अंतराल है, जो जनांकिकी स्वास्थ्य साक्षरता तथा स्वास्थ्य संचार के उपयोग के मध्य उत्पन्न हो गया है। अव्याख्यायित चिकित्सीय शब्द–जाल, दु–निरूपित सन्देशों के उदाहरण मिलती हैं, जिनसे एक सामान्य शैक्षिक अंतराल का प्रवर्तन होता है। यह भी देखा गया है कि अधिकतर व्यक्तियों को लिखित स्वास्थ्य सामग्री को समझने, स्वास्थ्य देखभाल तथा नीतियों को समझने में कठिनाई होती है तथा वे सामान्यतः चिकित्सीय शब्द–जाल को नहीं समझते। स्वास्थ्य संचार की ऐसी कमी से अस्पताल में भर्ती होने में बढ़ोत्तरी, एक बीमारी अथवा चिकित्सीय दशा के प्रति प्रतिक्रिया करने तथा उसे सम्भालने में अयोग्यता, तथा आमतौर पर एक पतनोन्मुख स्वास्थ्य स्थिति का प्रवर्तन हो सकता है।

2) जनांकिकी के सदस्यों के बीच व्यवहार में लाभकारी प्रवर्तन को प्रोत्साहित करने हेतु समूह संचार का उपयोग किया जाता है। स्वास्थ्य संचार की विधि के रूप में समूह संचार की अत्यधिक आलोचना यह होती है कि इससे प्राप्त जानकारी का अधिकांश भाग गलत दिशा में ले जाने वाला, दोषपूर्ण तथा अनुपयुक्त होता है, जिससे उपभोक्ताओं को खतरा हो सकता है। इस मुद्दे से इन उपभोक्ताओं में अवांछित घबराहट उत्पन्न हो सकती है। एक आलोचना निर्णय लेने हेतु उपभोक्ता की गलत स्वास्थ्य जानकारी से सम्बन्धित जोखिम के विषय में है। ये चिन्ताएँ अनेक व्यक्तियों को

स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति अविश्वास रखने की ओर ले जाती हैं, जिसने त्वरित जन स्वास्थ्य सरोकर को उत्पन्न किया है।

3) स्वास्थ्य संवर्धन के लिए एक आयामी प्रयास अथवा अन्य एकल–घटकीय समुदाय गतिविधियाँ, कार्यक्रम लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु अपर्याप्त दिखाई पड़ी है। अतः एक सफल स्वास्थ्य प्रोत्साहन कार्यक्रम बनाने के लिए बहुआयामी प्रयास जैसे समुदाय आधारित कार्यक्रम, नीति परिवर्तन, तथा सेवाओं एवं स्वास्थ्य प्रदाता प्रणाली में सुधार की श्रोताओं तक पहुँच के लिए योजना बनानी पड़ेगी। बहुआयामी कार्यक्रमों रूपरेखा में एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व कार्यक्रम के तत्त्वों का सहयोग करने के लिए नियोजन, क्रियान्वयन, तथा मूल्यांकन हेतु पर्याप्त समय नियत करना है। बहुआयामी प्रयासों के प्रभाव को सशक्त बनाने हेतु निजी–सार्वजनिक भागीदारियाँ तथा गठजोड़ से संसाधनों को सशक्त किया जा सकता है।

4) संचार, विविध सन्दर्भों (उदाहरण के लिए, विद्यालय, घर, तथा कार्य): में विविध माध्यमों (उदाहरण के लिए, अन्तर्व्यैक्तिक, लघु समूह, संगठनात्मक, समुदाय, तथा मास मीडिया) के द्वारा विविध सन्देशों सहित तथा विविध कारणों के लिए होता है। एक ऐसे वातावरण में, व्यक्ति सभी प्रकार के संचार पर ध्यान नहीं देते वरन् वे जानकारी को चयनपूर्वक ग्रहण करते हैं तथा उद्देश्यपूर्वक खोजते हैं (फ्रीमुथ सट एल, 1989)। प्रभावी स्वास्थ्य संचार कार्यक्रमों की रूपरेखा में मुख्य चुनौतियों में से एक है– संभाव्य संदर्भों, माध्यमों, सामग्री, तथा कारणों की पहचान करना, जो स्वास्थ्य सूचना की ओर ध्यान देने तथा उसका उपयोग करने की ओर लोगों को प्रेरित करेगा।

5) स्वास्थ्य के बारे में संचार करने का वातावरण काफी बदल गया है। संचार माध्यमों की संख्या तथा स्वास्थ्य मुद्दों की संख्या में आश्यर्चजनक वृद्धि हुई है, जो जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिए एक दूसरे को टोकते हैं,

इसके अतिरिक्त, अधिक और बेहतर गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य जानकारी हेतु उपभोक्ता माँग भी बढ़ी है तथा इण्टरनेट पर विपणन तथा विक्रय तकनीकों में भी अभिजात्य बदलाव हुआ है। व्यक्तियों के पास अपनी व्यक्तिगत रूचियों तथा प्राथमिकताओं पर आधारित जानकारी का चयन करने के अधिक अवसर मौजूद हैं।

6) विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित सामग्री की सीमाओं ने स्वास्थ्य संचार को प्रभावित किया है। स्वास्थ्य जानकारी अथवा स्वास्थ्य प्रोत्साहन सामग्री के सीधे अनुवाद से बचना चाहिए, भिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक, संजातिक जनांकिकी हेतु, जिनकी भिन्न भाषाएँ तथा जानकारी के स्रोत होते हैं, प्रभावी स्वास्थ्य प्रोत्साहन ओर संचार के लिए श्रोता–केन्द्रित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। ऐसे मामलों में लक्ष्य श्रोताओं की सांस्कतिक विशेषताओं, मीडिया आदतों तथा भाषा प्राथमिकताओं की विशेष जानकारी रखने वाले व्यक्तियों द्वारा सार्वजनिक शिक्षा अभियानों को अवधारणीकृत तथा विकसित किया जाना चाहिए। जब लक्ष्य श्रोताओं की भाषा, संस्कृति, तथा सामाजिक आर्थिक स्थितियों को ध्यान में रखकर देखभाल की जाती है, स्वास्थ्य संदेशों को पहुँचाने के लिए विशिष्ट संजातिक जनांकिकी हेतु टेलीविजन तथा रेडियो प्रभावी साधन हो सकते हैं। इस प्रकार एक श्रोता–केन्द्रित प्रयास व्यक्तियों रोजमर्रा की जिन्दगी और उनके तत्कालीन रिवाज़, मनोवृत्तियों, विश्वासों तथा जीवन शैलियों को भी प्रतिबिम्बित करता है। कतिपय विशेष श्रोता विशेषकर, जोकि प्रासंगिक है, उनमें लिंग, शिक्षा तथा आय–स्तर, संजातीयता, यौन उन्मुखता, सांस्कृतिक विश्वास तथा मूल्य, प्राथमिक भाषाएँ तथा शारीरिक एवं मानसिक क्रियाशीलता सम्मिलित है।

7) कार्यक्रम नीतियों तथा समूह को दी जाने वाली स्वास्थ्य जानकारी को सामान्यीकृत करने से स्वास्थ्य संचारों के स्रोता सीमित हो जाएंगे। अतः जनसंख्या के एक विशेष भाग को लक्ष्य बनाना और श्रोताओं हेतु प्रासंगिक स्वास्थ्य संवर्धन गतिविधियों को बनाने के लिए संदेशों को उपयुक्त बनाने की आवश्यकता होती है, उदाहरण के लिए, किशोरों में धूमपान का बढ़ता जोखिम इत्यादि।

8) अन्य चुनौती, व्यक्तिगत स्वास्थ्य जानकारी की निजता एवं गोपनीयता की सुरक्षा से सम्बन्धित है। अक्सर ऐसा होता है कि जब जानकारी को इकट्टा किया जाता है, भंडारण किया जाता है तथा ऑनलाइन उपलब्ध कराया जाता है, उपभोक्ताओं की स्वास्थ्य जानकारी की व्यक्तिगत निजता तथा गोपनीयता को बढ़ा–चढ़ाकर बताया जाता है। आगामी भविष्य में, भिन्न स्थापनों जैसे विद्यालयों, मोबाइल क्लीनिकों, सार्वजनिक स्थानों तथा घरों में क्लीनिकल तथा ग़ैर–क्लीनिकल, दोनों साक्षत्कारों के दौरान व्यक्तिगत स्वास्थ्य जानकारी, इकट्टी की जाएगी और इसे उपलब्ध कराया जाएगा, इसलिए निजता की सुरक्षा और गोपनीयता को बनाए रखने के लिए नीतियों तथा प्रक्रियाओं को अपनाने की आवश्यकता होती है।

9) जानकारी तथा सेवाओं तक सबकी पहुँच के बावजूद यद्यपि, अनेक कारकों जैसे अशिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा की कमी, ज्ञान तथा समझ के स्तरों, रीति–रिवाजों, विश्वासों, धर्म, दृष्टिकोणों और सामाजिक वर्ग भिन्नताओं के बावजूद भिन्नताएँ अभी भी मौजूद हैं। एक जटिल स्वास्थ्य प्रणाली में मार्गदर्शन करने तथा अपने स्वास्थ्य की रक्षा के लिए लोगों की सहायता करने हेतु स्वास्थ्य साक्षरता की तीव्र आवश्यकता है। व्यक्तिगत स्वास्थ्य से सम्बन्धित सामग्री को पढ़ने और समझने की योग्यता के साथ–साथ स्वास्थ्य प्रणाली में मार्गदर्शन की भिन्नताएँ स्वास्थ्य विसंगतियों में योगदान

प्रदान करती प्रतीत होती है। सु–नियोजित स्वास्थ्य संचार गतिविधियाँ, व्यक्तियों की अपनी स्वयं की तथा समुदाय की आवश्यकताओं को बेहतर तरीके से समझने में सहायता कर सकती है ताकि स्वास्थ्य की अधिकतम देखभाल हेतु जरूरी कदम उठाए जा सके।

10) यद्यपि, अकेला स्वास्थ्य संचार, स्वास्थ्य से सम्बन्धित व्यवस्थागत समस्याओं जैसे गरीबी, पर्यावरणीय क्षरण अथवा स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच की कमी को दूर नहीं कर सकता परन्तु व्यापक स्वास्थ्य संचार कार्यक्रमों में उन सभी तत्त्वों के व्यवस्थित अन्वेषण को सम्मिलित किया जाना चाहिए, जो स्वास्थ्य तथा ऐसी रणनीतियों में योगदान देते हैं, जो इन तत्त्वों को प्रभावित करने हेतु उपयोग में लायी जा सकती है। सुनियोजित स्वास्थ्य संचार गतिविधियाँ व्यक्तियों की अपनी स्वयं की तथा समुदाय की आवश्यकताओं को बेहतर तरीके से समझने में सहायता कर सकती है। ताकि स्वास्थ्य की अधिकतम देखभाल हेतु आवश्यक कदम उठाए जा सके।

बोध प्रश्न II

टिप्पणीः अ) उत्तर हेतु नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) संचार की कतिपय चुनौतियाँ क्या हैं?

....

....

....

....

....

....

4.7 सारांश

समुदाय स्वास्थ्य में एक स्वतंत्र रणनीति के रूप में स्वास्थ्य संचार का अत्यंत कम उपयोग किया जाता है क्योंकि एक समुदाय के स्वास्थ्य में सुधार करने के लिए जानकारी होना ही पर्याप्त नहीं है। इसके बजाय, स्वास्थ्य संचार सभी स्वास्थ्य संवर्धन रणनीतियों का एक आन्तरिक भाग है। आपने स्वास्थ्य संचार की विभिन्न क्रियाओं और प्रतिदर्शों को समझ लिया है। आपने स्वास्थ्य संचार के अवरोधों तथा चुनौतियों की अंर्तदृष्टि भी प्राप्त कर ली है जहाँ लक्ष्य श्रोताओं तक पहुँचने तक पहुँच ने तथा प्रभावित करने के लिए अभियान संदेशों की आवश्यकता होती है। आपको प्रभावी रणनीतिक स्वास्थ्य संचार अन्तःक्षेपों को श्रोताओं के दृष्टिकोण से विकसित करने की आवश्यकता होती है।

4.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

ब्रुग, जे. ग्लेंज, के, वेन.ए.पी. (1998). द इम्पेक्ट ऑफ कंम्प्यूटर–टेलर्ड फीडबैक एण्ड आइटीरेटिव फीडबैक ऑन फैट, फ्रूट, एण्ड वेजीटेबल इन्टेक. हैल्थ एजूकेशन एंड बिहेवियर 25:517–531, पवमडः पी.एम.आई.डी. 9690108।

फ्रीमुथ, वी.एस. स्टे इन, जे.ए. एण्ड कीन. टी.जे. (1989) सर्चइंग फॉर हैल्थ इन्फोरमेशनः द कैन्सर इन्फोरमेशन सर्विस मॉडल, फिलाडेल्फिया पी.ए.: यूनिवर्सिटी ऑफ पेनस्लुवेनिया प्रैस।

हीरामनी, ए.बी. एण्ड शर्मा. एन (1992) हैल्थ कम्युनिकेशन इन इण्डियाः ए पॉलिसी।

पर्सपेक्टिव इन एस.आर.मेहता (एडी.) कम्यूनिकेशन एण्ड डवलपमेन्टः इश्यूज एण्ड पर्सपेक्टिव्जः (पीपी 262–263) जयपुरः रावत पब्लिकेशंस।

किम.पी. इन्ज.टी.आर. डीयरिंग, एम.जे. (1999), पब्लिश्ड क्रायटेरिया फॉर इवेलुएटिंग हैल्थ–रिलेटिड वेबसाइटसः रिव्यू ब्रिटिश मेडिकल जरनल 318:647–649, पवमेडः पीएमआइडी 10066209।

क्रेप्स.जी. एल.एण्ड बारबरा सी. थॉमटन (1992). हेल्थ कम्यूनिकेशनः थ्योरी (2nd एडी) लॉन्ग ग्रूब.11; वेवलैन्ड प्रैस।

क्रयूटर; एम.डब्लू, स्ट्रेचर, वी.जे. एंड ग्लासमैन बी (1999), वन साइज इज नॉट फिट ऑलः द केस फॉर टेलरिंग प्रिंट मैटीरियल्स. सोसायटी ऑफ बिहेविबरियल मेडीसिन 21:276–283. पवमेडः पीएमआईडी 10721433।

लालऑन डे, बी.सबिनविट्ज पी.शेफिसकी, एम एल (1997), ला एस पेरेनजा डेल बैलेः एल्कोहल प्रिवेंशन नॉवल्स फॉर हिसपैनिक यूथ एंड देयर फैमिलीज, हैल्ड एजूकेशन एण्ड बिहेवियर 24–587–602, पबमेडः पीएमआईडी 9307895।

पार्क, के. 23rd एडीशन. (2015). पार्कस टेक्स्टबुक ऑफ प्रिवेन्टिव एण्ड सोशल मेडीसिन जबलपुरः एम/एस बनारसीदास भनोट पब्लिशर्स।

राइस, आर. ई. एण्ड एटकिन, सी.के. 3rd एडीशन (2000): पब्लिक कम्यूनिकेशन कैम्पेन, थाऊजैन्ड ऑक्स, सी.ए. सेज।

रॉबिन्सन, टी.एन. पेट्रिक, के. एन्ग, टी.आर. (1998). सोशल पैनल ऑन इन्टरेक्टिव कम्यूनिकेशन एण्ड हैल्थ एन एवीडैन्स बेस्ड एप्रोच टू इंटेरेक्टिव हैल्थ

कम्यूनिकेशनः ए चैंलेज टू मेडीसिन इन द इन्फॉर्मेशन एज. जरनल ऑफ द अमेरिकन मेडीकल एसोसिएशन 280ः 12641269. पबमेडः पीएमआइडी 9786378।

साइन्स पैनल ऑन इंटरैक्टिव कम्यूनिकेशन एंड हैल्थ (1999) एन्जः टीआर. एंड गस्टाफसन, डी.एच. (एड्स) बायर्ड फॉर हैल्थ एण्ड बैल बीइंग. द इमरजेन्स ऑफ इंटरैक्टिव हैल्थ कम्यूनिकेशन वाशिंगटन डीसी एचएचएस।

सिमोन्स– मार्टन, बी.जी. डॉनहयू. एल. एन्ड क्रम्प, ए.डी. (1997), हैल्थ कम्यूनिकेशन इन द प्रिवेंशन ऑफ अल्कोहल, टबाको, एण्ड ड्रग यूज. हैल्थ एजूकेशन एंड बिहेवियर 24:544–554. पबमेड, पीएमआईडी 9307892।

द इंस्टीट्यूट ऑफ मेडीसिन (2001) क्रांसिंग द क्वालिटी चास्मः ए न्यू हैल्थ सिस्टम फॉर द 21st सेंचुरी, वांशिंगटनः नेशनल एकेडमिक्स प्रैस।.

थॉरनटन, बारबरा सी.एंड ग्रे.एल. क्रेप्स (1992) पर्सपेक्टिव ऑन हैल्थ कम्यूनिकेशन, लॉन्ग ग्रेव, 11ः वेवलैन्ड प्रैस।

यू.एस. ऑफिस ऑफ डिजीज प्रिवेंशन एण्ड हैल्थ प्रमोशन, (2004) हैल्थ कम्यूनिकेशन, हैल्दी पीपल 2010 (वाल. 1) रिट्रीव्ड फ्रॉम यूआरएलः एचटीटीपीः/हैल्दीपीपल.गर्व/डॉक्यूमैन्ट/एचटीएमएल/वॉल्यूम1/11हैल्थ कॉम एचटीएम#ईडीएन4।

स्कॉट, एस.ऐ. जॉगनसेन, सी.एम.एण्ड सोरेज.एलत्र (1998) कन्सर्न एण्ड डिलेमाज ऑफ हिंसपेनिक एडस इन्फोरमेशन सीकर्सः स्पेनिश स्पीकिंग कॉलर्स टू द सीडी सी नेशनल एडस हॉलाइन. हैल्थ एजूकेशन एंड बिहेवियर 25(4):501–516 पबमेड;पीएमआईडी 9690107।

राइट, ए. नायलट, ए, वेस्टर, आर. (1997)यूजइंग कल्चर नॉलेज इन हैल्थ प्रमोशनः ब्रेस्टफीडिंग अमंग द नावाजो. हैल्थ एजूकेशन एंड बिहेवियर 24: 625–639 पबमेड, पीएमआइडी 9307898।

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) स्वास्थ्य संचार लोगों को उनके स्वास्थ्य के विषय में चयन करने के बारे में सूचना देने तथा प्रभावित करने हेतु संचार रणनीतियों का अध्ययन तथा उपयोग है। संदेशों को मास मीडिया, प्रकाशन सामग्रियों, सोशल मीडिया तथा अपने सामने की बातचीत द्वारा फैलाया जाता है। स्वास्थ्य संचार, स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्य देखभाल के सम्बन्ध में व्यैक्तिक तथा समुदाय ज्ञान मनोवृतियों तथा अभ्यासों (KAP) के बारे में सूचना देने तथा प्रभावित करने की संचार रणनीतियों के अध्ययन तथा उपयोग को शामिल करता है।

बोध प्रश्न II

1) स्वास्थ्य संचार की चुनौतियाँ निम्नलिखित हैः

अ) सामान्य जनता को मेडीकल पेशेवरों द्वारा प्रयोग किए गए अव्याख्यायित चिकित्सीय शब्द–जाल, स्वास्थ्य देखभाल तथा नीतियों को समझने में कठिनाई होती है। स्वास्थ्य संचार की ऐसी कमी से एक चिकित्सीय दशा के प्रति प्रतिक्रिया करने तथा एक पतनोन्मुख स्वास्थ्य स्थिति का प्रवर्तन हो सकता है।

आ) स्वास्थ्य संचार की एक विधि के रूप में मास मीडिया द्वारा उपयोग की गयी जानकारी काफी हद तक गलत दिशा में प्रवर्तन करने वाली, अशुद्ध, अथवा अनुपयुक्त हो सकती है, जो उपभोक्ताओं को संकट में डाल सकती है।

इ) कार्यक्रम लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु स्वास्थ्य संबर्धन का एक–एक आयामी दृष्टिकोण अथवा अन्य एकल घटकीय संचार गतिविधियाँ अपर्याप्त सिद्ध हुई है।

ई) प्रभावी स्वास्थ्य संचार कार्यक्रमों की संरचना करने की मुख्य चुनौतियों में से एक है– ऐसे संभाव्य संदर्भों, माध्यमों, सामग्री तथा कारणों की पहचान करना, जो स्वास्थ्य सूचना की ओर ध्यान देने तथा उसका उपयोग करने की ओर लोगों को प्रेरित करेगा।

उ) विभिन्न भाषाओं में मुद्रित सामग्री की सीमितता ने स्वास्थ्य संचार को प्रभावित किया है।

ऊ) स्वास्थ्य नीति और सम्बन्धित स्वास्थ्य सामग्री के सामान्यीकरण ने स्वास्थ्य संचार के श्रोताओं को सीमित कर दिया है।

ए) अन्य चुनौती, व्यक्तिगत स्वास्थ्य जानकारी की गोपनीयता एवं निजता की सुरक्षा से सम्बन्धित है।

ऐ) अशिक्षा, अपर्याप्त स्वास्थ्य साक्षरता, ज्ञान तथा समझ के स्तर, रीति–रिवाज, विश्वास, धर्म, मनोवृत्तियों और सामाजिक वर्ग भिन्नताओं जैसे तत्त्वों ने स्वास्थ्य विसंगतियों को बढ़ावा दिया है।

ओ) उन सभी तत्त्वों, जो स्वास्थ्य में योगदान प्रदान करते है, तथा वे रणनीतियाँ जो इन तत्त्वों के प्रभावित करने हेतु उपयोग में लायी जा

सकती है, का व्यवस्थित अन्वेषण सम्मिलित करने हेतु स्वास्थ्य संचार पर्याप्त रूप से व्यापक नहीं है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY